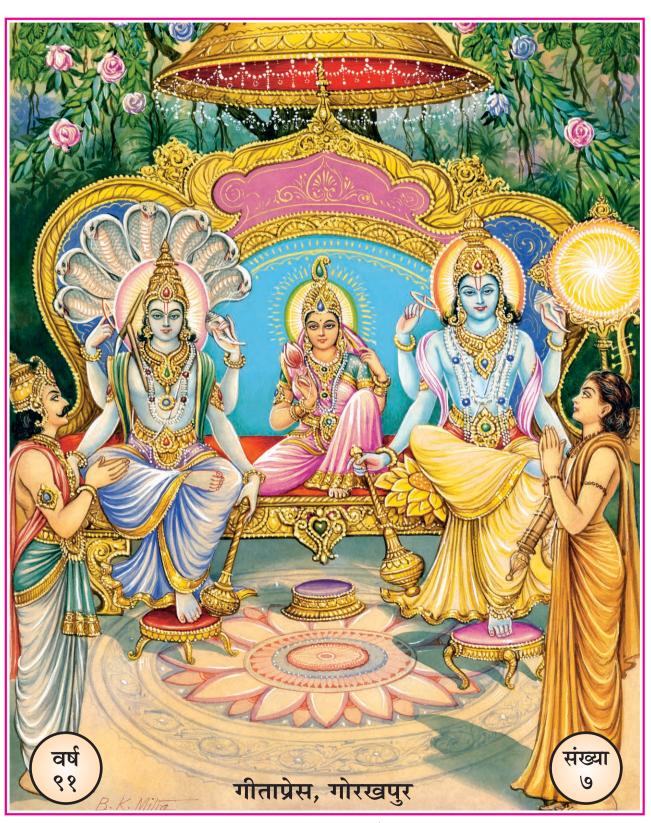
कल्याण



भगवान् जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा





श्रीकृष्णको झूला झुलाती श्रीराधाजी

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥



वन्दे वन्दनतुष्टमानसमितप्रेमप्रियं प्रेमदं पूर्णं पूर्णकरं प्रपूर्णनिखिलैश्वर्येकवासं शिवम्। सत्यं सत्यमयं त्रिसत्यविभवं सत्यप्रियं सत्यदं विष्णुब्रह्मनुतं स्वकीयकृपयोपात्ताकृतिं शङ्करम्॥

वर्ष ९१ गोरखपुर, सौर श्रावण, वि० सं० २०७४, श्रीकृष्ण-सं० ५२४३, जुलाई २०१७ ई० पूर्ण संख्या १०८८

'झुलावति स्यामा स्याम-कुमार'

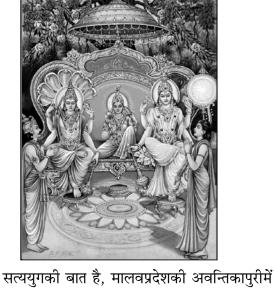
झुलावति स्यामा स्याम-कुमार। ÷ ÷ हेम-रत्न-निर्मित रुचिर रेसमी डोरी ÷ पर, झूला डार॥ ૹ ÷ मन अति मुदित झुलावति गोरी, सह न सकति स्त्रम तन सुकुमार। ÷ જ઼ कपोल-भाल स्वेद-बिंदु ललित पर स्त्रम-जनित अपार॥ ÷ ÷ श्रीमती, कृदि परे लखि स्त्रमित झट झूले का कर જ઼ ÷ बैठारी कर-कमल पकरि कै निज कर, ÷ उर भरि अतिसय प्यार॥ જ઼ ÷ कुसुम-कली मंडित सिंहासन प्रिय अमित पर, ÷ જ઼ पौंछे पट-अंचल निज स्वेद-वारि-कन कर नंद-कुमार॥ ÷ જ઼ बैठारे जीवन-धन सखियन करि अति ललितादिक मनुहार। જ઼ ÷ ૹ मधुर बानी જ઼ सौं, करन लगीं सौरभित आदरसहित ÷ ૹ [पद-रत्नाकर]

कल्याण, सौर श्रावण, वि० सं० २०७४, श्रीकृष्ण-सं० ५२४३, जुलाई २०१७ ई० विषय-सूची	
१- 'झुलावित स्यामा स्याम-कुमार'	१३ - हनुमान्जीके द्वादशनाम और उनके पाठका माहात्म्य
१- प्रभुकी पूर्विनयोजित लीला—'रामवनवास' (डा० श्रीरमेश मंगल वाजपेयीजी)२० २- गोस्वामीजीका काशीप्रवास (डॉ० श्रीगौरीशंकरजी गुप्त)२२	२६ - मनन करने योग्य४ २७ - कल्याणका आगामी ९२वें वर्ष (सन् २०१८ ई०) - का विशेषाङ्क 'श्रीशिवमहापुराणाङ्क' (उत्तरार्ध)५
हिन्न- १- भगवान् जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा . (रंगीन) आवरण-पृष्ठ २- श्रीकृष्णको झूला झुलाती श्रीराधाजी (, ,) मुख-पृष्ठ ३- भगवान् जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा . (इकरंगा) ६ ४- असहाय द्रौपदीकी भगवान्से प्रार्थना	सूची
जय पावक रवि चन्द्र जयति जय	मत-चित-आनँद भूमा जय जय ॥)
जय जय विश्वरूप हरि जय	जय हर अखिलात्मन् जय जय॥ । गौरीपति जय रमापते॥ 50 (₹3000)
संस्थापक — ब्रह्मलीन परम श्रद्ध आदिसम्पादक —नित्यलीलालीन ९ सम्पादक —राधेश्याम खेमका, सहस् केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालय के	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार सम्पादक—डॉ० प्रेमप्रकाश लक्कड़
website: gitapress.org e-mail: kalya	an@gitapress.org 09235400242/244

संख्या ७] कल्याण याद रखो-आनन्द, सच्चा आनन्द तुम्हारे अन्दर है अभाव नहीं होगा तो दु:ख भी नहीं होगा। वस्तुत: दु:ख नहीं और वह नित्य है। तुम बाहरी वस्तुओंमें—धनमें, जनमें, होगा, इतना ही नहीं—भगवान्की सन्निधिका अनुभव परम मानमें, प्रतिष्ठामें, भोगोंमें, आराममें, विलासितामें और अनुकुल होनेसे तथा स्वयं परमानन्दमय होनेसे वह तुम्हारे परिवारमें आनन्द खोजते हो-यही तुम्हारा भ्रम है। लिये परमानन्दका कारण होगा। तुम उस समय ऐसे विलक्षण याद रखो-आनन्द किसी भी सांसारिक स्थिति-आनन्दका अनुभव करोगे कि फिर जागतिक किसी भी विशेषमें नहीं है। तुम जो समझते हो कि 'मेरी अमुक अभावकी स्मृति ही तुमको नहीं होगी। परिस्थिति हो जायगी, इतना धन हो जायगा, अमुक याद रखो-भाव-अभाव, अनुकूलता-प्रतिकूलता जो अधिकार मिल जायगा, पुत्र हो जायगा, जगत्में यश फैल कुछ भी है, सभी लीलामय श्रीभगवान्के स्वॉॅंग हैं, जिनको जायगा और लोग मेरा सम्मान करने लगेंगे, तब मैं सुखी तुम्हारे मंगलके लिये ही भगवान्ने धारण किया है। उन हो जाऊँगा' यह तुम्हारा भ्रम है। भगवान्को जब पहचान लोगे तो फिर चाहे वे किसी भी याद रखों - तुम्हारे वर्तमान दु:खका या आनन्दके सुन्दर या भयानक स्वॉंगमें रहें, तुमको न भय होगा, न दु:ख। अभावका कारण कोई परिस्थिति नहीं है, इसका प्रधान स्वॉंग तुम्हारे लिये मनोरंजनकी सामग्री होगी और तुम उसे कारण है, नित्य सत्य आन्तरिक आनन्दको न जानना।आनन्दमय देख-देखकर पल-पलमें और पद-पदपर मुग्ध होते रहोगे। भगवानुके नित्य सान्निध्यका अनुभव न करना। तुम्हारा दु:ख-स्रोत सदाके लिये सुख जायगा। तुम फिर स्वयं याद रखो—जब तुम्हारी वृत्ति अन्तर्मुखी हो जायगी, आनन्दके भण्डार बन जाओगे। याद रखों—जो लोग आनन्दके लिये परिस्थितिकी जब तुम नित्य-निरन्तर सच्चिदानन्दमयके सान्निध्यका सर्वदा अनुभव करने लगोगे जब उन्हीं आनन्दमयके साथ अनुकुलता खोज रहे हैं या अभावकी पूर्ति करके आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं, उनको कभी स्थिर नित्य आनन्दके नित्य संयुक्त हो जाओगे तब बाहरी कोई भी परिस्थिति तुम्हारे आनन्दको नहीं छीन सकेगी। अपमान, अकीर्ति, दर्शन होंगे ही नहीं; क्योंकि उनका अभाव कभी मिटनेका दरिद्रता, मित्रहीनता आदि किसी भी स्थितिमें तुम्हारे ही नहीं है। संसारमें कहीं भी-किसीमें भी पूर्णता नहीं है। वे जो कुछ भी पायेंगे, उसीमें उन्हें अपूर्णता—अभावकी आनन्दका अभाव नहीं होगा। याद रखो-तुम जो अपनेको दुखी मान रहे हो, अनुभृति होगी और अभावकी अनुभृति ही प्रतिकृलता है। अतएव वे कभी सुखी हो ही नहीं सकेंगे। इसीसे दुखी हो। दुखी माननेका कारण है अभावका बोध; अभावमें प्रतिकृलताकी अनुभृति होती है और प्रतिकृलता ही याद रखो-सच्चा सुख या परम आनन्द चाहते हो तो सांसारिक अभाव या प्रतिकूलताका ही अभाव कर दो। दु:ख है। संसारकी परिस्थिति तो कभी ऐसी होगी ही नहीं भगवान् नित्य हैं, सत्य हैं, सर्वत्र, सर्वदा और सर्वथा हैं; कि जो सदा और सर्वथा सबके मनके अनुकूल हो। प्रत्येक परिस्थितिमें मंगलमय श्रीभगवान् स्वयं विद्यमान हैं, प्रत्येक उन्हींको देखो। उनका कहीं भी, कभी भी अभाव नहीं है। उनको सर्वत्र देखने लगोगे तब सांसारिक अभाव या परिस्थिति मंगलमय भगवान्का मंगल-विधान है, और प्रत्येक परिस्थिति वस्तुतः लीलामय भगवान्की लीलाका ही एक प्रतिकूलताका अभाव अपने-आप ही हो जायगा; क्योंकि अंग है। यह विश्वास करके यदि तुम परिस्थितिके बाहरी भगवानुके भावमें ही-इनके होनेका भ्रम हो रहा है। ये रूपको न देखकर, परिस्थितिके परदेमें छिपे हुए श्रीभगवान्को, जहाँ दीख रहे हैं, वहाँ वस्तुत: ये नहीं हैं, वहाँ भगवान् श्रीभगवान्के मंगल-विधानको या श्रीभगवान्की लीलाको ही हैं। यदि तुम सर्वत्र व्याप्त सर्वरूपमें स्थित उन देखने लगो, उनका मधुर स्पर्श पा सको तो सभी परिस्थितियाँ भगवान्को देख सकोगे तो तुम्हें उस नित्य सत्य आनन्दकी तुम्हारे लिये अनुकूल हो जायँगी, क्योंकि सभीमें भगवान्की प्राप्ति सहज ही हो जायगी, जिसकी खोजमें तुम सदा-सर्वदा लगे रहते आये हो। 'शिव' अनुभूति होगी—अभाव कहीं रहेगा ही नहीं; और जब

आवरणचित्र-परिचय भक्त राजा इन्द्रद्युम्न

भगवान् विष्णुके दर्शन करके वे नारदजीके साथ रथपर सवार हुए मार्गमें महानदी तथा भुवनेश्वरक्षेत्र आदि



इन्द्रद्युम्न नामसे प्रसिद्ध एक राजा राज्य करते थे। उनका जन्म सूर्यवंशमें हुआ था। भगवान् विष्णुके चरणोंमें उनकी अनन्य भक्ति थी। वे अपने चर्मचक्षुओंसे भगवान् श्रीहरिका साक्षात् दर्शन पा लेनेके लिये सदैव उत्कण्ठित रहते थे। एक दिन राजाके यहाँ देवर्षि नारद पधारे। राजाने पाद्य, अर्घ्य आदि देकर देवर्षिका पूजन किया और उन्हें सुन्दर सिंहासनपर बैठाकर विनयपूर्वक कहा—'भगवन्! आज आपके पदार्पणसे मेरा यह घर और कुल पवित्र हो गये। आपके दर्शन पाकर यह सेवक कृतकृत्य हो गया।

योग्य सेवाके लिये आदेश देकर मुझे अनुगृहीत कीजिये।' राजाकी यह विनयभरी बात सुनकर देवर्षि नारद मुसकराते हुए बोले—'नृपश्रेष्ठ! मैंने सुना है, तुम भगवान् श्रीहरिका साक्षात् दर्शन करनेकी इच्छासे नीलाचल जानेका विचार कर रहे हो। यदि ऐसी बात है तो तुमने यह बहुत उत्तम निश्चय किया है।

नारदजीकी बात सुनकर राजा इन्द्रद्युम्न बहुत प्रसन्न हुए और इस प्रकार बोले—'भगवन्! इस समय मेरा मन भगवान् नीलमाधवके दर्शनके लिए उत्सुक एवं विकल है। अत: आप और हम दोनों रथपर बैठकर नीलाचल चलें

नारदजीके 'तथास्तु' कहनेपर महाराज इन्द्रद्युम्नने

और भगवानुके दर्शन करें।'

पुण्यस्थानों एवं देवताओंका दर्शन करते हुए वे यथासमय दल-बलसहित पुरुषोत्तमक्षेत्रमें जा पहुँचे। वहाँ राजा इन्द्रद्युम्नने नारदजीके साथ भगवान् नृसिंहजी, कल्पवट तथा श्रीनीलमाधवके स्थानके दर्शन किये। तत्पश्चात् उन्होंने एक हजार अश्वमेध यज्ञोंका अनुष्ठान आरम्भ किया। जब वे अश्वमेध यज्ञ नौ सौ

निन्यानबेकी संख्यातक पहुँच गये, तब एक दिन रातके चौथे प्रहरमें राजा इन्द्रद्युम्नने अविनाशी भगवान् विष्णुका ध्यान किया। उस ध्यानमें उन्हें एक रत्नसिंहासनपर शंख-चक्र-गदाधारी भगवान् विष्णुका दर्शन हुआ। उनके श्रीअंगोंकी कान्ति नीलमेघके समान श्याम थी। वे वनमालासे विभूषित थे। उनके दाहिने भागमें शेषजी विराजमान थे। भगवान्के वामभागमें भगवती लक्ष्मी विराजमान थीं। भगवान्के आगे

इन्द्रद्युम्नको बड़ा हर्ष हुआ। उन्होंने नारदजीसे सब बातें कहीं। तब नारदजीने आश्वासन देते हुए कहा—'राजन्! इस यज्ञके अन्तमें तुम्हें भगवान् यहाँ प्रत्यक्ष दर्शन देंगे। ये सब बातें दूसरे किसीके आगे प्रकाशित न करना।' राजा इन्द्रद्युम्नके अश्वमेध यज्ञके पूर्ण होनेपर वहाँ

भगवान् स्वयं चार विग्रहोंमें प्रकट हुए। बलभद्र, सुभद्रा और

सुदर्शनचक्रके साथ भगवान् जगन्नाथजी दिव्य आसनपर

विराजमान हुए। भगवान्के चार दिव्य रूप सम्पन्न हो जानेपर

ब्रह्माजी हाथ जोड़े खड़े थे। सनकादि मुनीश्वर उनकी स्तुति कर रहे थे। ध्यानमें भगवान्का इस प्रकार दर्शन पाकर राजा

पुन: आकाशवाणी हुई कि 'इन चारों प्रतिमाओंकी नीलाचलपर कल्प-वृक्षके वायव्यकोणमें सौ हाथकी दूरीपर और भगवान् नृसिंहके उत्तरभागमें जो मैदान है, उसमें मन्दिर बनवाकर स्थापना करो।' राजाने उसका प्रसन्नतापूर्वक पालन किया। राजा इन्द्रद्युम्नने भगवान् जगन्नाथजीकी स्थापना करके उनकी स्तुति की और फिर उन चारों काष्ट्रमयी प्रतिमाओंका विधिवत्

एक है और जगन्नाथपुरीके नामसे प्रसिद्ध है। राजर्षि इन्द्रद्युम्न भगवान् पुरुषोत्तमको प्रसन्न करके नारदजीके साथ ब्रह्मलोकमें यात्राकी आवश्यक तैयारी कर ली और राजकीय मन्द्रिरमें विकास मिलिए में MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha

पूजन किया। यह वही पुरुषोत्तमक्षेत्र है, जो चारों धामोंमेंसे

भगवदाश्रयसे लोक-परलोकका कल्याण (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) लौकिक-पारलौकिक समस्त दु:खोंके नाश एवं गुण्डे भाग गये और इस बीचमें पत्नीको कन्धेपर उठाकर

गये हैं और हमारा जीवन केवल भोगोंका आश्रयी बन गया है। इसीसे इतने दुःख, संताप और विनाशके पहाड़

हमपर लगातार टूट रहे हैं। जो लोग क्रियाशील और विविध कर्मसमर्थ हैं, उनको भगवान्की प्रसन्नताके लिये भगवानुका सतत स्मरण करते हुए समयानुकूल स्वधर्मोचित कर्मों के द्वारा भगवान्की पूजा करनी चाहिये तथा जो असमर्थ हैं, उन्हें आर्त तथा दीनभावसे भगवत्प्रीतिके द्वारा धर्मके अभ्युदय एवं विश्वशान्तिके लिये अनन्यभावसे भगवान्को पुकारना चाहिये। हमारी अनन्य पुकार कभी व्यर्थ नहीं जायगी। हममें होना चाहिये द्रौपदीका-सा विश्वास, होनी चाहिये गजराजकी-सी निष्ठा और सबसे बढ़कर हममें होनी

संख्या ७]

खम्भेमेंसे प्रकट हुए—'सत्यं विधातुं निजभृत्यभाषितम्।' (श्रीमद्भा० ७।८।१८) विपत्ति, कष्ट, असहाय स्थिति, अमंगल और अन्याय तभीतक हमारे सामने हैं, जबतक हम भगवान्को विश्वासपूर्वक नहीं पुकारते। एक महाशयने एक घटना सुनायी थी। एक घरमें गुण्डोंने पतिको पकड़ लिया और

मार दिया। उसके गिरते ही पति-पत्नीको छोड़कर शेष

असहाय थे। पत्नीने आर्त होकर-रोकर भगवान्को पुकारा। उसे द्रौपदीकी याद आ गयी। बस, तत्काल ही वे दोनों गुण्डे आपसमें लड़ गये। एकने दूसरेको छुरा

जिसके वचनको सत्य करनेके लिये भगवान् नृसिंहरूपसे

करके कहा था-

नाथ हे रमानाथ व्रजनाथार्तिनाशन॥

कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन।

'हे गोविन्द! द्वारकावासी सच्चिदानन्द प्रेमघन!

दो गुण्डे उसकी स्त्रीको वस्त्रहीन करके उसपर बलात्कार करनेको उद्यत हो गये। दोनों पति-पत्नी निरुपाय थे-

चाहिये प्रह्लादकी-सी आस्तिकता और निष्काम भाव,

मनसे भगवान्को भुला देना। आज हम भगवान्को भूल

सुखोंके नाश एवं समस्त लौकिक-पारमार्थिक सम्पत्तिके सर्वनाशका साधन है-भोगोंका अनन्य आश्रय लेकर

साधन है भगवानुका अनन्य आश्रय लेकर सच्चे मनसे उनका भजन करना और लौकिक-पारलौकिक समस्त

समस्त लौकिक-पारमार्थिक सम्पत्तिकी सम्प्राप्तिका सर्वोत्तम पतिको बचकर भाग निकलनेका अवसर मिल गया।

भगवदाश्रयसे लोक-परलोकका कल्याण

भारतकी सती देवियाँ आज द्रौपदीकी भाँति भगवानुको

पुकारें तो भगवान् अवश्य रक्षा करेंगे। वे तुरंत किसी भी

रूपमें प्रकट होकर सती देवियोंके सारे दु:ख हर लेंगे

और उसी क्षणसे उनको दु:ख पहुँचानेवालोंके विनाशकी भी गारन्टी मिल जायगी।

दुष्ट दु:शासनके हाथोंमें पड़ी हुई असहाय द्रौपदीने

आर्त होकर मन-ही-मन भगवान् श्रीकृष्णका स्मरण

गोविन्द द्वारकावासिन् कृष्ण गोपीजनप्रिय॥ कौरवै: परिभूतां मां किं न जानासि केशव।

कौरवार्णवमग्नां मामुद्धरस्व जनार्दन।

प्रपन्नां पाहि गोविन्द कुरुमध्येऽवसीदतीम्॥ (महा० सभा० ६८।४१-४३)

गोपीजनवल्लभ! सर्वशक्तिमान् प्रभो! कौरव मुझे अपमानित

कर रहे हैं। क्या यह आपको मालूम नहीं है ? हे नाथ! कोई नहीं हैं, पर क्या तुम भी मेरे नहीं रहे ? श्रीकृष्ण! तुम हे रमानाथ! हे व्रजनाथ! हे आर्तिनाशन जनार्दन! मैं

केशोंको खींचा था, वे खुले ही रहे—दु:शासनको दण्ड मिलनेके दिनतक। द्रौपदी खुले केश पाण्डवोंके साथ वनमें रहती थी। भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवोंसे मिलने गये।



सखी होकर भी कौरवोंकी सभामें घसीटी जाऊँ! यह कितने दु:खकी बात है ? भीमसेन और अर्जुन बड़े बलवान् होनेपर भी मेरी रक्षा नहीं कर सके। धिक्कार है इनके

'मैं पाण्डवोंकी पत्नी, धृष्टद्युम्नकी बहन और तुम्हारी

बल-पौरुषको! इनके जीते-जी दुर्योधन क्षणभरके लिये भी कैसे जीवित है ? श्रीकृष्ण! दुष्ट दु:शासनने भरी सभामें

मुझ सतीकी चोटी पकड़कर घसीटा और ये पाण्डव टुकुर-

टुकुर देखते रहे।' इतना कहकर द्रौपदी रोने लगी। उसकी साँस लम्बी-लम्बी चलने लगी और उसने गद्गद होकर आवेशसे कहा—'श्रीकृष्ण! ये पति-पुत्र, पिता-भ्राता मेरे

श्रद्धा जिस दिनसे घटने लगी, जबसे उनकी प्रार्थनाकी यह ध्वनि क्षीण हो गयी, तभीसे उनपर दु:ख आने लगे और

तभीसे वे सन्मार्ग और सुखके सुपथसे भ्रष्ट हो गये। अब

फिर श्रद्धा-विश्वासके साथ भगवान्को पुकारिये। देखिये, आपके इहलौकिक दु:ख दूर होते हैं या नहीं और देखिये

आपको भगवान्की अमृतमयी अनुकम्पासे उनके दुर्लभ

चरणारविन्दकी प्राप्ति सहज ही होती है या नहीं!

भगवानुको पुकारना चाहिये। भारतके हिन्दुओंकी यह

कहीं चले नहीं गये हैं। द्रौपदीके सदृश विश्वासपूर्ण हृदयसे उन्हें पुकारनेवालोंकी कमी हो गयी है। यदि दु:ख-सागरसे सहज ही पार उतरना है तो विश्वास करके अनन्यभावसे

ये द्रौपदीके दु:खोंका नाश करनेवाले भगवान् आज

परंतु द्रौपदी! मेरी बात कभी असत्य नहीं हो सकती।'

हो जाय, पृथ्वी चूर-चूर हो जाय और समुद्र सूख जाय,

मत करो। मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम राजरानी बनोगी। चाहे आकाश फट पड़े, हिमालय टुकड़े-टुकड़े

पतियोंको देखकर तुम्हारी ही भाँति रुदन करेंगी। मैं वही काम करूँगा, जो पाण्डवोंके अनुकूल होगा। तुम शोक

कटकर खूनसे लथपथ हो जमीनपर पड़े हुए अपने

स्त्रियाँ भी थोड़े ही दिनोंमें अर्जुनके भयानक बाणोंसे

उसकी लाज बचायी। पर दुष्ट दु:शासनने द्रौपदीके जिन

द्रौपदीकी आर्त पुकार सुनकर भक्तवत्सल प्रभु उसी क्षण द्वारकासे दौडे आये और द्रौपदीको वस्त्र-दानकर

पड़ गयी हूँ। आपकी शरणमें हूँ! आप मेरी रक्षा कीजिये।'

हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे महायोगी! हे विश्वात्मा और विश्वके जीवनदाता गोविन्द! मैं कौरवोंसे घिरकर संकटमें

कौरवोंके समुद्रमें डूबी जा रही हूँ। आप मेरा उद्धार कीजिये!

तुम्हारे साथ मेरा पवित्र प्रेम है और तुमपर मेरा अधिकार है

एवं तुम मेरी रक्षा करनेमें समर्थ भी हो! इसलिये तुम्हें मेरी रक्षा करनी ही होगी।' तब श्रीकृष्णने रोती हुई द्रौपदीको

आश्वासन देकर कहा—

निहतान् वल्लभान् वीक्ष्य शयानान् वसुधातले।

यत् समर्थं पाण्डवानां तत् करिष्यामि मा शुचः॥

सत्यं ते प्रतिजानामि राज्ञां राज्ञी भविष्यसि।

पतेद् द्यौर्हिमवान् शीर्येत् पृथिवी शकलीभवेत्॥

शुष्येत् तोयनिधिः कृष्णे न मे मोघं वचो भवेत्।

'कल्याणी! तुम जिनपर क्रोधित हुई हो, उनकी

मेरे सम्बन्धी हो, मैं अग्निकुण्डसे उत्पन्न पवित्र रमणी हूँ,

रोदिष्यन्ति स्त्रियो ह्येवं येषां क्रुद्धासि भाविनि।

बीभत्पुशरसंच्छन्नान् शोणितौघपरिप्लुतान्॥

(महा० वन० १२।१२८—१३१)

िभाग ९१

संख्या ७] सत्यका स्वरूप सत्यका स्वरूप [श्रीभरत-प्रसंग] (मानस-मर्मज्ञ पं० श्रीरामकिंकरजी महाराज) प्राय: सत्यको बहुत छिछले अर्थींमें लिया जाता तानकर खडा हो जाय और कहे कि जो हम कहें, वैसा है। हम अधिकतर वाणीके सत्यको ही सत्य मानते हैं। कहते जाओ! अब यह जो व्यक्ति बेचारा कह रहा है, हम जो नेत्रोंसे देखते हैं, उसे वाणीद्वारा व्यक्त कर देना वह स्वयं कह रहा है या पिस्तौल कहलवा रही है? ही सत्य मानते हैं, हृदयमें सत्य हुए बिना वाणीका सत्य उसका बस चले तो वह सब कुछ न कहे, जो उससे कहलवाया जा रहा है, वह तो बस अपनी बात कहे। केवल अधूरा ही सत्य है। कैकेयीजीके दो वरोंको पुरा करनेके लिये महाराज इसी प्रकार भरतजी जानते हैं कि पिताजीने वह सब नहीं दशरथने बाध्य होकर श्रीरामको चौदह वर्षका वनवास कहा, जिसका उल्लेख गुरु वसिष्ठ करते हैं, अपितु कैकेयी अम्बाने अन्यायपूर्ण ढंगसे पिताको यह कहनेको एवं भरतजीको राज्य देनेके जो वचन कहे-वह सत्य केवल उनकी वाणीका ही सत्य था, उनके हृदयमें बसा बाध्य किया कि राज्य भरतको देता हूँ। हमारे पिताजी हुआ सत्य नहीं था। मानसमें वर्णन आता है—जब हृदयसे चाहते थे कि श्रीरामका राज्य हो। अत: पिताजीकी महाराज दशरथके निधनका समाचार पाकर भरतजी इच्छाकी पूर्ति मेरे राज्य-ग्रहणसे नहीं होगी, बल्कि निनहालसे लौटे, तो गुरु वसिष्ठको पता चला कि श्रीरामको राज्य देनेसे होगी। कैकेयीने अयोध्याका जो राज्य अपने पुत्र भरतके लिये भरतका मन्तव्य यह था कि यह जो पिताजीके मॉॅंगा और श्रीरामको वनवासी बना दिया, श्रीभरत उस सत्यकी बात कही जा रही है, वह सत्य वह नहीं था, राज्यको लेना नहीं चाहते। तब गुरु वसिष्ठ भरतके समक्ष जो उनकी वाणीसे प्रकट हुआ था, बल्कि वह तो उनके एक समझौतेका प्रस्ताव रखते हैं, कहते हैं—भरत! देखो, हृदयमें था। तुम्हारे पिताजीने राज्य तुम्हें दिया है। अत: तुम्हें पिताकी वे तो भगवान् रामको ही अयोध्याके राज्यका उत्तराधिकारी समझते हैं और अपने पिताके निर्णयकी आज्ञाका पालन करना चाहिये और जब राम आ जायँ तो राज्य उन्हें सौंप देना, पर अभी तो ले लो। कितना निन्दा करते हैं। यदि भगवान् राम चाहते तो अन्यायके विरुद्ध संघर्ष कर सकते थे। आजकल प्रत्येक व्यक्ति बढ़िया समझौता सुझाया गुरु वसिष्ठने! संसार भी बच जाय और भगवान् भी मिल जायँ! पर श्रीभरत कितने अन्यायके खिलाफ लड़नेको तैयार है। घरमें, परिवारमें, जागरूक हैं। उनकी दृष्टिमें यह समझौता न्याय और नगरमें, जिसे देखो वही कहता है-हम अन्याय नहीं अन्यायमें है-वह समन्वय नहीं है। समन्वय अच्छा है सहेंगे। आश्चर्य तो यह है कि इतने लोग अन्यायके विरुद्ध और समझौता बुरा। जीवनमें समन्वय होना चाहिये, लड़ रहे हैं, फिर भी अन्याय बढ़ता ही जा रहा है। अन्याय समझौता नहीं। समन्वय ज्ञान-भक्ति-कर्मका होता है, मानो रक्तबीज हो गया है, जो काटनेपर और भी बढ़ता पाप-पुण्यका नहीं। पर हम लोग हैं, जो जीवनमें पाप जाता है। वैसे तो भगवान् राम भी कह सकते थे कि कैकेयीजी मोहमें आसक्त होकर मेरे प्रति अन्याय कर रही और पुण्यका समन्वय करते रहते हैं। लोगोंने भी श्रीभरतसे ऐसे ही समन्वयका आग्रह किया—जो गुरु वसिष्ठने कहा हैं और मैं इस अन्यायको नहीं सहँगा। पर भगवान् राम था, उसे दुहराया। पर भरत जानते हैं कि वे लोग ऐसा नहीं करते, वे तुरंत वनको चले जाते हैं। उनको इसमें समन्वयका नहीं, समझौतेका आग्रह कर रहे हैं। वे जानते कोई अन्याय नहीं दीखता। हमारी दृष्टिमें न्याय वह है, जिससे हमारा स्वार्थ पूरा होता है। हम जो चाहते हैं, उसे हैं कि पिताजीने उन्हें राज्य किस परिस्थितिमें दिया है। यह तो वैसे ही है जैसे कोई किसीके सीनेपर पिस्तौल न्याय मानते हैं और सामनेवाला जो करता है, उसे अन्याय।

भाग ९१ पर भगवान् राम और श्रीभरतके लिये न्याय-अन्यायकी समय तो पिताजीके सामने केवल कैकेयी अम्बा ही थीं, यह परिभाषा बदल जाती है। भरत यह मानते हैं कि पर इस दूसरे वचनको जिसमें उन्होंने श्रीरामको राज्य पिताजीकी बुद्धि भले ही जीवनभर अच्छी रही हो, पर देनेकी घोषणा की, उन्होंने सारी प्रजाके सामने घोषित उन्होंने श्रीरामसे राज्य लेकर मुझे देनेका जो निर्णय किया किया। उन्होंने गुरु विसष्ठसे कहा कि आप जाकर इससे तो यही लगता है कि 'मरन काल बिधि मित हरि सूचना दे दीजिये कि कल रामका राज्याभिषेक होनेवाला *लीन्ही।*'(२।१६२।३) उनकी मित मृत्युके समय मारी है तो कैकेयी अम्बाके सामने दिया वचन वचन हो गया गयी थी। श्रीभरतका तर्क यह है कि पिताजीने कैकेयी-और इतने लोगोंके सामने दिया वचन वचन नहीं हुआ? अम्बाको दो वरदान तब दिये थे, जब माँने एक समय यह कैसा न्याय है ? कैसा सत्य है ? जब कैकेयी अम्बाने युद्धक्षेत्रमें पिताजीके रथके पहियेको गिरनेसे रोक लिया वरदान माँगने चाहे तो पिताजीको कह देना था कि मैंने था। यदि रथका पहिया गिर जाता तो पिताजी गिर जाते राज्य देनेका वचन पहले ही श्रीरामको दे दिया है, अब और उन्हें चोट लग जाती। तात्पर्य यह है कि पिताजीने तुम और कोई दुसरी चीज माँगना चाहो तो माँग लो। माँको वरदान देनेका वचन इसलिये दिया था कि उन्होंने यदि पिताजीने ऐसा किया होता, तब सचमुच सत्यकी पिताजीके शरीरकी रक्षा की थी। पर अब जब माँ उनके रक्षा होती। लगता है कि पिताजी न तो अपने सत्यकी प्राण लेनेपर तुल गयी, तब शरीर-रक्षाके लिये दिया गया रक्षाके लिये कोई निर्णय ले पाये, न न्यायके लिये ही। पुरस्कार अपने-आपमें व्यर्थ हो गया: क्योंकि पुरस्कारका यह श्रीभरतकी दृष्टि है, उनकी व्याख्या है। आधार ही खत्म हो गया। जैसे किसी व्यक्तिकी ईमानदारीपर भगवान् राम भी ऐसी ही व्याख्या कर सकते थे; पुरस्कार घोषित हुआ और कल वह यदि बेईमानी करे क्योंकि यह व्याख्या सटीक और युक्तियुक्त है, पर वे वैसा और अपना घोषित पुरस्कार माँगना चाहे, तो उसे ईमानदारीका नहीं करते, अपित् अपने पिताद्वारा दिये गये वचनको पुरस्कार कैसे मिल पायेगा? ऐसे ही कैकेयी अम्बा एक न्यायसंगत बतलाते हैं। वे कहते भी हैं कि मेरे पिता इतने दिन महाराज दशरथके प्राणोंकी रक्षाका वरदान पानेकी महान् थे कि—'*राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी।*' अधिकारिणी हुई थीं, पर आज वे ही श्रीरामको वन भेज (२।२६४।६) उन्होंने मुझे त्यागकर अपने सत्यकी रक्षा की। भगवान् रामको अपने पिताके कृत्यमें कोई अन्याय महाराज दशरथके मानो प्राण लेनेपर तुली हुई हैं; क्योंकि महाराज दशरथ स्वयं कहते हैं—'राम बिरहॅं जिन मारसि नहीं दीखता। उनका तर्क यह है कि यदि कोई व्यक्ति मोही।'(२।३४।७) ऐसी दशामें भरतजीकी दृष्टिमें किसीसे ऋण लेता है और बादमें वह ऋणी व्यक्ति कहींसे कैकेयी अम्बाके वरदान प्राप्त करनेकी पात्रता नहीं रह बहुत-सा धन पा लेता है तो उसका पहला कर्तव्य यह होगा कि वह पुराना ऋण चुका दे और जो धन बचे, उसे गयी। अत: महाराज दशरथने यदि कैकेयीजीकी माँगके लिये 'नाही' कर दिया होता तो वह भरतकी दृष्टिमें अपने काममें ले। यदि ऋणी व्यक्ति धन पानेके बावजूद महाराज दशरथका उचित निर्णय होता, पर चूँकि उन्होंने ऋण न चुकाये तो ऋण देनेवालेको उससे यह कहनेका ऐसा नहीं किया, इसलिये भरत मानते हैं कि मृत्युके समय पूरा अधिकार है कि आप पहले हमारा ऋण चुकाइये। पिताजीकी मित मारी गयी। इसी प्रकार पिताजी मेरी माँके ऋणी थे और बिना माँका अगर कोई भरतसे तर्क करे कि भाई, आखिर ऋण चुकाये वे मुझे राज्य देना चाहते थे। अत: माँको पूरा वचन तो वचन है और एक बार जब महाराज दशरथने अधिकार है उन्हें रोकनेका और यह कहनेका कि आपको राज्य देनेका अधिकार नहीं है, पहले आप मेरा ऋण कैकेयीजीको वचन दे दिया तो उसकी रक्षा करना उनका धर्म है ? उसपर श्रीभरतका तर्क यह है कि ठीक है, चुकाइये, फिर बादमें दूसरेको दीजिये। अत: यदि पिताजीने महाराज श्रीदशरथने कैकेयी अम्बाको वचन दिया, पर माँको ऐसा वचन दिया है तो उन्होंने कोई अन्याय नहीं उर्हिंगिर्पांक्र एर् हिंह द्वयत् वे अक्राप्तक प्रिमान इतिहास के प्रमान के क्षेत्र के स्वाप्त के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रमान के प्रम

संख्या ७] सत्संगका प्रभाव भगवान रामका दुष्टिकोण है। वे न्याय उसे मानते हैं, जिससे स्थानपर एक-दूसरेको देनेकी वृत्ति हो। यह रामराज्य है। जहाँ उचित लेन-देनकी वृत्ति है, वह धर्मराज्य है और जहाँ भरतको राज्य मिले और अपना स्वार्थ-त्याग हो और भरत भी न्याय उसे मानते हैं, जिससे श्रीरामको राज्य मिले। परस्पर देनेकी वृत्ति है, वह रामराज्य। श्रीराम और श्रीभरत श्रीराम और श्रीभरत दोनोंकी परिभाषा वह है, जिससे अपने चरित्रके माध्यमसे यही दर्शन प्रस्तुत करते हैं। स्वयंके हिस्सेमें भोगके बदले त्याग पडे, जिसमें संघर्षके [प्रेषक—श्रीअमृतलालजी गुप्ता] सत्संगका प्रभाव (श्रीभागवतप्रसादजी पाण्डेय) होती है। राजाने यह बात पण्डितों को बतायी। पण्डितोंने सत्का श्रवण, कीर्तन, भजन, मनन, उसपर विश्वास, श्रद्धा या उसके अनुसार चलना सत्संग कहलाता है। कहा—महाराज! गजशालाके सामने रामायण, गीताका सत्—शाश्वत, नित्य, प्रदीप्त, उत्प्रेरक, शिवम् एवं प्रवचन कम-से-कम एक माहतक करवाया जाय। इसके सुन्दरम् होता है। अच्छे परिणाम होंगे। राजाने वैसा ही करवाया। एक माह सत्यम् शिवम् सुन्दरम्—आह! कितना आनन्ददायक बीतते-बीतते हाथीके स्वभावमें भारी परिवर्तन हो गया। प्रवचनके प्रभावसे खूँखार एवं हिंसक हाथी पुन: सीधा-वाक्य है ? इस वाक्य के श्रवणमात्रसे हर्षातिरेकसे मन भर उठता है और यदि सतुके साथ या पास रहा जाय सादा बन गया। तो कहना ही क्या! सत्यकी अनुभूति या इसका दर्शन यहाँ यह बात उजागर होती है कि सत्के श्रवणमात्रसे उस पशुका मन, विचार पवित्र हो गया। जीवनका परम लक्ष्य होना चाहिये। सत्संगका प्रभाव मानव ही नहीं पशुपर भी पड़ता फलत: वह हिंसकसे अहिंसक बन गया। विचार ही है। प्रस्तुत कथासे यह बात उजागर होती है— कर्मकी आधारशिला है। सत्संगतिसे ही सत् विचार किसी राजाके पास गजमौलि नामका एक हाथी आता है एवं सत्कर्मसे सद्भाव आता है। था। बहुत ही भोला-भाला, अपनी स्रूँड्से बच्चोंको पीठपर प्रश्न उठता है सत् क्या है ? कहाँ खोजें ? उसका बैठा लेता था। जानवर होते हुए भी वह बड़ा बुद्धिमान् संग कैसे करें ? जो शाश्वत, अमिट, नित्य है, वह सत् था, कभी किसीको उसने हानि नहीं पहुँचायी। अचानक है। कहाँ खोजें? प्रश्न गम्भीर है। पूजा, जप, तप, उस हाथीके व्यवहारमें बदलाव आ जाता है। कई जानवरोंको दान, भजन, कीर्तन, सत् श्रवण सत्प्राप्ति मार्गको सुगम उसने पटक-पटककर मार दिया एवं एक राजकर्मचारीको बनाता है। सत् दर्शनके लिये अपने भीतरकी यात्रा करनी घायल कर दिया। होगी। मनको प्रभुके अंश आत्मासे जोडना होगा। यद्यपि हाथीके स्वभावमें परिवर्तनका कारण जाननेहेत् राजाने सत्रूपी आत्माके हम बहुत ही निकट हैं, फिर भी इसकी खोज मृगके कस्तूरीकी भाँति बाहरी दुनियामें पण्डितोंकी एक बैठक बुलायी। राजाने पण्डितोंसे पूछा कि सीधा-सादा हाथी अचानक खूँखार क्यों हो गया? करते हैं। बाहरी जगत् माया है। सत् हमारे शरीरके विचारणीय बिन्दुपर पण्डितोंने कहा कि महाराज! संगतसे अन्दर आत्माके रूपमें है, जिसे जान लेना ही सत्-दर्शन गुण आता है। अत: हाथीके स्वभावमें परिवर्तनका कारण है-ईश्वरदर्शन है। आत्मबोधके बाद कुछ भी जानना जाननेहेत् गजशालामें रात-भर गुप्त पहरा दिया जाय। बाकी न रहेगा। फिर मानव-जीवनके मूल उद्देश्यकी पूर्ति राजाने अपने सिपाहियोंको गुप्त पहरा देनेका आदेश दिया। हो जायगी। जन्म-मरणके बन्धनसे निजात मिल जायगी। सिपाहियोंने आकर राजाको सूचना दी कि महाराज! आधी सत्-बोधहेतु ही मानव-जीवन सिर्फ एक बार मिलता रातको गजशालामें चोरोंकी बैठक होती है। यहीं बैठकर है। सत्संग किये बिना यदि जीवन व्यर्थ गवाँ दिया जाय वे चोरीकी योजना बनाते हैं। उनकी वार्तालाप हिंसक तो चौरासी लाख योनियोंमें भटकना होगा।

दुःखनाशके अमोघ उपाय

(नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)

खोज करते हैं संसारके पदार्थींमें, जो स्वयं अपूर्ण, खण्ड और अनित्य हैं। भगवान्ने उनको सुखरिहत और अनित्य अथवा दु:खालय और अशाश्वत बतलाया है। सो सत्य ही है। जो वस्तु अपूर्ण, खण्ड और अनित्य होती है, वह कभी सुख नहीं दे सकती। फिर जगत्में जो हम सुख देखते हैं, वह क्या है? वह है भ्रान्ति। असलमें तो 'विषयोंमें सुख है,' ऐसी कल्पना ही भ्रम है। भगवान्ने भोगोंको दु:खयोनि बतलाया है। भगवान् कहते हैं— ये हि संस्पर्शजा भोगा दु:खयोनय एव ते। आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः॥

सभी प्राणी सुख चाहते हैं और वह भी अखण्ड,

पूर्ण और नित्य सुख चाहते हैं, परंतु मोहवश उसकी

हैं, सब दु:खकी उत्पत्तिके स्थान हैं और आदि-अन्तवाले हैं। बुद्धिमान् पुरुष उन भोगोंमें कभी प्रीति

'अर्जुन! ये जो इन्द्रियोंके स्पर्शसे उत्पन्न भोग

नहीं करता।'
वस्तुत: जगत्के सुख-दु:ख सब केवल अनुकूलता

और प्रतिकूलताको लेकर ही हैं। जहाँ अनुकूलताका बोध है, वहाँ सुख है और जहाँ प्रतिकूलताका बोध है, वहीं दु:ख है। किसी स्थिति, घटना या वस्तुमें

सुख-दु:ख नहीं है। एक आदमीकी मृत्यु होती है। उसमें जिनका ममत्व है, वे प्रतिकूलताका अनुभव करके रोते हैं और जिनकी शत्रुता है, वे अनुकूलताके

बोधसे हँसते हैं और आनन्द मनाते हैं। नारदजीके पूर्वजन्ममें जब वे दासीपुत्र थे और बहुत छोटी उम्रके—

केवल पाँच वर्षके थे, तब उनकी आश्रयभूता एकमात्र

माताको साँपने डस लिया। माता मर गयी, इसपर नारदजीको दु:ख नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि 'माता मेरे भजनमें एक प्रतिबन्धक थी। भगवानने बडा अनुग्रह

किया, जो माताका देहान्त हो गया।' वे माताके इकलौते पुत्र थे, परंतु अनुकूलताकी भावनासे दुखी नहीं हुए। नरसी भक्तके इकलौते और अत्यन्त प्यारे जवान पुत्रकी मृत्यु हो गयी। नरसीजीने उसमें अनुकूलताका

अनुभव किया और दुखी न होकर वे गाने लगे— 'भलुँ थयुँ रे भाँगी जँजाळ। सुखेथी भजशुँ

श्रीगोपाळ। 'अच्छा हुआ जंजाल टूट गया, अब

सुखसे श्रीगोपालजीका भजन करूँगा।' आजादीसे पहलेकी बात है। कलकत्तेके 'अलीपुर बम केस' में जिसमें श्रीअरविन्द तथा उनके भाई श्रीवारीन्द्रकुमार घोष आदि अभियुक्त थे। नरेन्द्र गोस्वामी नामक एक

युवक सरकारी गवाह बन गया था। उसको जेलमें ही

एक दूसरे अभियुक्त श्रीकन्हाईलाल दत्तने मार डाला। कन्हाईलालको फाँसीकी सजा हुई। पर उसको अपने इस कार्यपर इतना अधिक सन्तोष और आनन्द था कि फाँसीकी सजा सुनायी जाने और फाँसी होनेके

बीचके दो-तीन सप्ताहके समयमें ही उसका लगभग अठारह पौंड वजन बढ़ गया। कहाँ तो मौतके नामसे खून सूख जाता है, कहाँ मृत्युकी तिथि निश्चित हो

जानेपर भी खून बढ़ गया। गोस्वामीको मारना पाप था या पुण्य, यह पृथक् प्रश्न है। पर कन्हाईलालने अपनी इस मृत्युमें इतनी अधिक विलक्षण अनुकूलताका

संख्या ७] दुःखनाशके	अमोघ उपाय १३
*****************************	*******************************
बोध किया और इतना अधिक सुखका अनुभव किया	एक अभावकी पूर्ति दसों नये अभावोंकी उत्पत्ति करनेवाली
कि जिसने उसका इतना खून बढ़ा दिया। अतएव	होती है। यहाँकी वस्तुमात्र ही—स्थितिमात्र ही अपूर्ण,
किसी घटनामें सुख-दु:ख नहीं है। वह तो अनुकूलता	अनित्य, क्षणभंगुर, वियोगशील और किसी अन्य वस्तु
और प्रतिकूलताके भावमें ही है।	या स्थितिसे निम्न स्तरकी है। जहाँ यह परिस्थिति है
एक ध्यानका अभ्यास करनेवाला साधक कोठरी	वहाँ प्रतिकूलता रहेगी ही; और प्रतिकूलता रहेगी तो
बन्द करके बैठता है और कहता है कि 'बाहरसे ताला	दु:ख भी रहेगा ही। अत: कोई यह चाहे कि मैं जगत्में
लगा दिया जाय। तीन घण्टे कोई खोले नहीं।' वह	सारी परिस्थितियोंको सदा अपने अनुकूल बना लूँगा और
अन्दर बैठकर मनको रोकने और इष्टका ध्यान करनेकी	परम सुखी हो जाऊँगा तो यह सर्वथा असम्भव है। ऐसा
कोशिश करता है। यद्यपि नया साधक होनेसे उसका मन	कभी हो ही नहीं सकता। विचारके द्वारा प्रत्येक
टिकता नहीं, पर वह इसमें सुखका अनुभव करता है	प्रतिकूलताको उपर्युक्त नारदजी और नरसीजीकी भाँति
और उसी कोठरीके बगलकी दूसरी कोठरीमें एक	अनुकूलतामें परिणत कर लेना पड़ेगा, तभी सुख होगा
आदमीको उसकी इच्छाके विरुद्ध बन्द कर दिया जाता	और ऐसा करना मनुष्यके अपने हाथकी बात है।
है। वह बड़ा दुखी होता है और कहता है कि 'तुरंत	स्वरूपत: बाह्य परिस्थितिको बदल देना तो बहुत ही
मुझे बाहर निकाल दिया जाय।' बन्द करनेवालोंको वह	कठिन है, निश्चित प्रारब्ध होनेपर तो असम्भव-सा ही
दुर्वचन कहता है, शाप देता है। दोनोंकी बाहरी स्थिति	है; परंतु विचारके द्वारा दु:खको सुखरूपमें परिणत करके
बिल्कुल एक-सी है। दोनों ही एक-सी जगह बन्द हैं।	सुखी हो जाना सहज है और अपने अधिकारमें है।
दोनोंके ही मन चंचल हैं। पर एक अनुकूलताका बोध	इसके कई तरीके हैं, जो सभी सत्यके स्वरूप हैं।
करता है, दूसरा प्रतिकूलताका। इसीके अनुसार वे दोनों	१. वेदान्तकी दृष्टिसे जगत् स्वप्नवत् है। मायासे
सुख-दु:खका भी पृथक्-पृथक् अनुभव करते हैं।	ही यह सत्य भास रहा है। गीतामें भगवान्ने कहा है—
एक आदमी अपने विपुल धनैश्वर्यका स्वेच्छापूर्वक	न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
त्याग करके संन्यास ग्रहण करता है और दूसरेका धन	नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा।
छीनकर उसे वैरी लोग घरसे निकाल देते हैं। दोनों समान	(१५।३)
धनहीन हैं। पर पहला प्रसन्न है, दूसरा दुखी है। इसका	'इसका स्वरूप जैसा दीखता है, वैसा मिलता नहीं
कारण वही अनुकूलता-प्रतिकूलताका बोध है। इससे	और इसका न आदि है, न अन्त है और न इसकी अच्छी
सिद्ध है कि यहाँके सुख-दु:ख अनुकूल-प्रतिकूलभावमें	तरहसे स्थिति ही है।' सिनेमा देख रहे हैं। नाना प्रकारके
ही हैं। एक भूखा आदमी है, बढ़िया-बढ़िया भोजन-	दृश्य दिखायी दे रहे हैं। आवाज सुनायी पड़ रही है,
पदार्थ बने हैं, वह खानेको लालायित है। खाने बैठता	परंतु कोई चाहे कि इन देखी हुई वस्तुओंको पर्देके पास
है, बड़ा स्वाद, बड़ा सुख मिलता है। भर पेट खा लिया,	जाकर मैं ले लूँ तो उसे सर्वथा निराश होना पड़ता है।
खूब अघा गया। अब वही पदार्थ यदि कोई उसे	वहाँ सिवा सादे पर्देके और कुछ है ही नहीं। अथवा जैसे
जबर्दस्ती खिलाना चाहता है तो उसे गुस्सा आ जाता	स्वप्नकी सृष्टिके पदार्थ और वहाँकी घटनाएँ जागनेपर
है। वह उद्विग्न हो जाता है। पहले अनुकूलभाव था, तब	नहीं मिलतीं, पर जबतक स्वप्न है, तबतक यह पता नहीं
सुख मिला। प्रतिकूल होते ही दु:ख हो गया। अत:	लगता कि यह स्वप्नकी सृष्टि कबसे बनी है और यह
सुख-दु:ख वस्तुमें नहीं हैं।	कबतक रहेगी। वहाँ तो यह नित्य ही मालूम होती है।
यह भी निश्चित है कि यहाँकी प्रत्येक अनुकूलता	पर सचमुच उसकी वहाँ कुछ भी प्रतिष्ठा—स्थिति नहीं
अनेकों प्रकारकी प्रतिकूलताओंको साथ लेकर आती है।	है। स्वप्न टूटा कि कुछ नहीं। अतएव जगत्के समस्त

भाग ९१ ***************** सुख-दु:ख स्वपकी सृष्टिके सुख-दु:खोंकी भाँति असत् ही नहीं। छोटे बच्चेको माता रगड़-रगड़कर नहलाती है, हैं, जागनेपर जैसे स्वप्नके देखे हुए पदार्थोंकी सत्ता नहीं बच्चा रोता है, पर माता उसके शरीरका मैल उतारकर उसे रहती, वैसे ही इनकी भी सत्ता नहीं है, इसलिये इन स्वच्छ, पवित्र, निर्मल बनाकर नये कपडे पहनाने और घटनाओंको लेकर सुखी-दुखी होना मूर्खता है। एक ही सजानेके लिये ही यह आयोजन करती है। इसी प्रकार अखण्ड परिपूर्ण परमात्मसत्ता है, वह नित्य सत्य भगवान् भी हमें निर्मल और पवित्र बनानेके लिये पापोंका सिच्चदानन्दघन है। उसमें न जन्म है न मृत्यु, न सुख फल—कष्ट भुगताया करते हैं। इसमें भी उनका वात्सल्य और कारुण्य भरा रहता है। इस दृष्टिसे यदि हम विश्वासपूर्वक है न दु:ख, न लाभ है न हानि। वह सदा सम, एकरस और कूटस्थ है। इस प्रकारके विचारसे दु:खका नाश हो विचार करें तो फिर दु:ख नामक कोई वस्तु नहीं रह जाती जाता है। संसारकी स्थिति कुछ भी हो इस प्रकारके और हम हर-हालतमें भगवान्के मंगलविधानका दर्शन निश्चयवाले पुरुषको सुख-दु:ख कभी नहीं होता। करके भगवान्के मंगलमय करकमलका स्पर्श पाकर श्रीगीतामें कहा है-आनन्दमुग्ध रह सकते हैं। यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। ३. जगत्में वास्तवमें दो ही तत्त्व हैं—भगवान् और भगवान्की लीला। 'जो कुछ है, सब भगवान् हैं,' और यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते॥ 'जो कुछ हो रहा है, सब भगवान्की लीला हो रही है।' 'जिस लाभको प्राप्त करके उससे अधिक कोई एवं लीलामय और लीलामें वैसे ही अभेद है, जैसे अग्नि दूसरा लाभ नहीं मानता और जिसमें स्थित होकर वह और उसकी दाहिका शक्तिमें अथवा सूर्य और सूर्यके बड़े भारी दु:खसे भी विचलित नहीं होता।' प्रकाशमें। अत: हमारे साथ जो कुछ हो रहा है, सब वह निरतिशय आत्यन्तिक आनन्दका अनुभव हमारे प्रियतम भगवान्की लीला ही हो रही है। इस लीलाका संस्पर्श वस्तुतः लीलामय भगवान्का ही करता है। आनन्दरूप ही हो जाता है। फिर उसके लिये संस्पर्श है। विश्वासपूर्वक इस प्रकारका भाव हो जानेपर दु:ख रहता ही नहीं। ऐसी स्थिति न हो, तबतक विचारपूर्वक ऐसी धारणा दु:खका सर्वथा अभाव हो जाता है। क्षण-क्षणमें प्रत्येक करे। इस धारणासे ही दु:खका नाश हो जाता है। सुख-दु:खसंज्ञक भोगोंमें लीलाविहारी भगवान्का मंगलमय २. जगत्में जीवोंके लिये फलरूपसे जो कुछ भी स्पर्श प्राप्त होता रहता है, जिससे नित्य नव-नव प्राप्त होता है, सब सर्वशक्तिमान् परमसुहृद् भगवान्के आनन्दरसकी धारा बहती रहती है। नियन्त्रणमें और उनके विधानसे होता है। मंगलमय प्रभुका ये तीनों ही बातें सिद्धान्ततः सत्य हैं। जगत् प्रत्येक विधान मंगलमय है। देखनेमें चाहे कितना ही स्वप्नवत् है-केवल ब्रह्म ही व्याप्त है। जगत्में सब भयंकर हो, पर वास्तवमें वह कल्याणमय ही है। निपुण कुछ मंगलमय भगवानुके मंगल विधानसे मंगल ही हो डॉक्टर जहरीले फोडेका ऑपरेशन करते हैं। छुरियोंसे रहा है और जगत्में भगवान् ही अपने-आपसे आप ही खेल रहे हैं। तीनोंका ही तात्त्विक स्वरूप एक ही है। अंगको काटते हैं। दर्द भी होता है। पर डॉक्टर यह क्रूर कार्य करते हैं रोगीके मंगलके लिये तथा रोगी यदि विश्वासी यह वस्तुत: सत्यको सत्यमें देखना है, जो मानव-जीवनका परम कर्तव्य है। इसीका फल भगवत्प्राप्ति या और समझदार है तो वह इस निष्ठुर पीड़ादायक कर्ममें भी डॉक्टरकी दया मानकर प्रसन्न होता है और उसका कृतज्ञ पूर्ण सुखरूप मोक्ष है। इस प्रकार अशेष दु:खोंसे छूटकर मनुष्य भगवत्कृपासे होता है। इसी प्रकार हमारे परमसुहृद् मंगलमय भगवान् भी कभी-कभी हमारे मंगलके लिये ऑपरेशन किया करते अपनी इसी आयुमें अखण्ड और पूर्ण सुखकी प्राप्ति कर हैं।Hardonsm छोडेरिक्शलाङ्कलेvखायन्त्रोत्नीवडामीर्वेडाम् द्वडायां प्रसायका हि।Marabe प्रमाया अपेर हित्तका Asimhasामीरिकोर

आध्यात्मिक जीवनकी सफलताका उपाय संख्या ७] आध्यात्मिक जीवनकी सफलताका उपाय (ब्रह्मलीन परमहंस स्वामी श्रीदयानन्द 'गिरि' जी महाराज) मनुष्य जन्मसे ही अपने जीवनको परिवारमें या परमेश्वरकी माया या प्रकृति कहा है। किसी एक समाजमें पाता है। उसीके नियम या मर्यादाएँ अब यहाँ धर्मके प्रेमीको तो केवल इतना ही समझना है कि जब किसी वस्तुतकका अत्यन्त नाश या उसे जन्मभर बाँधे रखती हैं। वह उनके अतिरिक्त अपनी बुद्धिसे तो परलोकके बारेमें बहुत ही कम समझ रखता विनाश नहीं होता तो आत्माका भी विनाश मृत्यु हो है, परंतु उसे चाहिये कि वह धार्मिक सत्संगद्वारा या जानेपर कैसे हो पायेगा? इस आत्माके बारेमें सत्यको खोजनेवालोंने और भी युक्ति दर्शायी है कि जैसे सोया धर्मग्रन्थोंको पढ़कर तथा उनमें श्रद्धा रखकर परलोकके हुआ प्राणी अपने शरीर या इस संसारके बारेमें कुछ भी न समझनेपर भी निद्रामें पहुँचनेपर वहाँ एक दूसरा शरीर धारण कर लेता है। वह शरीर इस सोये शरीरसे बिलकुल भिन्न है। इस संसार, परिवार या समाजके सब जीवोंकी दृष्टिमें वह सोये हुए मुर्देके समान दीख रहा है। उस अवस्थामें वह यहाँके प्राणियोंके वृत्तान्त या भावोंको बिलकुल ही नहीं समझता, परंतु निद्राके आगोशमें पड़ा हुआ इसी शरीरमें बसनेवाला आत्मा या जीव किसी दूसरी स्वप्नकी धरती या दूसरे आकाशमें विचरता हुआ, वहींके दूसरे शरीरमें सब प्रकारकी बातोंको समझता हुआ, वहाँ कई-एक कर्मोंमें संलग्न रहता है। यह सब आत्मारामकी कथा है। इस संसारमें होते हुए भी वह केवल निद्रामात्रको अपनाकर यहाँ तो मृतककी भाँति निश्चेष्ट पड़ा है और स्वप्नके संसारमें अपने-आपको कई-एक प्रकारके दु:ख-सुखकी उलझनोंमें पड़ा हुआ देखता है। यहाँ इतना ही समझना है कि निद्रा नाश नहीं है। उदाहरणके लिये घट (घड़ा) फूटा; यदि इस आत्माको अपने वशमें करके ज्ञानशून्य नहीं कर ठिकरियाँ बनीं। ठिकरियाँ चूर-चूर हुईं, परमाणु या सकी तो पुन: मृत्यु भी, जो कि एक निद्राके ही समान अत्यन्त छोटे कण बने, यदि ये कण या परमाणु भी फूटें है, कैसे इसे अपने वशमें करके इस आत्माके ज्ञानके तो एक व्यापक शक्ति, जिससे कि ये सब बने हुए थे, दीपकको बुझाकर इसका नाश कर सकेगी? इसी प्रकट होती है। उसे चाहे शास्त्रोंके ऋषि मायाका नाम आत्माके बारेमें इस बातको भी ध्यानमें रखना पड़ेगा कि

सम्बन्धमें भी कुछ जाने तथा मृत्युके पश्चात् भी उत्तम गति पानेके लिये विचार करे और कठिनता पड़नेपर तदनुसार आचरण करनेरूपी तप भी करे तथा अपने सांसारिक मिथ्या सुखोंको भी परलोकके भयसे विचारद्वारा ही ग्रहण करनेका धर्म रखे। अस्तु, यहाँ केवल इतना ही सूचित करना है कि मनुष्य चाहे अपनी बाह्य या सांसारिक बुद्धिद्वारा परलोक या मृत्युके पश्चात्की बातों या सत्यको भले ही न समझ सके, परंतु सत्य यह है कि ध्यानकी सूक्ष्मता (बारीकी)-तक पहुँचे हुए ऋषियोंके ज्ञानके अनुसार किसी भी जीवका अत्यन्त नाश कभी भी नहीं होता। वैसे तो संसारकी किसी भी वस्तुके अत्यन्त नाश—'कभी भी न रहने'के रूपमें अत्यन्त अभावको आजकलका कोई वैज्ञानिक भी माननेको तैयार नहीं। वस्तुत: जिसको हम किसीका नाश होना कहते हैं—वह केवल उस नाशवाली वस्तुकी अवस्थाका परिवर्तन (बदलना)-मात्र ही है, अत्यन्त (बिलकुल)

इसीके साथ एक ऐसी रचनेवाली शक्ति भी रहती है जो दें या प्रकृतिकी सूक्ष्म अवस्थाका, परंतु वस्तु उस अपने स्थूल घटरूपसे बदलते-बदलते यहाँतक पहुँची है। पुनः कि जीवके अन्तरमें पड़े कर्मों या संस्कारोंके अनुसार घटरूपमें पहुँचनेकी योग्यता भी उसमें होती है। आधुनिक धरती, आकाश तथा प्राणियोंको रचकर जीवको कई-वैज्ञानिक इस सत्यको कोई दूसरा नाम भले ही दे दें, एक अवस्थाओंका अनुभव करवाती है। यह हमने

परंतु यह सत्य या अन्तिम तत्त्व अपनेमें सब कुछ है और स्वप्नके संसारमें देखा है। स्वप्न इसी सत्यका प्रमाण है। इस शक्तिका नाम भले कुछ भी रखा जाय; परमात्मा, सबको सँभाले बैठा है। शास्त्रोंमें ऋषियोंने इसी सत्यको

भाग ९१ ईश्वर, नियति या अन्य भी कोई; परंतु जो यह सत्य है, आत्मामें यही सत्य-ज्ञान बढते-बढते, उन्नत या विकास-उसका निषेध नहीं बन पाता, परंतु इतना ध्यानमें रखना भावको प्राप्त होते-होते निर्विरोध बाहर जीवन धारण होगा कि ये सब सत्य उसी सत्पात्र, जिज्ञास्, उद्योगी करनेतकका सामर्थ्य प्राप्त कर ले तथा संसारके सब

धार्मिक जनको सुझेंगे, जो बाहरकी जीवनचर्याको सही

रखकर ध्यानको उन्नत करे और बाहरसे सांसारिक उलझनसे अवकाश प्राप्त करके इस सत्यकी खोज

करनेमें अपना जीवन लगाये। इस सबसे आध्यात्मिक जीवन उन्नत होता जायगा और वह जानेगा कि यह

आत्मा जो अनेक जन्मोंसे नाना प्रकारसे ज्ञान पाता हुआ

कई-एक अवस्थाओंसे गुजरता है, उन्हें लॉंघता है,

सबमें अपना-आपा देखता है, वह मृत्युसे अत्यन्त नष्ट

या विनष्ट न होकर जैसी सामग्री अपने साथ ले जाता

है, वैसे ही संसारको वह आगे पुन: भी रच लेता है और वहाँ सुख-दु:खका अनुभव करता है। हाँ! यदि इस

जीवन कैसे जिया जाय? (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज)

यूनानके प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात एक बार भ्रमण करते हुए एक शहरमें पहुँचे। वहाँ उनकी एक वृद्ध व्यक्तिसे भेंट हुई। दोनों काफी घुल-मिल गये। सुकरातने उनके व्यक्तिगत जीवनमें काफी

रुचि ली, काफी खुलकर बातें कीं।

पर इस वृद्धावस्थामें आपको कौन-कौनसे पापड़ बेलने पड़ रहे हैं, यह तो बताइये?'

वृद्ध किंचित् मुसकराया—'मैं अपना पारिवारिक उत्तरदायित्व अपने समर्थ पुत्रोंको देकर [और

इन सबको सर्व सामर्थ्यवान् प्रभुको समर्पित करके] निश्चिन्त हूँ। वे जो कहते हैं कर देता हूँ, जो

खिलाते हैं, खा लेता हूँ और अपने पौत्र-पौत्रियोंके साथ खेलता रहता हूँ। बच्चे कभी भूल करते हैं तब भी चुप रहता हूँ। मैं उनके किसी कार्यमें बाधक नहीं बनता। पर जब कभी वे परामर्श लेने आते

हैं तो मैं अपनी जीवनके सारे अनुभवोंको उनके सामने रखकर की हुई भूलसे उत्पन्न दुष्परिणामोंकी ओरसे सचेत कर देता हूँ। वे मेरी सलाहपर कितना चलते हैं, यह देखना और अपना मस्तिष्क खराब

करना मेरा काम नहीं है। वे मेरे निर्देशोंपर चलें ही, यह मेरा आग्रह नहीं। परामर्श देनेके बाद भी यदि वे भूल करते हैं तो चिन्तित नहीं होता। उसपर भी वे पुन: मेरे पास आते हैं तो मेरा दरवाजा सदैव

उनके लिये खुला रहता है। मैं पुन: उचित सलाह देकर उन्हें विदा करता हूँ। वृद्धकी बात सुनकर सुकरात बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि आपने इस आयुमें जीवन कैसे जिया जाय, यह बखूबी समझ लिया है।' [साधनसूत्र—प्रस्तुति : श्रीहरिमोहनजी]

पाता है। यही बस यही! आध्यात्मिक जीवनकी पूर्णता तथा सफलता है। इस फलकी प्राप्तिसे परे कुछ शेष पानेकी इच्छा भी नहीं रहती।

प्रभावोंसे मुक्त रहे तो यही आत्मा अपने शुद्ध, पवित्र,

परम सूक्ष्म, नित्य आनन्दरूपमें सदाके लिये ठिकाना भी

सब अनर्थींसे बचनेके लिये अर्थात् परलोकमें सद्गति पानेके निमित्त जीवनकालमें भी अपने-आपमें

सब बन्धनोंसे मुक्त होकर केवल आत्मामें ही सुख, शान्ति और तृप्ति पानेके हेतु केवल एक सधा हुआ आध्यात्मिक जीवन ही एक सहारा है।

[प्रेषक—प्रो० श्रीज्ञानचन्दजी गर्ग]

सुकरातने सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा 'आपका विगत जीवन तो बड़े शानदार ढंगसे बीता है,

संख्या ७] साधकोंके प्रति— साधकोंके प्रति— [परमात्म-तत्त्वकी प्राप्ति कठिन नहीं] (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज) प्राय: सामान्य साधकोंकी ऐसी धारणा रहती है अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। कि परमात्मतत्त्वकी प्राप्ति कठिन कार्य है; पर वस्तुत: तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः॥ वह कठिन नहीं है, हमने अपनी भ्रान्त धारणाके (गीता ८।१४) 'हे अर्जुन! जो पुरुष मुझमें अनन्यचित्त होकर कारण ही उसे कठिन और अगम मान रखा है। यहाँ यह शंका की जा सकती है कि स्वयं नित्य-निरन्तर मुझ पुरुषोत्तमका स्मरण करता है, उस भगवान् श्रीकृष्णने भी इस कठिनताकी ओर संकेत नित्य-निरन्तर मुझमें युक्त हुए योगीके लिये मैं सुलभ हूँ किया है-अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूँ।' ऐसी सुलभता होते हुए भी परमात्म-तत्त्वको मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतित सिद्धये। जाननेवाले बहुत कम हैं, इसका कारण क्या है? यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥ इसका मुख्य कारण है कि अधिकांश मनुष्य (गीता ७।३) 'हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिक लिये यत्न तात्कालिक (प्रत्यक्ष दीखनेवाले) सुख-भोग और पदार्थ-संग्रहमें लगे रहते हैं, वे प्रत्यक्ष दिखायी न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई ही देनेवाले एवं इन्द्रियातीत ईश्वरके सम्मुख नहीं होते। मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है।' यदि साधककी प्रवृत्ति परमात्म-तत्त्वकी ओर होगी तो पर विचारपूर्वक देखें तो इस श्लोकका तात्पर्य चाहे वह दुराचारीसे भी दुराचारी क्यों न हो, उसे परमात्मतत्त्वकी प्राप्तिमें कठिनाई बतानेमें न होकर निश्चय ही अपने लक्ष्यकी प्राप्ति शीघ्र हो जायगी। इस मार्गमें चलनेवालों (प्रवृत्त होनेवालों)-की दुर्लभता भगवान्के वचन हैं— बतानेमें है। मनुष्य-देह मिलनेपर भी अधिकांश लोग अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। इस मार्गपर पाँव नहीं रखते, अपने उद्धारका ऐसा साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥ स्वर्ण-अवसर मिलनेपर भी वे भोगोंमें आसक्त रहते (गीता ९।३०) हैं। यह नहीं सोचते कि हम जो कुछ कर रहे हैं, 'यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्यभावसे मेरा उसका परिणाम क्या होगा? वे अंधाधुंध एक-दूसरेका भक्त होकर मुझको भजता है तो वह साधु ही मानने अनुकरण करते हुए दुर्गतिको प्राप्त होते हैं। उपर्युक्त योग्य है; क्योंकि वह यथार्थ निश्चयवाला है।' श्लोकद्वारा भगवान्ने परमात्मतत्त्व-प्राप्तिके लिये सच्ची इसी प्रकार श्रीरामचरितमानसमें भी कहा गया लगनसे प्रयास करनेवाले मनुष्योंकी कमी बतलायी है, है— न कि उस तत्त्वकी प्राप्तिमें कठिनता। हमें मनुष्य-जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तिक मोही॥ देह प्रदान करनेका उद्देश्य ही यही है कि हम तिज मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना॥

(५।४८।२-३)

तात्पर्य यह कि साधक दृढ़ निश्चय करके अपनी

प्रवृत्तिको परमात्म-तत्त्वकी ओर मोड़ ले तो उसके लिये परमात्माकी प्राप्ति कठिन नहीं, अत्यन्त सुलभ है।

परमात्म-तत्त्वकी ओर प्रवृत्ति होते ही-

अच्छा संग प्राप्तकर सिद्धचारोंका संग्रह करें, जिनसे

जन्म-जन्मान्तरके कुसंस्कार नष्ट होकर हमें सुगमतापूर्वक

भगवान् तो परमात्म-तत्त्वकी प्राप्तिमें सुगमता

परमात्म-तत्त्वकी प्राप्ति हो जाय।

बतलाते हुए कहते हैं-

भाग ९१ इच्छित-अनिच्छित वस्तुएँ भी मिलीं, परंतु टिकीं नहीं। क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। ऐसा सर्वमान्य अनुभव होते हुए भी मनुष्य मनोऽनुकूल (गीता ९।३१) 'वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है और सदा सांसारिक परिस्थितियों और पदार्थींके पानेकी इच्छा रहनेवाली परम शान्तिको प्राप्त होता है।' नहीं छोड़ता। प्रथमत: तो ऐसे मनोऽनुकूल पदार्थ इसी प्रकार ज्ञान-मार्गमें प्रवृत्त होनेवाला पापी-से-मिलते नहीं, मिलते भी हैं तो ठहरते नहीं। यदि ये पापी साधक भी उसी परम शान्तिको प्राप्त करता है-सांसारिक सुख और पदार्थ टिकते भी हैं तो मनुष्य स्वयं नहीं रहता। इस अकाट्य सिद्धान्तको कोई बदल अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि॥ नहीं सकता, फिर भी मनुष्य अपने इस अनुभवकी उपेक्षा करनेके कारण सांसारिक अभिलाषाओंको (गीता ४। ३६) यहाँ यह शंका हो सकती है कि पापी तो त्यागता नहीं वरन् और अधिक तेजीसे उनकी ओर इनका अधिकारी भी नहीं हो सकता, फिर उसे ज्ञानरूपा दौडता है। नौका मिलना तो अत्यन्त कठिन ही होगा? परंतु जो कुछ संसारमें प्राप्त हुआ है, उससे हमें भगवानुका अभिप्राय यह है कि पापी-से-पापी जब सन्तोष होता नहीं और ये सांसारिक सामग्रियाँ अधिक-परमात्म-तत्त्वकी प्राप्तिके लिये अत्यन्त व्याकुल होता से-अधिक प्राप्त हो जायँ, ऐसी इच्छा बराबर बनी रहती है। इससे यह पता चलता है कि सांसारिक है तो मेरी सहज कुपासे उसका निश्चय ही कल्याण हो जाता है। पदार्थोंसे सदाके लिये तृप्ति नहीं हो सकती, आज-अब इस बातपर विचार करें कि परमात्म-तत्त्व तक किसीकी तृप्ति हुई भी नहीं। शास्त्रोंमें कहा जब पापियों और धर्मात्माओं—सभीके लिये सुगम है, गया है-उसके सभी समानरूपसे अधिकारी हैं, तब फिर उसकी यत् पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः। प्राप्तिमें कठिनताका आभास क्यों होता है? विचार न दुह्यन्ति मनःप्रीतिं पुंसः कामहतस्य ते॥ किया जाय तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि यह कठिनता (श्रीमद्भा० ९।१९।१३) हमने ही मान रखी है। वास्तवमें कठिनता है नहीं, 'लोकमें जितने धन, धान्य, सुवर्ण, पशु और उसका आभासमात्र होता है। सांसारिक पदार्थोंकी स्त्रियाँ हैं, वे सब मिलकर भी विषयग्रस्त पुरुषके प्राप्ति और उनमें सुख-बुद्धिका त्याग न कर पाना चित्तको संतुष्ट नहीं कर सकते।' ही परमात्म-तत्त्व-प्राप्तिकी उत्कण्ठामें सबसे बडी बाधा जब सांसारिक पदार्थोंसे आजतक किसीको पूर्णता है। इस विषयमें एक मार्मिक बात यह समझनी नहीं मिली। न मिल सकती है और न कभी मिल चाहिये कि परमात्म-तत्त्वकी प्राप्तिमें पूर्वजन्मार्जित पाप ही सकेगी, तब हमें उनसे पूर्णता कैसे प्राप्त हो उतने बाधक नहीं होते, जितनी कि वर्तमान जन्मकी सकती है? धर्म-विरुद्ध प्रवृत्तियाँ। मनुष्यका ऐसा स्वभाव बन यह जीव चेतन (परमात्मा)-का अंश है-गया है कि वह संसारकी नश्वर वस्तुओं एवं क्रियाओंसे ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी॥ सुख लेना चाहता है। इसी कारण उसकी परमात्म-(रा०च०मा० ७।११७।२) चेतनकी भूख जड़, नाशवान् संसार और उसके तत्त्वकी ओर प्रवृत्ति ही नहीं होती, फिर उसमें अनन्यता पदार्थों या सुख-संग्रहसे कैसे मिटेगी? यदि परमात्माका तो होगी ही कैसे? Hindhiettipajacottabarvar lattosikotaetiooktihasina नं लेकिनीकोक्षा मिनिकार्का अस्ति हो स्राप्ति हिंगी प्राप्त

संख्या ७] साधकोंबे	ज्प्रति— १९
**********************************	****************
बढ़ता ही चला जायगा और सांसारिक अभावोंकी	जो अनुकूलता पहले इच्छा होनेपर भी नहीं
पूर्तिसे यह अभाव कभी कम न होगा। जहाँ जड़तासे	मिलती थी, वही इच्छा त्यागते ही पीछे-पीछे दौड़ने
सम्बन्ध होगा, वहाँ दरिद्रता बढ़ती ही चली जायगी।	लगती है। जिसे कुछ भी लेनेकी इच्छा नहीं होती,
अंश (जीव)-को जबतक अंशी (ईश्वर)-की प्राप्ति	उसे लोग देते हैं और जो माँगता है, उसे कोई देता
नहीं होगी, तबतक समस्त सांसारिक वैभव प्राप्त हो	नहीं। लोकमें यह बात तो सबके देखनेमें आती
जानेपर भी उसे शान्ति नहीं मिल सकेगी। जड़तासे	ही है।
सम्बन्ध जोड़ना अशान्तिको गले लगाना है, यह	जो मायाको नहीं अपनाते, माया उनकी सेवा
निर्विवाद सत्य है। यदि साधककी विवेक-बुद्धिमें यह	करती है और जो मायाके पीछे लगे रहते हैं, उनके
बात बैठ जाय कि मैं चेतनका अंश अर्थात् चेतन हूँ	हाथ वह आती नहीं। उलटा वे अपना ही नाश कर
और सांसारिक पदार्थ जड़ प्रकृतिके कार्य होनेके	लेते हैं—
कारण जड़ हैं, इनसे मेरी तृप्ति कदापि नहीं हो	जो विषया संतन तजी ताही नर लिपटाय।
सकती तो उसे परमात्म-तत्त्वकी प्राप्ति अत्यधिक	ज्यों नर डाले वमन को स्वान स्वाद सों खाय॥
सुगमतासे हो सकती है; क्योंकि वे (परमात्मा) नित्य	त्याज्य दुर्गन्धित वमनके लिये जिस प्रकार कुत्ते
प्राप्त हैं, कभी किसीसे अलग हुए ही नहीं।	आपसमें लड़ते और छीना-झपटी करते हैं, उसी
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासिंह तबहीं॥	प्रकार परमात्म-तत्त्वसे विमुख हुए संसारी लोग
(रा०च०मा० ५।४४।२)	घृणास्पद एवं दु:खदायी पदार्थींके लिये परस्पर ईर्ष्या-
भगवान्के सम्मुख होते ही करोड़ों जन्मोंके पाप	द्वेष आदिमें फँसकर दुखी होते रहते हैं। यदि सांसारिक
नष्ट हो जाते हैं। यह कैसी विलक्षण बात है! परमात्म–	पदार्थों में भोग और संग्रह-बुद्धिका त्याग कर दिया
तत्त्वकी ओर उन्मुख होते ही सारी बाधाएँ अपने-आप	जाय तो सब प्रकारकी अनुकूलता होनेपर भी वह
दूर हो जाती हैं।	परमात्म-तत्त्वकी प्राप्तिमें बाधक नहीं बन सकेगी।
कुछ लोगोंकी यह भ्रान्त धारणा है कि परमात्म-	जैसा कि ऊपर कहा गया है—सांसारिक पदार्थीमें
प्राप्तिक साधनमें लगनेसे संसारके सगे–सम्बन्धी, मित्र,	और उनकी कामनामें भी स्थायित्व नहीं है तो फिर
बान्धव विपरीत हो जाते हैं। सत्य तो यह है कि	उनसे नित्य, शुद्ध, शाश्वत और पूर्ण सुखकी प्राप्ति
जो सच्चे हृदयसे भगवान्की सेवा-भक्तिमें लग जाता	कैसे सम्भव हो सकती है? परमात्मा तो सर्वत्र हैं,
है, उसे संसारी लोगोंसे ही नहीं, प्रत्युत उदासीन,	सब समय हैं, सबमें हैं, सब देशमें हैं, फिर उनकी
वैरी, मित्र, कुटुम्बी और यहाँतक कि चोर-डाकुओंसे	प्राप्तिमें कठिनता क्या—
भी सहायता मिलती है। मार्मिक बात यह है कि	घट-घट व्यापक रामजी अति नेड़ा नहीं दूर।
भगवान्की ओर प्रवृत्ति होनेपर साधक सबमें परमात्माका	भजे कपट तज चित्तसे सन्मुख होइ जरूर॥
दर्शन करता है, कहीं भी उसकी आसक्ति नहीं होती,	वास्तवमें इस निकटताको दूरीमें, सुगमताको
वह निर्वेर हो जाता है—	कठिनतामें बदला है सांसारिक इच्छाओंने, भोगोंने,
उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध।	विभिन्न कामनाओंने। इनका त्याग पूरी सच्चाईसे होना
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध।।	चाहिये, फिर परमात्म-तत्त्वकी प्राप्तिमें कोई कठिनता
(रा०च०मा० ७।११२ ख)	नहीं रहती।
	

प्रभुकी पूर्वनियोजित लीला—'रामवनवास'

(डा० श्रीरमेश मंगल वाजपेयीजी)

श्रीहरि विष्णुने मनु-शतरूपाको दिये गये वरदान रावणस्य विनाशार्थं श्वो गन्ता दण्डकाननम्।

('होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत')-

को सत्य करनेके लिये तथा असूरोंके दलनार्थ ही अपने

मानवावतारका संकल्प लिया और त्रेतामें मर्यादा पुरुषोत्तम दण्डकारण्यको जाऊँगा और वहाँ चौदह वर्ष मुनिवेष

श्रीरामके रूपमें प्रकट हुए। श्रीरामचरितमानसमें श्रीमद्भगवद्गीताके ईश्वरीय संकल्पको रेखांकित करते

हुए कहा गया है-

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़िहं असुर अधम अभिमानी॥

करिं अनीति जाइ निंहं बरनी। सीदिहं बिप्र धेनु सुर धरनी॥

तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सञ्जन पीरा॥ (रा०च०मा० १।१२१।६—८)

अर्थात् जब-जब धर्मका ह्रास होता है और

नीच अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं तथा वे ऐसा अन्याय करते हैं कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता।

जिससे ब्राह्मण, गौ, देवता और पृथ्वी कष्ट पाते हैं, तब-तब वे कृपानिधि प्रभु भाँति-भाँतिके [दिव्य]

शरीर धारणकर सज्जनोंकी पीडा हरते हैं। यह ईश्वरका सत्य-संकल्प हैं। इसी क्रममें अपना संकल्प सिद्ध

करने हेत् श्रीहरिका रामावतार हुआ है-असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखिहं निज श्रुति सेतु।

जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु॥

(रा०च०मा० १।१२१) अर्थात् वे असुरोंको मारकर देवताओंको स्थापित करते हैं, अपने [श्वासरूप] वेदोंकी मर्यादाकी

रक्षा करते हैं और जगत्में अपना निर्मल यश फैलाते

श्रीरामचन्द्रजीके अवतारका यह कारण है। एतदर्थ प्रभुने अपने वन-गमनकी योजना पहले

कहते हैं-

ही बना ली थी। अध्यात्मरामायणमें उद्धृत है

कि वनगमनके सम्बन्धमें प्रभु श्रीराम नारदजीसे

* एतस्मिन्नन्तरे देवा देवीं वाणीमचोदयन् । गच्छ देवि भुवो लोकमयोध्यायां प्रयत्नत:॥ रामाभिषेकविष्नार्थं यतस्व ब्रह्मवाक्यतः । मन्थरां प्रविशस्वादौ कैकेयीं च ततः परम्॥ ततो विघ्ने समुत्पन्ने पुनरेहि दिवं शुभे। तथेत्युक्त्वा तथा चक्रे प्रविवेशाथ मन्थराम्॥

और तब—

कहते हैं-

अर्थात् हे माता! हमारी बड़ी विपत्तिको देखकर

समास्तत्र ह्युषित्वा मुनिवेषधृक्॥

अर्थात् रावणका वध करनेके लिये मैं कल

धारणकर रहुँगा। प्रभुके इस प्रयोजनकी पूर्तिमें सरस्वती देवीने सहयोग प्रदान किया। अध्यात्मरामायणके

अयोध्याकाण्डमें द्वितीयसर्गके ४४ से ४६ श्लोकोंके

अनुसार, इसी समय देवताओंने सरस्वतीदेवीसे आग्रह किया कि—हे देवि! तुम यत्नपूर्वक भूलोकमें अयोध्यापुरीमें

जाओ और वहाँ ब्रह्माजीकी आज्ञासे रामचन्द्रजीके

राज्याभिषेकमें विघ्न उपस्थित करनेके लिये यत्न करो।

प्रथम तो तुम मन्थरामें प्रवेश करना और फिर कैकेयीमें।

हे शुभे! इस प्रकार विघ्न उपस्थित हो जानेपर तुम फिर

स्वर्गलोकको लौट आना।* इसपर सरस्वतीजीने 'बहुत

अच्छा' कहकर वैसा ही किया और प्रथम मन्थरामें

प्रवेश किया। इस प्रसंगका श्रीरामचरितमानसमें बडी ही

रोचक शैलीमें वर्णन किया गया है तथा देवताओंके इस

कुचक्रको उनकी स्वार्थ-लिप्सा बतायी गयी है। देवता

बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु। रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु॥

(अ०रामा० २।१।३८)

आज वही कीजिये, जिससे श्रीरामचन्द्रजी राज्य त्यागकर वनको चले जायँ और देवताओंका सब कार्य सिद्ध हो।

बार बार गिह चरन सँकोची। चली बिचारि बिबुध मित पोची।

(रा०च०मा० २।११)

ऊँच निवासु नीचि करतूती। देखि न सकिहं पराइ बिभूती॥

बार-बार चरण पकड़कर देवताओंने सरस्वतीजीको

संख्या ७] प्रभुकी पूर्वनियोजित त	
•••••••••••••••	
संकोचमें डाल दिया। तब वे यह विचारकर चलीं कि	कहा था कि कल मैं वनको जाऊँगा। अतः हे भोले
देवताओंकी बुद्धि ओछी है। इनका निवास तो ऊँचा है, पर	भाइयो! आपलोग रामके लिये कोई चिन्ता न करें।
इनकी करनी नीची है। ये दूसरेका ऐश्वर्य नहीं देख सकते।	इसीके सापेक्ष सन् १६४३ ई० का भक्त कवि
तदिप रामकाजका विचार करके वे रानी कैकेयीकी मन्दबुद्धि	लालदासप्रणीत अवध-विलास भी ध्यातव्य है। ग्रन्थमें
दासी मन्थराकी बुद्धि भ्रमित कर देती हैं और वापस चली	रामजन्मसे लेकर उनके वन-गमनतककी कथाको ग्रहण
जाती हैं—	किया गया है। अवध-विलासके अनुसार राम-वन-गमनकी
नामु मंथरा मंदमित चेरी कैकइ केरि।	घटना कैकेयी और रामके मध्य बनी योजनाका एक अंग
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मित फेरि॥	थी। रावणवधके लिये नारदद्वारा प्रेरित किये जानेपर रामकी
(रा०च०मा० २।१२)	उदासी देखकर कैकेयी रामसे उसका कारण पूछती हैं।
भ्रमितमित मन्थराने रानी कैकेयीसे अनेक प्रकारके	राम रावण-वधके लिये वन जानेकी बात करते हैं—
कुटिल किस्से कहकर उन्हें अन्तत: समझा ही	बोले राम मोहि वनचारी। राजिंह किह कर सो हितकारी॥
लिया कि—	रामने कहा—'हे माते!'मुझे [रावणवधहेतु] वनवासी
दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती।	होना है। अत: इसे राजा (दशरथ)–से कहकर मेरा हित
सुतिह राजु रामिह बनबासू। देहु लेहु सब सवित हुलासू॥	कीजिये—रामकी इच्छा जानकर कैकेयी कहती हैं कि रामको
तुम्हारे दो वरदान राजाके पास धरोहर हैं। आज	लोककल्याणार्थ वनगमन कार्य अभीष्ट है। अत: वह इस
उन्हें राजासे माँगकर अपनी छाती ठंढी करो। पुत्रको राज्य	कार्यमें सहायक होगी। राम कैकेयीको सचेत करते हैं—
और रामको वनवास दो तथा सौतका सारा आनन्द तुम ले	मेरे बिरह पिता पुनि मरिहैं। तोहि अजस अति होइन परिहैं॥
लो। होनहारवश ऐसा करनेके लिये कैकेयीके मनमें दासी	भरत भोग तजि जोगी होई। कौसल्या दुख करिहै सोई॥
मन्थराकी बातोंका विश्वास हो गया। उसने वही किया,	अवधपुरीके वासी जेते। ह्वैं हैं सबहि उदासी तेते॥
जैसा मन्थराने समझाया। इस प्रकार ' <i>जसु अपजसु बिधि</i>	[हे माते!] मेरे वियोगमें पिता (दशरथ)-का
<i>हाथ</i> 'के न्यायसे रानी कैकेयीके हाथ अपयश ही लगता	निधन हो जायगा। आपको अत्यन्त लोक-अपयशका
है, किंतु महाराजा दशरथ और रानी कैकेयी तो निमित्तमात्र	भागी होना पड़ेगा, भरत राजभोगोंको त्यागकर योगी हो
हैं, और वे अपने भाग्यका भोग ही प्राप्त करते हैं। वस्तुत:	जायगा, माता कौसल्या दुखी होंगी, अवधपुरवासी सभी
श्रीरामका वनगमन पूर्वनियोजित है, उसमें राजा या कैकेयी	उदासीन हो जायँगे।
कारण नहीं—ऐसा अध्यात्मरामायणका मत है। उक्त ग्रन्थके	तथापि वन-गमनको पूर्वनिर्धारित कल्याणकारी
अयोध्याकाण्ड, पंचम सर्ग, श्लोक २४ व २५ के अनुसार—	योजनाको कैकेयी क्रियान्वित करती हैं और राम रावण-
राजा वा कैकेयी वापि नात्र कारणमण्वपि।	वधहेतु वनको तदनुरूप प्रस्थान करते हैं। इस प्रकार
पूर्वेद्युर्नारदः प्राह भूभारहरणाय च॥	अवध-विलास ग्रन्थमें राम-वनगमनके अन्तर्गत दो तथ्य
रामोऽप्याह स्वयं साक्षाच्छ्वो गमिष्याम्यहं वनम्।	स्पष्ट उभरकर आये हैं—(१) श्रीराम वन-गमनकी
अतो रामं समुद्दिश्य चिन्तां त्यजत बालिशा:॥	जनकल्याणकारी योजना पूर्वनिर्धारित थी। (२) उक्त
अर्थात् मुनिवर वामदेव कहते हैं—इनके (श्रीरामके)	योजनाका क्रियान्वयन सर्वोपरि मानकर रानी कैकेयीने
वनगमनमें राजा या कैकेयी अणुमात्र भी कारण नहीं हैं।	अनेक दुखों और मर्मान्तक लोक-अपयशको भी स्वीकार
कल ही इनसे नारदजीने पृथ्वीका भार उतारनेके लिए	किया। इस दृष्टिकोणसे रानी कैकेयीका चरित उदात्त
प्रार्थना की थी। उस समय स्वयं रामने भी उनसे यही	एवं अत्यन्त महिमापूर्ण है।
	>+

गोस्वामीजीका काशीप्रवास*

(डॉ० श्रीगौरीशंकरजी गुप्त)

पुण्यपुरी काशीसे प्रात:स्मरणीय 'सामवेद' के समान फलवती होगी। इतना कहकर गोस्वामी

तुलसीदासजीका अत्यन्त घनिष्ठ और अभिन्न सम्बन्ध श्रीगौरीशंकर अन्तर्धान हो गये। शिवादेशके अनुसार

रहा है। उनके जीवनका अधिकांश समय यहाँ रामकथाके

वक्ता, साहित्यप्रणेता तथा साधकके रूपमें व्यतीत हुआ।

यहाँ उन्होंने पन्द्रह वर्षतक शेष सनातनजीसे वेद-

वेदांगका अध्ययन भी किया था। काशीमें ही उन्हें हनुमान्जीके दर्शन हुए, जिसके फलस्वरूप भगवान्

श्रीरामके दर्शनका मार्ग प्रशस्त हुआ। यहाँके प्रह्लादघाट,

असीघाट, तुलसीघाट और गोपालमन्दिरसे वे विशेषरूपसे

जुड़े रहे। प्रह्लादघाटपर वे अपने मित्र पं० श्रीगंगारामजी ज्योतिषीके यहाँ रहे, असीघाटपर रहते हुए उन्होंने शरीरत्याग किया और गोपालमन्दिरकी वाटिका-गुफामें

रहकर 'विनय-पत्रिका' की रचना की। यों बारह

हनुमान्-मन्दिरोंकी स्थापनाके कारण उनका सम्बन्ध अन्य मुहल्लों या क्षेत्रोंसे भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं रहा।

काशीमें श्रीरामका चरित्र रामलीलाके माध्यमसे जन-जनतक पहुँचानेका श्रेय तुलसीदासजीको ही है। यहाँ श्रीकृष्ण और नागनथैयाकी प्रसिद्ध लीला भी उन्हींकी देन है। मानसरोवरके निकट उनको काकभुशुण्डिजीके

दर्शन हुए और तभीसे उन्होंने काशीमें रामकथामृत-पान कराना आरम्भ किया। प्रह्लादघाटपर निवास करते हुए उनमें कवित्व शक्ति

प्रस्फुटित हुई और वे संस्कृतमें पद्यरचना करने लगे, किंतु दिनमें वे जो पद्य रचते, रातमें लुप्त हो जाते। यह

नित्यकी घटना थी। एक सप्ताह इसी तरह बीता। आठवें दिन भगवान् शंकरने उन्हें स्वप्नमें आदेश दिया कि तुम अपनी भाषामें काव्य-रचना करो। गोस्वामीजीकी निद्रा

भंग हो गयी और वे उठ बैठे। उन्होंने शिव-पार्वतीको अपने समक्ष उपस्थित पाया और उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। शिवजी बोले-तुम अयोध्यामें रहते हुए भाषामें

रामकाव्यकी रचना करो। मेरे आशीर्वादसे तुम्हारी रचना

गोस्वामीजी अयोध्या चले गये और वहाँ उन्होंने 'श्रीरामचरितमानस' की रचना की। तदनन्तर काशी

लौटकर शिव-पार्वतीको 'मानस' सुनाया। यहाँ गोस्वामीजीके 'श्रीरामचरितमानस' की मूल प्रति विश्वनाथ-मन्दिरमें रखी गयी। प्रात: मन्दिरके पट

खुले तो देखा गया—पुस्तकपर लिखा है—'सत्यं शिवं

सुन्दरम्' और नीचे भोलेनाथ शंकरके हस्ताक्षर हैं। उस समय उपस्थित जनोंने 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की ध्वनि भी सुनी।

है तो वे उद्वेलित हो उठे, उनके मनमें ईर्ष्या होने लगी। वे तुलसीदासजीकी निन्दा करने लगे और 'मानस' को नष्ट करनेका उपक्रम भी। इसे गायब करनेके लिये दो चोर भेजे गये। चोरोंने देखा कि तुलसीदासजीकी

कुटियाके बाहर श्याम और गौरवर्णके दो अत्यन्त सुन्दर

जब काशीके पण्डितोंने सुना कि ऐसी घटना हुई

वीर धनुष-बाण लिये पहरा दे रहे हैं। उनके दर्शनसे चोरोंकी बुद्धि पवित्र हो गयी, वे चोरी छोड़कर

भगवद्भजन करने लगे। तुलसीदासजीने अपने ग्रन्थके कारण प्रभुको कष्ट हुआ जान अपना सारा सामान लुटा

* गोस्त्रामी तुलसीदासजीके जीवन-चरित्रके सम्बन्धमें कई मान्यताएँ भी प्रसिद्ध हैं। लेखक महोदयने तुलसीदासजीके सम्बन्धमें कुछ Hinduism Discord Server https://dsc.go/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha तथ्य प्रस्तत किये हैं. जो गोस्वामीजी महाराजक महिमामय चर्स्शिवलोकनके तात्पर्यस यहा यथावत प्रस्तत हैं।

संख्या ७] गोस्वामीजीक	ा काशीप्रवास २३
**************************************	**************************************
दिया और ग्रन्थकी मूल प्रति अपने मित्र टोडरमलके पास	गंगारामजीने तुलसीदासजीसे जिज्ञासा की। गोस्वामीजीने
रख दी। इसके बाद उन्होंने एक दूसरी प्रति लिखी। उस	'श्रीरामशलाका प्रश्नावली' की रचना की और उनका
प्रतिलिपिसे अन्य प्रतिलिपियाँ तैयार की जाने लगीं।	समाधान कर दिया। काशिराजके दरबारमें गंगारामजीने
ग्रन्थका द्रुतगतिसे प्रचार होने लगा। यह देखकर	जब काशिराजके प्रश्नका उत्तर दिया और वह सही
पण्डितोंसे फिर नहीं रहा गया और उन लोगोंने श्रीमधुसूदन	निकला तो वे उनके द्वारा बारह सौ स्वर्ण मुद्राओंसे
सरस्वतीजीसे ग्रन्थपर अपना मन्तव्य देनेका अनुरोध	पुरस्कृत किये गये। पुरस्कारकी राशि लाकर उन्होंने
किया। श्रीमधुसूदनजीने ग्रन्थावलोकनके पश्चात् अपनी	गोस्वामीजीके श्रीचरणोंमें रख दी। तुलसीदासजीने बहुत
हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की और लिखा—	मुश्किलसे उसे स्वीकार तो कर लिया, किंतु उसके
आनन्दकानने ह्यस्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः।	सदुपयोगकी योजना बनाने लगे।
कवितामञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता॥	तुलसीदासजीकी अपनी नाव थी और वे काशीवास
भाव यह कि इस काशीरूपी आनन्दवनमें तुलसीदास	करते हुए उसीसे गंगाजीके उस पार नित्य शौचादिके
चलता-फिरता तुलसीका पौधा है। उसकी कवितारूपी	निमित्त जाया करते थे। निवृत्त होनेपर शेष जल वे एक
मंजरी बड़ी ही सुन्दर है, जिसपर श्रीरामरूपी भँवरा सदा	पेड़में डाल देते थे। एक दिन जल नहीं बचा, जिससे
मॅंडराया करता है।	पेड़में डालना सम्भव न हो सका। गोस्वामीजी पेड़के
काशीके पण्डितोंको इतनेसे भी सन्तोष नहीं हुआ	निकटसे लौट रहे थे कि उस निर्जन स्थानसे आवाज
और उन्होंने दूसरी चाल चली। भगवान् विश्वनाथके	आयी—आज तो मैं प्यासा ही रह गया। सुनते ही
मन्दिरमें उनके समक्ष सबसे ऊपर वेद, उसके नीचे	तुलसीदासजी चौंके, उन्होंने चतुर्दिक् दृष्टि दौड़ायी, किंतु
शास्त्र, शास्त्रोंके नीचे पुराण और सबके नीचे	उनको वहाँ कोई नहीं नजर आया। उन्हें आश्चर्यचिकत
'श्रीरामचरितमानस' रखा गया। मन्दिर बन्द कर दिया	देख स्वरमें और भी स्पष्टता आयी, जिससे गोस्वामीजीको
गया। प्रात:काल मन्दिर खुलनेपर देखा गया कि	यह समझते देर न लगी कि इस वृक्षमें किसी प्रेतका वास
श्रीरामचरितमानस वेदोंके ऊपर रखा है। अब तो	है, जिसकी पिपासा आज शान्त नहीं हुई है। अपवित्र
पण्डितोंके सिर शर्मसे झुक गये। उन लोगोंने तुलसीदासजीसे	जलसे प्रेतादि योनियाँ तृप्त होती हैं, ऐसी प्रसिद्धि है।
क्षमा–याचना को।	इसी कारण रोज तुलसीदासजीके जलसे उस प्रेतकी तृप्ति
इतना ही नहीं, जब तुलसीदासजी असीघाटपर	होती थी। प्रेतकी व्याकुलता देख गोस्वामीजी गंगाजल
निवास कर रहे थे कि एक दिन रात्रिमें कलियुग मूर्तरूप	ले आये और उन्होंने उसे पेड़में डाल दिया। प्रेत केवल
धारणकर उनके पास आया और उनको त्रास देने लगा।	तृप्त ही नहीं हुआ, अपितु उसने गोस्वामीजीसे कुछ
तुलसीदासजीने हनुमान्जीका ध्यान किया। उन्होंने	मॉॅंगनेका आग्रह किया। गोस्वामीजीको तबतक अपने
तुलसीदासजीको विनयके पद रचनेके लिये कहा।	इष्टदेव श्रीरामके दर्शन नहीं हुए थे और वे बोले—मुझे
परिणामत: गोस्वामीजीने गोपालमन्दिरमें रहकर 'विनय-	श्रीरामके दर्शन करा दो। प्रेत बोला—मैं इतना समर्थ
पत्रिका' की रचना की और उसे प्रभुके चरणोंमें समर्पित	होता तो प्रेतत्वसे अपनेको मुक्त कर लेता, किंतु तुमको
कर दिया। भगवान् श्रीरामने उसपर अपने हस्ताक्षर	एक युक्ति बतलाता हूँ। कर्णघण्टापर सायंकाल नित्य
करके तुलसीदासजीको निर्भय कर दिया।	रामकथा होती है, जिसमें हनुमान्जी भी आते हैं और
प्रह्लादघाटके निवासी पं० श्रीगंगारामजी काशिराजके	एक कोनेमें वृद्ध कोढ़ी ब्राह्मणके रूपमें उपस्थित रहते
राजज्योतिषी थे। मित्रताके कारण गोस्वामी तुलसीदासजी	हैं, ताकि उनको कोई छू या पहचान न सके।
उन दिनों वहीं रहते थे। एक बार काशिराजके यहाँ कोई	गोस्वामीजी असीघाट लौटे और उन्होंने कर्णघण्टा
घटना घटी, जिसके विषयमें गंगारामजीसे पूछा गया।	स्थित रामकथास्थलका पता लगाया। वहाँ प्रेतके कथनानुसार

कथामृतका पान किया और कथासमाप्तिके क्षणोंकी मित्रवर गंगारामजी ज्योतिषीसे मिले बारह सौ अत्यन्त उत्सुकतासे प्रतीक्षा करने लगे। उनको विश्वास स्वर्ण-मुद्राओंसे गोस्वामीजीने काशीमें बारह हनुमान्-हो गया कि प्रभू श्रीरामके दर्शन अब हो जायँगे। मन्दिरोंकी स्थापना करायी थी, जिनमें संकटमोचन मुख्य कथा समाप्त हुई और हनुमान्रूपी वे वृद्ध ब्राह्मण है। अन्य मन्दिरोंमें वृद्धकाल, राजमन्दिर, पंचगंगा, सबको प्रणामकर दक्षिण दिशाकी ओर चल पडे। कर्णघण्टा, नीचीबाग, मणिकर्णिकाघाट, हनुमान्घाट, तुलसीघाट, भदैनी, नरिया और हनुमान्फाटक स्थित तुलसीदासजी उनके पीछे हो लिये। काफी दूर पहुँचनेपर वे हनुमान्जीके श्रीचरणोंपर गिर पड़े और बोले—एक हनुमान्जीकी मूर्तियाँ उल्लेख्य हैं, जिनकी अपनी महिमा प्रेतने मुझे बताया है कि आप हनुमान्जी हैं और है। ये सभी जाग्रत् स्थान हैं। सभी मन्दिरोंमें नित्य, श्रीरामके दर्शन करानेमें सक्षम हैं। हनुमान्जी बोले—तुम विशेषरूपमें मंगलवार तथा शनिवारको भक्तजन भारी चित्रकूट पहुँचो, वहीं तुम्हें श्रीराम मिलेंगे। तुलसीदासजी संख्यामें पहुँचते हैं। सभी मूर्तियाँ दक्षिणाभिमुखी हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिवनगरी काशीमें तुलसीदासजीको

और कोई नहीं, संकटमोचन ही हैं।

चित्रकृट गये और वहाँ उनको श्रीरामके दर्शन हुए। इधर तुलसीदासजीको राम-मिलनका उपाय बताकर असीम संघर्षका सामना करना पड़ा, किंतु श्रीरामके प्रति हनुमान्जी अन्तर्धान होने लगे। गोस्वामीजीने उनसे अपना उनकी भक्ति तथा निष्ठामें तनिक भी कमी नहीं आयी और विग्रह वहाँ बनानेकी प्रार्थना की। हनुमान्जी यह सुनकर भूमिसात् हो गये। गोस्वामीजी रातभर उस स्थानकी मिट्टी

वस्तुतः हनुमान्जी उक्त रूपमें बैठे थे। गोस्वामीजीने

उन्होंने यहाँ रामभक्तिकी अमृतधारा बहाकर सबको धन्य और कृतकृत्य कर दिया। हम कभी उनसे उऋण नहीं हो खोदते रहे। अन्तमें उनको हनुमान्जीकी मूर्ति मिली, जिसे सकते और विश्वकी ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उनके उन्होंने वहीं वृक्षके तले स्थापितकर पूजन-अर्चन किया। यशको धूमिल कर सके। श्रीराम तथा हनुमान्जीके ऐसे तबसे यह क्रम अखण्डरूपसे चला आ रहा है। वह मूर्ति आदर्श अनन्य भक्त तुलसीदासजीको बारम्बार प्रणाम!

हनुमान्जीके द्वादशनाम और उनके पाठका माहात्म्य

हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो रामेष्टः उद्धिक्रमणश्चैव लक्ष्मणप्राणदाता

एवं

फाल्गुनसख:

द्वादश

राजद्वारे

सर्वभयं

प्रबोधे गह्वरे

नामानि च नास्ति

च

च

यात्राकाले रणे च भयं

दशग्रीवस्य

कपीन्द्रस्य

च

विजयी नास्ति

हनुमान्, अंजनीसून्, वायुपुत्र, महाबल (महाबलवान्), रामेष्ट (रामके प्यारे), फाल्गुन (अर्जुन)-के सहायक (रूपमें उनकी ध्वजामें निवास करनेवाले), पिंगाक्ष (पीली आँखोंवाले), अमितविक्रम (अनन्त पराक्रमशाली), उदिधक्रमण

कदाचन॥

महाबल: ।

दर्पहा ॥

पठेत्॥

महात्मनः।

पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः॥

सीताशोकविनाशनः।

यः

िभाग ९१

(समुद्रको लाँघ जानेवाले), सीता-शोक-विनाशन (सीताके शोकका नाश करनेवाले), लक्ष्मणप्राणदाता (लक्ष्मणको संजीवनी बूटी लाकर जिलानेवाले) तथा रावणदर्पहारी—महान् आत्मबलसे सम्पन्न कपिराज हनुमान्जीके इन बारह नामोंका जो मनुष्य सोते, जागते अथवा कहीं भी यात्रा करते समय पाठ करता है, उसे किसी प्रकारका भी भय नहीं होता और वह संग्राममें

विजयी होता है। राजद्वार एवं गहन वन (आदि) किसी भी स्थानमें उसे कभी किसी प्रकारका भय नहीं रहता।[आनन्दरामायण]

निखारिये अपने व्यक्तित्वको संख्या ७] निखारिये अपने व्यक्तित्वको (श्रीकृष्णचन्द्रजी टवाणी) किसी भी व्यक्तिकी पहचान उसके व्यक्तित्वसे वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते होती है। प्रभावशाली व्यक्तित्ववालोंकी ही समाज तथा क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥ **३-आत्मविश्वासी बनें** — आत्मविश्वासको सदा राष्ट्रमें प्रतिष्ठा होती है। यदि आप चाहते हैं कि आपका व्यक्तित्व विशाल, आकर्षक, सरल, शान्त एवं प्रभावशाली दृढ़ बनाये रखे। जिसके भीतर आत्मविश्वास होता है, हो तो निम्न सात बातोंपर विशेष ध्यान देना होगा— वह कठिन-से-कठिन परिस्थितिमें भी घबराता नहीं है। १-आचरण निष्कपट रखें — व्यक्तित्व-विकासके जिसने आत्मविश्वास खो दिया मानो उसने सर्वस्व खो लिये सबसे महत्त्वपूर्ण बात है अपने जीवनमें आचरणको दिया। आत्मविश्वासकी शक्तिसे ही व्यक्तित्व निखरता निष्कपट रखना। फुलोंमें जो स्थान स्गन्धका है, फलोंमें है। आत्मविश्वासी व्यक्तिके मुखमण्डलकी आभा कभी जो स्थान मिठासका है, भोजनमें जो स्थान स्वादका है, मिलन नहीं होती है, अपित चेहरा कान्तियुक्त रहता है। ठीक, वही स्थान जीवनमें आचरणका है। अपने **४-समयका आकलन करें**—मनुष्यके जीवनमें आचरणको ऐसा बनायें कि जहाँ भी जायँ आपका समय सबसे मूल्यवान् है। समयकी गति, स्वभाव और प्रवृत्तिको जो व्यक्ति पहचानकर कार्य करता है, उसको आदर-सत्कार हो। २-सद्गुणोंको अपनायें—भड़कीले अथवा कीमती ही सफलता मिलती है। जो व्यक्ति समयपर उचित निर्णय नहीं ले सकते हैं, उनकी बादमें असफलता कपड़े पहननेसे कभी व्यक्तित्व आकर्षक नहीं होता है। अधिक आभूषणोंके श्रृंगार करनेसे भी व्यक्तित्व नहीं निश्चित होती है। समयका सदुपयोग करनेवाले व्यक्ति निखरता, निखरता है केवल चरित्रसे। चरित्रको उसके ही ऊँचाईके शिखरपर पहुँचते हैं। आज हर मनुष्य गुण ही सजाते, सँवारते हैं। गुण ही व्यक्तिको महान् स्वयंसे अधिक दूसरोंके बारेमें सोचता है। किसी दूसरेके बनाकर समाज एवं राष्ट्रमें प्रतिष्ठित करते हैं। गुणहीन बारेमें सोचकर अपना अमूल्य समय नहीं गँवाना चाहिये। अपने कार्यको निर्धारित समयमें पूर्ण करनेवाले व्यक्ति आदरके पात्र नहीं होते हैं। जबकि गुणवान् व्यक्ति सर्वत्र आदर और यशके पात्र होते हैं। व्यक्तिके व्यक्ति ही प्रतिष्ठित होते हैं। सात्त्विक गुण ही उसके व्यक्तित्वकी कसौटी होते हैं, ५-दूसरोंके प्रति स्नेह व सहानुभूति रखें— क्योंकि सात्त्विक गुण ही व्यक्तिकी वाणीमें विनम्रता, दूसरोंके प्रति आपके हृदयमें स्नेह और सहानुभूति होनी व्यवहारमें सरलता और विचारोंमें शुचिता लाते हैं। चाहिए। जब आप किसीको प्यार देंगे तो दूसरा भी संस्कृतमें एक सूक्ति है, जिसका तात्पर्य है कि आपपर प्यार लुटायेगा। दूसरोंको अपमानित न करें और मनुष्यको न तो केयूर (बाजूबन्द), न चन्द्रमाके समान न ही कभी दूसरोंकी शिकायत करें। याद रखें कि उज्ज्वल हार, न स्नान, न उबटन, न फूल और न सजाये अपमानके बदलेमें अपमान ही मिलता है। दूसरोंमें जो भी अच्छे गुण हैं, उनकी ईमानदारीके साथ दिल हुए बाल ही सुशोभित कर सकते हैं, वह यदि संस्कारसम्पन्न वाणी धारण करे तो एकमात्र वही उसकी खोलकर प्रशंसा करें। झुठी प्रशंसा कदापि न करें। यदि शोभा बढा सकती है, इसके अतिरिक्त और जितने आप किसीकी प्रशंसा नहीं कर सकते तो कम-से-कम आभूषण हैं, वे तो नष्ट हो जाते हैं, सच्चा भूषण तो दूसरोंकी निंदा कभी भी न करें। किसीकी निंदा करके वाणी ही है-आपको कभी भी किसी प्रकारका लाभ नहीं मिल सकता, उलटे आप उसकी नजरोंमें गिर सकते हैं। अपने केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्वला

न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।

स्वभावसे सदैव दूसरोंके मनमें अपने प्रति तीव्र आकर्षणका

भाव उत्पन्न करनेका प्रयास करें। दूसरोंको सच्ची और शारीरिक दुर्बल व्यक्ति सदा रोगी तथा आलसी मुसकान प्रदान करें। प्रत्येक व्यक्ति अपनी कीर्ति, प्रशंसा रहता है। अच्छे व्यक्तित्ववाले कभी नशीली वस्तुओं

करें। जिसके जीवनमें न सन्तोष है न शान्ति, वह जीवन भी क्या जीवन है ? दुसरा उन्नति कर रहा है तो उससे प्रेरणा लेकर उन्नति करना चाहिए। दूसरेने उन्नति कैसे

की-इसका विश्लेषण करना चाहिए तथा उससे शिक्षा

लेनी चाहिये।

જ઼

ૹ

ß

÷

જ઼

÷

÷

÷

░

ૹ

अत्यधिक चाहता है। यदि आप दूसरोंकी कीर्ति बढ़ायेंगे

तो वे भी आपकी कीर्ति अवश्य ही बढ़ायेंगे। दूसरोंके

महत्त्वको स्वीकारें तथा उनकी भावनाओंका आदर करें।

दूसरोंके द्वारा किये छोटे-से-छोटे कामकी भी प्रशंसा

६-अपनी गलती स्वीकार करें - वही व्यक्ति

अत्यधिक लोकप्रिय, प्रशंसनीय होता है, जो अपनी गलतीको स्वीकार करता है। यदि आपसे कोई भूल हुई है तो उसे तुरंत स्वीकार करें। आप हर सप्ताह अपनी प्रगतिका मूल्यांकन करें, स्वयं ही मालूम करें कि आपने

संकल्प करें। ७-कुव्यसनों एवं दुष्प्रवृत्तियोंको त्यागें — वही व्यक्ति महान् होता है, जिसमें कोई कुव्यसन या कुप्रवृत्ति नहीं होती है। कुव्यसनोंसे शारीरिक दुर्बलता आती है

है अनन्त नाम वाला,

वेदान्त कहे ब्रह्म तू,

कोटि-कोटि नाम तेरे,

तू,

वेद कहें देव है

कब, कौन-सी गलती की और भविष्यमें उसे न करनेका

(श्रीमती डॉ० उर्मिलाजी किशोर)

कोटि-कोटि नाम तेरे

हो सकते हैं।

कोटि-कोटि नाम तेरे, कौन-सा पुकारूँ। कौन-सा विचारूँ॥ इन्द्र हृदय धारूँ, ब्रह्म ही प्रचारूँ। सांख्य कहे पुरुष है तू, प्रकृति में निहारूँ,

कौन-सा पुकारूँ॥ तू विधाता सृष्टि स्त्रष्टा, सृष्टि को निहारूँ, जगत् पालक विष्णु है तू, विष्णु कह पुकारूँ।

या कहुँ कल्याणप्रद शिव, नाम मैं उचारूँ, कोटि-कोटि नाम तेरे, कौन-सा पुकारूँ॥

सुन रहा हर नाम से, जिस नाम से पुकारूँ। है अनन्त नाम वाला, कौन-सा विचारूँ,

÷ रम रहा है विश्व भर में, राम मैं विचारूँ, ÷ है सहस्र नाम के सम, राम नाम धारूँ। ÷ है राम नाम सत्य-सार, राम ही पुकारूँ,

कोटि-कोटि नाम तेरे, कौन-सा पुकारूँ॥ है सदा आनन्दमय तू, वही उर सँवारूँ,

÷ ÷ ÷

ૹ

ૹ૽ૺ

÷

भाग ९१

जैसे धूम्रपान, जर्दा, गुटका, मद्यपान, मादक द्रव्य पदार्थ

आदिका उपयोग नहीं करते। मद्यपान और धुम्रपान-

जैसी नशीली वस्तुओंका उपयोग आजकल फैशन हो

गया है और इसमें अपनी श्रेष्ठता, सभ्यता समझना

महान् मूर्खता है। यह तो अपने पैरों आप कुल्हाड़ी

मारनेके समान है। जो व्यक्ति इनसे दूर रहता है, वह ही सदा स्वस्थ रह सकता है तथा स्वस्थ व्यक्ति ही

जरा सोचिये, जिस व्यक्तिने नशीली वस्तुओंको

अपना रखा हो, दुष्प्रवृत्तियों, जुआ आदिका शिकार

हो चुका हो, उसका व्यक्तित्त्व कैसे निखर सकता है?

मादक द्रव्योंका सेवन करनेके लिये जो प्रेरित करता

है, वे मित्र नहीं परम शत्रु हैं। भगवान्ने हमें मूल्यवान्

जीवन और अनमोल शरीर इसलिए नहीं दिया कि

हम जानबूझकर उसे मृत्युके हवाले कर दें। यदि आप

अपना व्यक्तित्व आदर्श, अनुकरणीय एवं महान् बनाना

चाहते हैं तो कभी गलत राह नहीं अपनायें, सदा सही

मार्गपर चलकर ही आप महान् व्यक्तित्वके अधिकारी

हर हृदय में प्रेम तू है, प्रेम मन सँवारूँ।

सृष्टि का सौन्दर्य तू, सौन्दर्य में निहारूँ,

कोटि-कोटि नाम तेरे, कौन-सा पुकारूँ॥

निरंतर प्रगति करता है।

જ઼

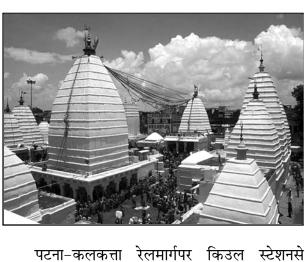
Hinduisक्त्य अंदर्श htकुड://वीडर्व कुमुर्लि haक्के कि को शि ति स्थान स्थान कि कि कि स्थान स्थान कि स्थान स्थान

ज्योतिर्लिंग-परिचय **द्वादश ज्योतिर्लिंगों के अर्चा-विग्रह**[गताङ्क ६ पृ०-सं० २८ से आगे]

द्वादश ज्योतिर्लिगोंके अर्चा-विग्रह

(९) श्रीवैद्यनाथ

संख्या ७]



दक्षिण-पूर्व १००० किलोमीटरपर देवघर है, इसे ही वैद्यनाथधाम कहते हैं। यहींपर वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिंग है। इसकी कथा इस प्रकार है—रावणने अतुल बल-सामर्थ्यकी प्राप्तिकी इच्छासे भगवान् शिवकी आराधना प्रारम्भ की। वह ग्रीष्मकालमें पंचाग्निसेवन करता था, जाड़ेमें पानीमें रहता था एवं वर्षा-ऋतुमें खुले मैदानमें

रहकर तप करता था। बहुत कालतक इस उग्र तपसे भी जब शिवजीने प्रत्यक्ष दर्शन नहीं दिया, तब उसने पार्थिव लिंगकी स्थापना की और उसीके पास गड्डा खोदकर अग्नि प्रज्वलित की। वैदिक विधानसे उस अग्निके सामने उसने शिवजीकी विधिवत् पूजा की। रावण अपने सिरको काट-काटकर चढाने लगा।

खोदकर अग्नि प्रज्वलित की। वैदिक विधानसे उस अग्निके सामने उसने शिवजीकी विधिवत् पूजा की। रावण अपने सिरको काट-काटकर चढ़ाने लगा। शिवजीकी कृपासे उसका कटा हुआ सिर पुनः जुड़ जाता था। इस प्रकार उसने नौ बार सिर काटकर चढ़ाया। जब दसवीं बार वह सिर चढ़ानेको उद्यत हुआ, तब भगवान् शिव प्रकट हो गये। भगवान्

शिवने रावणसे कहा—'मैं तुम्हारी भक्तिसे प्रसन्न हूँ,

तुम अपना अभीष्ट वर माँग लो।' रावणने उनसे अतुल बल-सामर्थ्यके लिये प्रार्थना की। भगवान् शिवने

एक शिवलिंग देते हुए कहा—'रावण! यदि तुम इसे मार्गमें कहीं भी पृथिवीपर रख दोगे तो यह वहीं अचल होकर स्थित हो जायगा। अत: इसे सावधानीसे ले जाना।' रावण शिवलिंगको लेकर चलने लगा। शिवजीकी मायासे मार्गमें उसे लघुशंकाकी इच्छा हुई, जिसे वह रोक न सका। उसने पासमें खड़े हुए एक

उसे वह वर दे दिया। रावणने उनसे लंका चलनेके लिये निवेदन किया। तब भगवान शिवने उसके हाथमें

गोपकुमारको देखा और निवेदन करके वह शिवलिंग उसीके हाथमें दे दिया। वह गोप उस शिवलिंगके भारको सहन न कर सका और उसने वहीं पृथिवीपर उसे रख दिया। धरतीपर पड़ते ही वह शिवलिंग अचल हो गया। तत्पश्चात् रावण जब उसे उठाने

ज्योतिर्तिंग के नामसे जगत्में प्रसिद्ध हो गया। इस घटनाको जानकर ब्रह्मा, इन्द्रादि समस्त देवगण वहाँ उपस्थित हो गये। देवगणने भगवान् शंकरका प्रत्यक्ष दर्शन किया। देवताओंने उनकी प्रतिष्ठा की। अन्तमें देवगण उन 'वैद्यनाथ महादेव' की स्तुति करके

अपने-अपने भवनको चले गये। वैद्यनाथ महादेवकी

पूजा-अर्चासे समस्त दु:खोंका शमन होता है और

लगा, तब वह शिवलिंग उठ न सका। हताश होकर

रावण घर लौटा। यही शिवलिंग 'वैद्यनाथेश्वर

सुखोंकी प्राप्ति होती है। यह दिव्य शिवलिंग मुक्तिप्रदायक है। यहाँ दूर-दूरसे जल लाकर चढ़ानेका अत्यधिक माहात्म्य वर्णित एवं लोकविश्रुत है। श्रद्धालुजन कन्धेपर काँवर लिये यहाँकी यात्रा सम्पन्न करते हैं।* [क्रमशः]

* 'परल्यां वैद्यनाथं च' इस वचनके अनुसार कुछ विद्वानोंका यह निश्चित मत है कि महाराष्ट्र राज्यके अन्तर्गत बीड जिलेमें परलीग्रामका शिवलिंग ही वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग है।

स्मृति ही है अन्तिम समयकी साधना (डॉ० श्रीभीकमचन्दजी प्रजापति) शरीरका नियम—स्थल शरीर जन्मता है, बढता होता है। स्वप्नमें भी आपकी यह स्मृति यथावत्

है, बदलता है, बिगड़ता है और अन्तमें मरता है—यह बनी रहती है।

स्थुल शरीरका अटल नियम है।

स्मृतिका स्वरूप—अन्तिम समयका कोई निश्चित

समय नहीं है। भगवान् और संसारके बारेमें जो सही बातें

बन्द हो जाना—शरीर और इन्द्रियोंसे आप

जितनी भी साधनाएँ करते हैं, जैसे—पूजा, पाठ, भजन,

कीर्तन, जप, तप, ध्यान, मन्दिरमें जाकर भगवद् विग्रहके

दर्शन, तीर्थ, व्रत, दान, हवन, यज्ञ आदि ये सब उस दिन

बन्द हो जायँगी, जिस दिन आपका शरीर वृद्ध, असमर्थ

एवं बीमार हो जायगा। इच्छा होते हुए भी आप इन साधनाओंको नहीं कर पायेंगे।

स्मृति-मृत्युके समय शरीरकी सभी शक्तियाँ

लगभग शून्य हो जाती हैं। उस समयमें की जानेवाली साधनाका नाम है—स्मृति। स्मृतिके अनुसार ही आपको आगेकी योनि मिलेगी। श्रीमद्भगवद्गीतामें भगवान्की

वाणी है-यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।

तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः॥ (218)

अर्थात् हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! मनुष्य अन्तकालमें जिस-जिस भी भावका स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता

है, उस (अन्तकालके) भावसे सदा भावित होता हुआ उस-उसको ही प्राप्त होता है अर्थात् उस योनिमें ही

चला जाता है। स्मृतिका आशय—स्मृतिका अर्थ है—सही बात

हर समय, हर स्थानपर, हर अवस्थामें याद रहना

और यादके अनुसार ही आचरण एवं व्यवहार होना।

उदाहरणके लिये आपके परिवारमें चार महिलाएँ हैं-

आपकी माँ, आपकी पत्नी, आपकी बहन, आपकी

बेटी। आपको सदैव यह बात याद रहती है कि यह मेरी माँ है, यह मेरी पत्नी है, यह मेरी बहन है,

यह मेरी बेटी है। इस यादके अनुसार माँके साथ माँ-जैसा, पत्नीके साथ पत्नी-जैसा, बहनके साथ

बहन-जैसा, बेटीके साथ बेटी-जैसा व्यवहार स्वत:

हैं, उनको एक क्रमसे (सबसे पहले सबसे ऊँची, फिर उससे कम ऊँची, फिर उससे भी कम ऊँची आदि-

आदि) लिखी जा रही है। आपको जिस स्तरकी बातकी स्मृति रहेगी, उसी स्तरका प्रभाव आपके जीवनपर स्वत:

होगा अर्थात् वैसा ही आपका आचरण एवं व्यवहार होगा। यदि स्मृति एवं आचरणमें अन्तर है तो यह माना जायगा कि आपकी स्मृति कच्ची एवं कमजोर है अथवा

वह केवल बुद्धिके स्तरपर है। सही बातें -- सही बातोंका विवरण इस प्रकार

है— (१) केवल भगवान् हैं—इस जगत्में केवल भगवान् हैं और विभिन्न रूपोंमें वे अपनी लीला कर रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीतामें भगवान्की वाणी है—

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मिय सर्विमिदं प्रोतं सूत्रे मिणगणा इव॥ अर्थात् हे धनंजय! मेरे सिवाय (इस जगत्का)

दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। जैसे सूतकी मणियाँ स्तके धागेमें पिरोयी हुई होती हैं, ऐसे ही यह सम्पूर्ण जगत् मुझमें ही ओतप्रोत है।

इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि आपको हर समय भगवान् याद रहेंगे। आपके जीवनमें मोह, ममता, कामना, राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि विकार नहीं रहेंगे। सबके प्रति सद्भाव एवं यथाशक्ति सहयोग रहेगा। जीवन

भगवत्प्रेमके अलौकिक आनन्दसे भरा रहेगा। (२) प्रेमसे दिख जाना—इस जगतुमें विभिन्न रूपोंमें केवल भगवान् हैं। उनको प्रेम देनेसे उनके उस

रूपके दर्शन हो जाते हैं, जिसका वर्णन ग्रन्थोंमें आया है। श्रीरामचरितमानसमें आया है-

िभाग ९१

(७।७)

संख्या ७] स्मृति ही है अन्तिम	। समयकी साधना २९
******************************	<u>*********************************</u>
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥	तीनों चीजें इसलिये दी हैं कि आप इन तीनोंके द्वारा
(१।१८५।५)	भगवान्को प्रेम (प्रसन्नता) देकर उनके महान् प्रेमी भक्त
अर्थात् [भगवान् शंकर कहते हैं—] मैं तो यह	बन जायँ—कैसे ? मेरे भगवान्को प्रसन्नता मिलेगी—इस
जानता हूँ कि भगवान् सब जगह समान रूपसे व्यापक	भावनासे शरीरको भगवान्का मेहमान मानकर सेवा करें।
हैं, प्रेमसे वे प्रकट हो जाते हैं।	स्वजनोंको भगवान्के स्वरूप मानकर इनको सुख,
इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि आपके मनमें	सुविधा, सम्मान, प्रेम, प्रसन्नता दें। सामान-सम्पत्तिको
सबको सुख, सुविधा, प्रेम, प्रसन्नता देनेकी भावना	भगवान्की धरोहर मानकर सँभालकर रखें और इसका
रहेगी। अपने स्वजनोंको भगवान्का रूप मानकर आप	सदुपयोग करें। सभी कार्योंको भगवान्के कार्य मानकर
उनकी भरपूर सेवा करेंगे।	पूरी सावधानीसे करें।
(३) जगत् है ही नहीं —जगत्का अस्तित्व नहीं	इस स्मृतिसे आपका शरीर स्वस्थ एवं नीरोग
है। जगत् प्रतिक्षण नष्ट हो रहा है। जिस प्रकार स्वप्नमें	रहेगा, आपके परिवारमें शान्ति रहेगी। आप भगवान्के
सब कुछ सच्चा दिखायी देता है, लेकिन जागते ही वह	प्रेमी भक्त भी बन जायँगे।
मिथ्या हो जाता है, इसी प्रकार आँखोंसे साफ-साफ	(६) कुछ नहीं करता —इस जगत्का कोई भी
दिखायी देनेवाला जगत् बुद्धिसे देखनेपर मिथ्या लगता	मनुष्य कुछ भी नहीं करता है, सबको सब कुछ भगवान्
है। श्रीरामचरितमानसमें आया है—	करवाते हैं, मनुष्य एक कठपुतली है।
सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ।	श्रीरामचरितमानसमें आया है—
जागें लाभु न हानि कुछ तिमि प्रपंच जियँ जोइ॥	बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ।
(२।९२)	जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ॥
अर्थात् जैसे स्वप्नमें राजा भिखारी हो जाय या	(१।१२४क)
कंगाल स्वर्गका स्वामी इन्द्र हो जाय तो जागनेपर लाभ	उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं॥
या हानि कुछ भी नहीं है; वैसे ही इस दृश्य-प्रपंचको	(४।११।७)
हृदयसे देखना चाहिये।	अर्थात् तब महादेवजीने हँसकर कहा—न कोई
इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि सांसारिक	ज्ञानी है न मूर्ख। श्रीरघुनाथजी जब जिसको जैसा करते
अनुकूलता–प्रतिकूलता, मान–अपमान, हानि–लाभका	हैं, वह उसी क्षण वैसा ही हो जाता है।
आपपर कोई असर नहीं होगा। आप सम एवं शान्त	हे उमा! स्वामी श्रीरामजी सबको कठपुतलीकी
रहेंगे।	तरह नचाते हैं।
(४) भगवान् मालिक हैं —इस जगत्को बनाने,	इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि आपको दु:ख
चलाने, इसपर शासन और नियन्त्रण करनेवाले भगवान्	देनेवाले, आपकी निन्दा, आलोचना, अपमान करनेवाले,
हैं। वे ही इसके मालिक हैं, सब कुछ उनका है। भगवान्ने	बार-बार समझानेपर भी आपकी बात न माननेवाले
इस जगत्की केवल तीन चीजें आपको दी हैं—शरीर,	परिवारजनपर आपको क्रोध नहीं आयेगा। आपको सुख,
स्वजन (पति, पत्नी, संतान, भाई, बहन आदि), सामान-	सुविधा, सम्मान देनेवाले, आपकी सेवा करनेवाले
सम्पत्ति। इन तीनोंके मालिक भी भगवान् हैं।	परिवारजनमें आपका राग (मोह) नहीं होगा। आप
इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि इनके न रहनेपर	राग-द्वेषसे मुक्त हो जायँगे।
आपको दु:ख नहीं होगा। इनमें आपका मोह नहीं होगा।	(७) भगवान्की महिमा —भगवान् समर्थ हैं,
(५) प्रेमी भक्त बनना —भगवान्ने आपको ये	सदैव हैं, सर्वत्र हैं, सर्वज्ञ हैं, सबमें हैं, सबके हैं,

भाग ९१ ******************* परम सृहद हैं। पतितपावन, करुणासागर हैं, क्षमासिन्ध् बनाते हैं भगवान्। केवल असाधारण परिस्थितियोंको हैं, दीनबन्धु हैं, दीनानाथ हैं, मेरे सच्चे माता-पिता छोड़कर प्रारब्धमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। आपके पास न रुपये हैं न परिवारजन, फिर भी यदि आपके हैं । इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि आप निश्चिन्त, प्रारब्धमें उच्च कोटिकी सुख-सामग्री और सुख-सुविधाएँ हैं तो वे आपको मिलेंगी। ऐसी स्थितिमें निर्भय, निडर, निर्मल, निर्विकार, निर्मम, निष्काम, निर्वेर और निरभिमान हो जायँगे। रुपये दूसरे व्यक्तिके लगेंगे, दूसरा व्यक्ति आपको ये (८) विधान मंगलकारी—अपनी तरफसे बुद्धि दोनों चीजें देगा। संतवाणी है—दाने-दानेपर लिखा और विवेककी सीमातक पुरी सावधानी रखनेके बाद भी है खानेवालेका नाम। अपने-आप अथवा किसी व्यक्तिके माध्यमसे आपके इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि आप किसीके जीवनमें जिस प्रतिकृल परिस्थितिका निर्माण हो जाता है, साथ किसी भी प्रकारकी बुराई नहीं करेंगे, आपको यह उसका नाम है—भगवान्का विधान। अपनी तरफसे चिन्ता नहीं रहेगी कि रुपये अथवा परिवारजन न रहे तो परिवारजनोंको भगवान्के स्वरूप या मेहमान मानकर मुझे भोजन, वस्त्र, सुविधाएँ कौन देगा। आप अपने कार्यको भगवान्का कार्य मानकर पूरी सावधानीसे सद्भाव रखने, स्नेह, सेवा और प्रेमका व्यवहार करनेके बाद भी यदि कोई परिवारजन आपसे नाराज रहता है करेंगे। अथवा आपके साथ प्रतिकूल व्यवहार करता है-वह (१०) नुकसान नहीं करता—नुकसान दो भी भगवान्का विधान है। भगवान्के प्रत्येक विधानमें प्रकारका होता है-शारीरिक नुकसान, अर्थात् शरीरको चोट पहुँचाना; आर्थिक नुकसान, अर्थात् रुपये, सामान, आपका हित निहित होता है। सम्पत्तिका नुकसान। आपका कोई भी परिवारजन, इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि आपको सम्बन्धी, मित्र, सहयोगी, अधिकारी आपका नुकसान प्रतिकूल परिस्थितिके आनेका भय नहीं लगेगा और प्रतिकूल परिस्थिति आने एवं परिवारजनोंद्वारा प्रतिकूल नहीं करता है, वह आपका नुकसान कर ही व्यवहार करनेपर लेशमात्र भी दु:ख नहीं होगा, प्रत्युत नहीं सकता। आपको होनेवाले नुकसानके नौ कारण आप इस आधारपर शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे कि इसमें मेरा हैं—आपके कर्म, आपका भाग्य, आपका प्रारब्ध, आपका हित छिपा हुआ है। भगवान् जो करते-करवाते हैं, खराब समय, आपकी असावधानी, होनहार, देवदोष-अच्छा ही करते हैं। पितृदोष, भगवान्का विधान, स्वयं भगवान्। कभी (९) प्रारब्धसे मिलना—आपके शरीरको दो नुकसान अपने-आप हो जाता है, कभी परिवारजन उसमें तरहकी चीजें मिलती हैं-सुख-सामग्री और सुख-माध्यम बन जाते हैं। श्रीरामचरितमानसमें आया है— सुविधाएँ। खाने-पीनेकी सभी चीजोंको सुख-सामग्री करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।। कहते हैं। जो चीजें शरीरको ऊपरसे मिलती हैं, (२।२१९।४) जैसे—विशाल मकान, कीमती जेवर एवं कपड़े, महँगी अर्थात् भगवान्ने विश्वमें कर्मको ही प्रधान कर रखा कारें, हवाई यात्राएँ आदि-इनको सुख-सुविधाएँ कहते है। जो जैसा करता है, वह वैसा ही फल भोगता है। इस स्मृतिका प्रभाव यह होगा कि नुकसान हैं। ये दोनों चीजें न तो रुपयोंसे मिलती हैं और न परिवारजनोंसे। रुपये और परिवारजन तो इनके मिलनेमें करनेवाले परिवारजन, मित्र आदिपर आपको क्रोध नहीं केवल माध्यम बनते हैं। ये चीजें पूर्णतया आपके आयेगा, आप इसके साथ लडाई-झगडा नहीं करेंगे। प्रारब्ध (भाग्य)-से मिलती हैं। प्रारब्ध बन जाता है अपने नुकसानके लिये आप किसी दूसरे व्यक्तिको दोषी _बह्मांndमृाङ्गण ब्रीहट्क्र्स्न् Sarx्तन क्षापक्षद्वंभंdsद्वक्राद्वीharrenaमीनेभADE WITH LOVE BY Avinash/Sha

संख्या ७] स्मृति ही है अन्तिम	

(११) दुःख नहीं देता—भगवान्ने आपको	सलाह देना, समझाना, अच्छी-अच्छी बातें बताना,
इतना जोरदार बनाया है कि इस दुनियाका कोई भी व्यक्ति,	उनसे अपनी जरूरतकी चीजें माँगना, लक्ष्य बनाना
कोई भी शक्ति, कोई भी परिस्थिति आपको दुखी,	आदि 'कामना' नहीं है। किसी भी विचारके साथ
चिन्तित, अशान्त नहीं बना सकती। आपके स्वजन जब	'ही' लगानेसे वह 'कामना' बन जाता है, जैसे—
आपकी निन्दा, आलोचना, अपमान, तिरस्कार, बदनामी,	परिवारजन मेरी बात मानें ही, वे मुझे सम्मान दें ही,
चुगली करते हैं, आपका शारीरिक एवं आर्थिक नुकसान	मेरा अपमान करें ही नहीं, मुझे लाभ हो ही, आदि।
करते हैं तो आपको दुःख होता है। यह दुःख आपके	यह आपके जीवनका अनुभव है कि कामना करना
स्वजन नहीं देते हैं। इस दु:खका मूल कारण आपकी	आपके वशकी बात है, लेकिन उसको पूरी करना
अपनी निम्नलिखित पाँच भूलें हैं—पराधीनता; शरीर,	आपके वशकी बात नहीं है। यदि यह आपके वशकी
स्वजन, सामान-सम्पत्तिमें आपका मोह;'शरीर'को'मैं'	बात होती तो आप अपनी सभी कामनाएँ पूरी कर
मान लेना; अपने इस सत्य स्वरूपको भूल जाना कि 'मैं'	लेते। कामना पूरी न होनेसे दुःख, चिन्ता, अशान्ति,
भगवान्का अंश हूँ; भगवान्में आपका कमजोर विश्वास।	तनाव, डिप्रेशन आदि सभी मानसिक रोग पैदा हो
श्रीरामचरितमानसमें आया है—	जाते हैं, क्रोध भी आता है।
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं॥	इस स्मृतिका यह प्रभाव होगा कि आप अपने
(१।१०२।५)	जीवनमें किसी भी प्रकारकी कामना नहीं रखेंगे।
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥	सद्भावना रखेंगे और कर्तव्यका पालन करेंगे।
(७।१२१।२९)	(१४) जो देंगे, वही मिलेगा —आप जमीनमें
अर्थात् विधाताने जगत्में स्त्री-जातिको क्यों पैदा	एक दाना डालते हैं, बदलेमें सैकड़ों दाने वापस
किया ? क्योंकि पराधीनको सपनेमें भी सुख नहीं मिलता।	मिलते हैं। इस संसारका यह अटल सिद्धान्त है कि
सब रोगोंकी जड़ मोह है। उन व्याधियोंसे फिर	आप समाज एवं संसारके प्रति हितभावना रखेंगे तो
और बहुत-से शूल उत्पन्न होते हैं।	समाज एवं संसार आपके प्रति हितकी भावना रखेंगे।
इस स्मृतिका यह प्रभाव होगा कि दु:ख देते	यदि आप परिवारजनों, मित्रों, सम्बन्धियोंको सुख,
हुए दिखनेवाले परिवारजनपर आपको क्रोध नहीं आयेगा,	सुविधा, सम्मान, प्रेम, प्रसन्नता देंगे तो वे भी आपको
उसके साथ लड़ाई-झगड़ा नहीं होगा। आप अपनी	सुख-सुविधा, सम्मान, प्रेम और प्रसन्नता देंगे। यदि
भूलोंको सुधारनेका प्रयास करेंगे।	आप उनको दुःख देंगे, उनका अपमान करेंगे तो वे
(१२) कर्म-सिद्धान्त— भगवान्ने आपको कर्म	भी आपका कई गुना ज्यादा अपमान करेंगे।
करनेकी शक्ति एवं स्वाधीनता दी है। आप शुभ कर्म	इस स्मृतिका यह प्रभाव होगा कि आप सबके
भी कर सकते हैं और अशुभ कर्म भी कर सकते	प्रति हितभावना रखेंगे और स्वजनोंको भरपूर सुख,
हैं। आपको कर्मोंका फल भी मिलेगा। शुभ कर्मोंका	सम्मान एवं प्रेम देंगे।
फल है अनुकूल परिस्थिति और अशुभ कर्मोंका फल	प्रभुकी स्मृति —यदि आपको अपने दैनिक
है प्रतिकूल परिस्थिति।	व्यवहारिक जीवनमें इन बातोंकी स्मृति रहेगी तो
इस स्मृतिका यह प्रभाव होगा कि आप अपने	आप अपने जीवनमें शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे। अन्तिम
जीवनमें कभी भी अशुभ कर्म नहीं करेंगे।	समयमें आपको भगवान्की स्मृति रहेगी। आपका
(१३) कामना न रखना —परिवारजनोंको	_ `` ` -

संतचरित— नाथपरम्पराके सिद्धसंत योगिराज गम्भीरनाथ (श्रीरामलालजी श्रीवास्तव)

योगिराज गम्भीरनाथ सिद्धपुरुष थे। उन्होंने हठयोग, लययोग और राजयोगके क्षेत्रमें आत्मसिद्धि प्राप्त की

थी। नाथयोग-परम्परामें इधर सात-आठ सौ वर्षोंमें उनके-जैसे योगीका दर्शन नहीं हुआ था। ऋद्भियों और सिद्धियोंने उनके चरणस्पर्शको अपना परम सौभाग्य समझा। वे शान्ति और गम्भीरताके उज्ज्वलतम रूप थे। बड़े-बड़े संतों और महात्माओंने उनके चरणोंमें अपनी श्रद्धा समर्पितकर आत्ममोक्षका विधान प्राप्त किया। हिमालयसे कन्याकुमारी अन्तरीपतकके भूमिभागमें बीसवीं शताब्दीके पूर्वार्धमें इतने बड़े योगीका दर्शन अन्यत्र दुर्लभ था। उन्होंने मानवताको योगशक्तिसे सम्पन्न किया। उन्होंने योगब्रह्म—शिवका साक्षात्कार-लाभ किया। भारतके प्राय: समस्त तीर्थोंमें परिभ्रमणकर योगिराज गम्भीरनाथने उनकी महिमामें विशेष अभिवृद्धि की। माना, योगिराजका प्राकट्य उस समय हुआ था, जब भारत विदेशी शक्तिकी अधीनतामें था; पर गम्भीरनाथजीके लिये तो भौतिक जगत्की पराधीनताका कोई महत्त्व ही नहीं था; वे तो जागतिक प्रपंचसे अतीत थे। वे रहस्यपूर्ण ढंगसे आध्यात्मिक क्रान्तिका सृजन कर रहे थे। उनके योग-उदयकालमें विदेशी शासनको निकाल बाहर करनेके

लिये बंगाल तथा अन्य प्रान्तोंमें सशस्त्र राजक्रान्तिकी योजना कार्यरूपमें परिणत हो रही थी। महात्मा गम्भीरनाथने राजनीतिक क्रान्तिकारियोंकी आध्यात्मिक पिपासाकी तृप्ति की। अगणित बंगीय युवकोंने उनके पथ-प्रदर्शनमें गम्भीर, अखण्ड और शाश्वत स्वतन्त्रताज्योति—

आत्मशान्तिका दर्शन किया। महात्मा गम्भीरनाथने सिद्ध योगपीठ-गुरु गोरखनाथकी तपोभूमि गोरखपुरको अपनी तपस्यासे अक्षय समृद्धि प्रदान की। वे निरन्तर योगस्थ रहते थे।

(६।४७)

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।

वे श्रीमद्भगवद्गीताकी भागवती विज्ञप्ति—

श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः॥

'सम्पूर्ण योगियोंमें भी जो श्रद्धावान् योगी मेरेमें लगे हुए अन्तरात्मासे मुझे ही निरन्तर भजता है, वह मुझे

परमश्रेष्ठ मान्य है।'—में अटल विश्वास रखते थे। योगिराज गम्भीरनाथ अपने समयके सर्वश्रेष्ठ योगी थे; वे धर्मतत्त्वके मर्मज्ञ और असाधारण आत्मज्ञ थे। उनके समकालीन महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामीकी मान्यता थी कि 'हिमालयके देशमें—भारतदेशमें उनके-जैसा योगी कोई दूसरा नहीं है।' महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी

निरपेक्ष और निष्पक्ष द्रष्टा थे। उनका योग श्रीगोरखनाथकी योगपद्धतिसे परिपुष्ट था। महात्मा गम्भीरनाथने गुरु गोरखनाथकी योग-साधनाका बीसवीं शताब्दीमें पूर्ण प्रतिनिधित्व किया। योगिराज गम्भीरनाथने योग और

उनकी परम योगविभृतिसे बहुत प्रभावित थे। महात्मा

गम्भीरनाथकी साधना शैव-दर्शनके सिद्धान्तसे प्राणान्वित थी। वे शैव योगी होते हुए भी शुद्ध सच्चिदानन्द तत्त्वके

ज्ञानका समन्वय किया। महात्मा गम्भीरनाथके पूर्वाश्रमके सम्बन्धमें कुछ भी निश्चितरूपसे कहना या लिखना आसान नहीं है।

उनका जन्म विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दीके चौथे चरणमें काश्मीर प्रदेशके एक गाँवके समृद्ध परिवारमें हुआ था।

प्तंख्या ७] नाथपरम्पराके सिद्धसंव	त योगिराज गम्भीरनाथ ३३
************************************	**************************************
उनकी शिक्षा-दीक्षा साधारण ढंगकी थी। बचपनसे ही	गोपालनाथने धीरे-धीरे उनको मठके उपास्यकी पूजा-
उनके जीवनमें योगाभ्यासके साम्राज्यमें प्रवेश करनेके	अर्चामें नियुक्त करना आरम्भ किया। श्रीगम्भीरनाथकी
पहले विषय-सुखकी सुविधा उपलब्ध थी; पर उनका	उपस्थितिसे मठमें शान्ति साकार हो उठी। उन्हें गुरुने
ध्यान उसकी ओर तनिक भी नहीं था। पूर्वाश्रमके	प्रसन्न होकर पुजारीका कार्यभार सौंपा। इस प्रकार
सम्बन्धमें पूछनेपर वे कहा करते थे—'प्रपंचसे क्या	श्रीगम्भीरनाथके तपोमय साधनापूर्ण जीवनमें कर्मयोग-
होगा?' उनकी सांसारिक पदार्थोंमें तनिक भी आस्था	भक्तियोगके उदय, ज्ञानयोग—परम अन्तःस्थ ज्योतिके
नहीं थी। धन-परिवार आदिके प्रति वे स्वाभाविकरूपसे	दर्शनका पथ प्रशस्त कर दिया। बाबा गोपालनाथकी
विरक्त थे। जब वे नवयुवक ही थे, उन्हें सूचना मिली	प्रसन्नता और कृपासे अभिभूत श्रीगम्भीरनाथकी प्रारम्भिक
कि गाँवमें एक योगीका आगमन हुआ है। योगीने	योगसाधनापर देवीपाटनके योगी शिवनाथका भी अमित
१मशानमें अपना निवास चुना था। वे योगीसे मिलने गये।	प्रभाव था।
उन्होंने बड़ी श्रद्धासे कहा कि 'महाराज! घरपर मेरा मन	श्रीगम्भीरनाथने योग–साधनाके लिये काशीकी पैदल
नहीं लगता, संसारके विषय-भोग मुझे काटने दौड़ते हैं।	यात्रा की। वे वनमार्गसे भूख-प्यासकी चिन्ता किये बिना
मैं योगाभ्यास करना चाहता हूँ।' योगी नाथ–सम्प्रदायके	चले जा रहे थे। उनका प्रभुकी कृपापर दृढ़ विश्वास था।
थे। उन्होंने श्रीगम्भीरनाथसे कहा—'आप गोरखपुर	तीसरे दिन वे भूखसे नितान्त परिश्रान्त हो गये, पर शेष
जाकर गोरखनाथ–मठके महन्त योगी बाबा गोपालनाथजी	शारीरिक शक्तिपर निर्भर होकर वे पुनीत महातीर्थकी
महाराजसे योग-दीक्षा लीजिये। मैं आपकी महत्त्वाकांक्षासे	ओर बढ़ते जा रहे थे। रास्तेमें एक परिचित ब्राह्मणसे
बहुत प्रसन्न हूँ। आप उच्चकोटिके योगी होंगे।'	उनकी भेंट हुई। वह उन्हें देखते ही सारी स्थिति समझ
श्रीगम्भीरनाथ योगीके आदेशसे गोरखपुरके लिये	गया। निकटस्थ गाँवसे दूध-चिउड़ा लाकर उसने इनसे
चल पड़े। वे गोरखनाथ-मठमें आये। लोग उन्हें देखकर	भोजन करनेका आग्रह किया। वह जानता था कि
आश्चर्यचिकत हो गये। उनके पास पर्याप्त रुपये थे,	श्रीगम्भीरनाथने भोजनके सम्बन्धमें रास्तेमें किसीसे कुछ
उन्होंने अच्छे-से-अच्छे रेशमी कपड़े पहन रखे थे। वे	भी नहीं कहा होगा। श्रीगम्भीरनाथने भगवत्कृपा समझकर
देखनेमें बड़े सौम्य और सुन्दर थे। महन्त गोपालनाथसे	भोजन कर लिया। काशी पहुँचनेपर उन्होंने कुछ
मिलनेपर उन्होंने उनके चरणोंमें आत्मार्पण कर दिया।	दिनोंतक गंगाजीके एक निर्जन तटवर्ती स्थानपर योगाभ्यास
वे नाथ–सम्प्रदायके योगमार्गमें दीक्षित हो गये। राजसी	आरम्भ किया। वे नित्य गंगाजीमें स्नानकर भगवान्
वेषका परित्यागकर श्रीगम्भीरनाथने कौपीन धारणकर	विश्वनाथका दर्शन करने जाया करते थे। भीड़से बहुत
योग-साधनाके निष्कण्टक राज्यमें प्रवेश किया।	दूर रहते थे, इसलिये वे भिक्षा माँगने नहीं जाते थे।
गोपालनाथजी महाराजने उनकी शान्त मुद्रासे प्रसन्न	उनकी त्यागमयी वृत्तिने साधकों और जिज्ञासुओंको
होकर उनको 'गम्भीरनाथ' नाम प्रदान किया। निस्सन्देह	र्खींच लिया। योगी गम्भीरनाथने जन-सम्पर्कको साधनाका
वे गम्भीरताके परम दिव्य सजीव समुद्र ही थे। वे	बहुत बड़ा विघ्न समझा। उन्होंने काशीजीको छोड़
गोरखनाथ-मठमें निवासकर योगाभ्यास करने लगे।	दिया। वे प्रयाग आ गये। प्रयागमें गंगा-यमुनाके पुनीत
उनकी गुरुनिष्ठा उच्चकोटिकी थी। वे गुरुकी प्रत्येक	संगमकी दिव्यतासे सम्प्लावित झूँसीतटकी एक गुफामें
आज्ञाका पालन करते थे। उन्होंने बड़ी तत्परता और	रहकर वे तप करने लगे। दैवयोगसे मुकुटनाथ नामक
तपसे अपने आध्यात्मिक उत्तरदायित्वका निर्वाह किया।	एक नाथयोगीने उनके भोजन तथा सेवा आदिकी
वे मौन रहा करते थे, सत्य-चिन्तन और मठके आवश्यक	व्यवस्था की। बाबा गम्भीरनाथ रात-दिन अनवरत उस
कार्योंके समीचीन सम्पादनमें लगे रहते थे। बाबा	गुफामें योगाभ्यास करने लगे। इस प्रकार प्रयागमें वे तीन

भाग ९१ सालतक रह गये। उनका आध्यात्मिक स्तर ऊँचा हो उनका दर्शनकर अदृश्य हो गया। दूसरे और तीसरे दिन भी प्रभात-कालमें बाबा गम्भीरनाथने उसको देखा, गया। उन्होंने महती योगशक्ति प्राप्त की। साधकको छ: अवस्थाओंसे निकलना पडता है. वे उन्होंने इस ओर कुछ ध्यान न दिया। वे अपने गम्भीर चिन्तनमें तल्लीन थे। तीसरे दिन कुटीमें रहनेवाला एक कुटीचक, बहूदक, हंस, परमहंस, तुरीयातीत और अवधूतकी अवस्थाएँ हैं। एक स्थानपर रहकर साधना करनेवालेको ब्रह्मचारी, जो कुछ दिनोंके लिये बाहर था, आ गया। वह उस कुटीमें बारह सालसे निवास करता था। 'कुटीचक' विशेषणसे अलंकृत किया जाता है।'बहूदक' अनेक स्थानोंमें घूम-घूमकर तप और साधना करनेवालेकी योगिराज गम्भीरनाथके आगमनसे वह बहुत प्रसन्न संज्ञा है। हंस, परमहंस, तुरीयातीत और अवधूतकी हुआ। उसने आप-बीती सुनायी कि 'मैं इस कुटीमें बारह सालसे रहता हूँ। इसीके निकट एक बहुत बड़े महात्मा अवस्थामें साधक जीवन्मुक्ति, सद्-ज्ञान-प्राप्ति और आत्मसाक्षात्कारसे समृद्ध होता है। योगिराज गम्भीरनाथने सर्पके वेषमें रहते हैं। उन्हींके दर्शनके लिये मैं ठहरा अभीतक कुटीचकव्रतका अनुसरण किया था। प्रयागमें हूँ।' महात्मा गम्भीरनाथने सर्प-दर्शनकी बात कही; तप करनेके बाद उन्होंने 'बहूदक'-जीवन अपनाया। ब्रह्मचारी आश्चर्यचिकत हो गया। उसने कहा कि उन्होंने अकेले फिरनेका संकल्प किया। महायोगी 'महाराज! आपका तपोबल स्तुत्य है, जिस कार्यको मैं गोरखनाथकी उक्ति—'ज्ञानके समान गुरु नहीं मिला, न बारह सालमें भी न कर सका, वह बिना किसी प्रयासके चित्तके समान चेला मिला और न मनके समान मेल-आपने कर दिखाया। आप धन्य हैं कि सर्प-वेषमें मिलापवाला मिला; इसलिये गोरख अकेले फिरते हैं '— रहनेवाले महात्माने तीनों दिन आपपर कृपादृष्टि की।' महात्मा गम्भीरनाथने नर्मदा-परिक्रमा समाप्त की। उनकी स्मृतिमें जाग उठी। सम्वत् १९३७ वि० में योगी गोपालनाथने शिवधाम ग्यान सरीषा गुरू न मिलिया प्राप्त किया। महात्मा गम्भीरनाथने परिभ्रमण-कालमें इस चित्त सरीषा चेला। घटनाको सुना। वे गुरुके प्रति आदर प्रकट करनेके लिये मन्न सरीषा मेलु न मिलिया तीथैं गोरख फिरै गोरखपुर आये। तत्कालीन महन्त श्रीबलभद्रनाथजीके अकेला॥ विशेष आग्रहपर वे कुछ दिनोंतक मठमें रह गये। उसके (गोरखबानी, सबदी १८९) उन्होंने परिव्राजक-जीवनमें प्रवेश किया। पूरे छ: बाद वे बिहार प्रदेशके गया जनपदके कपिलधारा नामक सालतक बाबा गम्भीरनाथ परिव्राजक-जीवनका रसास्वादन स्थानमें आकर तप करने लगे। गयाकी पहाड़ियोंमें करते रहे। वे प्राय: पैदल भ्रमण करते थे। उन्होंने चिरकालसे तपस्वी, योगी और संतजन अपना निवास कैलास, मानसरोवर, अमरनाथ, द्वारका, गंगासागर तथा बनाते आये हैं। गयानगरसे थोड़ी दूरपर अत्यन्त शान्त, रामेश्वरम् आदि तीर्थोंका दर्शन किया। उन्होंने भगवती रमणीय और निर्जन कपिलधारा स्थानमें योगी गम्भीरनाथने नर्मदाकी परिक्रमा चार सालमें पूरी की और अमरकण्टकपर तबतक तप करनेका निश्चय किया, जबतक अवधूत अधिक समयतक रह गये। नर्मदा-परिक्रमाके समय अवस्थाकी प्राप्ति न हो जाय। अक्कृ नामके एक व्यक्तिने उनके चरणोंमें श्रद्धा समर्पित की। उनकी उनके जीवनमें एक विलक्षण घटना घटी थी, जो उनकी अपार योगशक्ति और महती तपस्याकी परिचायिका है। भोजन-व्यवस्था तथा सेवा आदिका सहज अधिकार बाबा गम्भीरनाथ नर्मदाकी परिक्रमा कर रहे थे। उनका उसे प्राप्त हो गया। महात्मा गम्भीरनाथके पास कौपीन, मन एक तटीय रम्य स्थानमें लग गया। वहाँ एक कुटी एक कम्बल और खप्परके सिवा और कुछ भी न था।

पर्हांशिष्ट्रांडग्रन्हे रिद्धार्थं निवास क्षेत्र के प्रतिकार के अधिक के अधिक के अधिक के अधिक के प्रतिकार के अधिक के अधिक के प्रतिकार के अधिक के अधिक

कुछ दिनोंके बाद नुपतिनाथ नामके एक श्रद्धाल योग-

थी। महात्मा गम्भीरनाथने उसी कुटीमें निवास किया।

मंख्या ७] नाथपरम्पराके सिद्धसंत	त योगिराज गम्भीरनाथ ३५
***********************************	\$
योगी गम्भीरनाथकी सेवामें बड़ी तत्परता दिखायी।	आश्चर्यचिकत हो गये। वे बाबाके चरणोंपर गिर गये
उनकी प्रसिद्धि बड़ी तेजीसे बढ़ने लगी। वे सदा	और बोले कि 'महाराज! हम गरीब हैं, हमारे परिवारवाले
शान्तचित्तसे ध्यानस्थ रहते थे। मौन उनकी वाणीका	कई दिनोंसे भूखों मर रहे हैं!' बाबाने कहा, 'वत्स! मैं
अलंकार था, संकेत उनके भावोंका प्रहरी था, निर्जनतामयी	तुम्हारी विवशता समझता हूँ। तुम जब चाहो, कुटीसे
योग–साधना ही उनकी जीवन–संगिनी थी। प्रकृतिकी	आकर भोजन ले जा सकते हो। तुम्हें कोई न रोकेगा।'
कमनीय कान्तिसे सम्पन्न कपिलधारा पहाड़ीकी दिव्यता	चोरोंने अपनी आवश्यकताके अनुसार थोड़ा-बहुत सामान
उनकी योगलीलाकी रंगभूमि थी। रातमें दूसरी पहाड़ियोंपर	ले लिया। बाबाकी चरण-धूलि मस्तकपर चढ़ाकर वे
तप करनेवाले सिद्ध महापुरुष और योगीजन उनका दर्शन	चल पड़े। दूसरी बार आश्रममें आनेपर उनके जीवनमें
करने तथा सत्संग प्राप्त करने आया करते थे। गयाके	बहुत बड़ा परिवर्तन देखा गया। वे चोर नहीं, सत्यवादी
एक धनी पण्डा माधवलालने उनके आशीर्वादसे एक	हो गये। योगिराजकी करुणाने उनकी कृतज्ञताको श्रद्धा
गुफाका निर्माण कराया। योगी गम्भीरनाथ उसी गुफामें	और भक्तिमें रूपान्तरित कर दिया। बाबा प्रेम, माधुर्य,
प्रवेशकर तप करने लगे। दर्शकों और मिलनेवालोंकी	अहिंसा और शान्तिके साकार-सजीव विग्रह थे। शान्तिको
भीड़ अपने-आप कम होने लगी। गुफामें कोई दूसरा	ही वे बहुत बड़े चमत्कारकी वस्तु स्वीकार करते थे।
व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकता था। वे केवल एक पाव	परिव्राजक–कालमें महाराणा उदयपुर तथा महाराजा
दूध नित्य लेते थे। प्रत्येक मंगलवारको थोड़ी देरके लिये	काश्मीर आदिने बड़ी चेष्टा की कि योगिराजकी चरण-
वे गुफासे बाहर आकर दर्शकों और भक्तोंको दर्शन देकर	धूलि राजप्रासादमें पड़ जाय; पर ऐसा कभी सम्भव नहीं
तृप्त करते थे। तीन वर्षोंतक उन्होंने यही क्रम रखा।	हो सका। बाबाके प्रसिद्ध सेवक माधवलाल पण्डाने
उसके बाद वे प्रत्येक अमावास्या और पूर्णिमाको गुफाके	बड़ा प्रयत्न किया कि एक क्षणके लिये भी बाबा उसके
बाहर आने लगे। बारह सालके कठिन योगाभ्यासके बाद	घर चलें; पर बाबा गम्भीरनाथ अपने नियमपर अडिग
उन्होंने इस नियमको भी भंग कर दिया। उसके बाद वे	रहे। एक बार उनका निजी सेवक बहुत बीमार पड़
तीन मासतक गुफासे बाहर न आये। श्रद्धालुओंकी	गया। उसका भाई मुन्नी दौड़ता हुआ बाबाके पास
विकलता बढ़नेपर उन्होंने दर्शन दिया। इस प्रकार	आया; आँखोंमें अश्रु भरकर उसने कहा कि 'महाराज!
कपिलधारामें उन्होंने 'अवधूत' अवस्था प्राप्त कर ली।	अक्कूका अन्तिम समय है, उसे जीवन प्रदान कीजिये
उनकी पवित्र उपस्थितिसे उस तपोभूमिमें सत्य, शान्ति,	अथवा चलते समय उसे अपनी चरण-धूलिसे आशीर्वाद
अहिंसा और दिव्यताका साम्राज्य स्थापित हो गया।	दीजिये; वह आपके दर्शनके लिये विकल है।' करुणा-
कपिलधारा आश्रममें एक बार रातको कुछ चोर	समुद्र परम शान्तिमय बाबा गम्भीरनाथ आसनसे उठ
आये। उन्होंने आश्रमपर पत्थरोंके टुकड़े बरसाये।	पड़े; वे अक्कूके घर आये। शरीर ठण्डा हो रहा था,
योगिराज एक कम्बल ओढ़कर कुटीके बाहर लेटे हुए	प्राण निकलनेवाले ही थे कि बाबाका दर्शन करते ही
थे। पत्थरके एक टुकड़ेसे उन्हें थोड़ी-सी चोट आयी।	अक्कूकी चेतना लौट आयी; बाबाने उसे प्राण-दान
योगी नृपतिनाथ तथा दूसरे भक्तोंने चोरोंका पीछा करना	दिया; स्वस्थ होनेपर वह बाबाकी सेवामें पुन: संलग्न हो
चाहा। योगिराज गम्भीरनाथने चोरोंसे कहा कि 'साधुओंको	गया। बाबा गम्भीरनाथकी महिमा अकथनीय है। जिस
तंग नहीं करना चाहिये।' उन्होंने बड़े प्रेम और मधुरतासे	समय कपिलधारा–आश्रममें योगिराज गम्भीरनाथ तप
कहा कि 'कुटीका दरवाजा खुला हुआ है; तुम भीतर	कर रहे थे, उसी समय महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी
जाकर जो कुछ भी आवश्यक समझो, ले लो।' उनके	आकाशगंगा पहाड़ीपर अपने कुछ भक्तोंके साथ साधनामें
आदेशसे नृपतिनाथने दरवाजा खोल दिया। चोर	तल्लीन थे। वे बाबाकी योगशक्तिसे बहुत प्रभावित थे

भाग ९१ और उनके चरणोंमें अडिंग श्रद्धा रखते थे। वे कभी-खोली, अपने सामने कम्बलोंका ढेर देखा। उन्होंने कभी योगिराजका दर्शन करने कपिलधारा आया करते हाथसे वितरण करनेका संकेत किया और क्षणमात्रमें थे और प्राय: आधी रातके समय पधारकर दो-एक घण्टे दीन-दुखियों और असहायोंको कम्बल वितरित कर दिये उनके सम्पर्कमें रहकर सत्संग और भजनकी सात्त्विकता गये। कुम्भसे लोगोंके विशेष आग्रहपर वे गोरखनाथ-और मधुरताका आस्वादन करते थे। महात्मा गम्भीरनाथ मठके अध्यक्षका उत्तरदायित्व स्वीकारकर गोरखपुर आधी रातमें सितार बजाकर भगवान्को भजन समर्पित आये और जीवनके अन्तिम क्षणतक उन्होंने अपना कार्य किया करते थे। उनकी संगीत-माधुरी और दिव्य बडी सात्त्विकता और पवित्रतासे सम्पादित किया। नाथ-सितार-वादन-कलासे हिंसक जीव-जन्तु दिव्य प्रेमोन्मादमें सम्प्रदायके तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ योगीके रूपमें उनकी अहिंसक बनकर उनकी चरण-धूलिके संस्पर्शसे अपने-ख्याति चारों ओर फैल गयी। वे जीवन्मुक्त-अवस्थामें आपको परम तृप्त मानते थे। कभी-कभी कपिलधारा-पहुँच गये थे। वे साधु-मण्डलीमें सिद्ध पुरुषके रूपमें पहाड़ीपर बाबाके सितार-वादन और भजनसे आकृष्ट विख्यात थे। गोरखनाथ-मठमें आगमनके बाद लोग होकर महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी आया करते थे। उन्हें 'बूढ़ा महाराज'के विशेषणसे समलंकृतकर उनके एक दिन रातकी निर्जनतामें बाबा गम्भीरनाथ पहाडीपर प्रति श्रद्धा और आदर प्रकट करते थे। उनके आगमनसे सितार बजाते हुए घूम रहे थे, भगवान्के चरणोंमें ऐसा लगता था मानो गोरखनाथकी तपोभूमिमें हठ योग, हृदयका मधुर संगीत समर्पित कर रहे थे। चारों ओर लययोग और राजयोगने ही मूर्ति धारणकर प्रवेश किया ज्योत्स्ना फैली हुई थी। महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामीने हो। शिष्योंसे कहा, 'अहा! कितना मधुर संगीत बाबा गोरखपुरमें गोरखनाथ-मठ-निवासकालमें एक बार गम्भीरनाथ अपने आराध्य देवके चरणोंमें अर्पित कर रहे उन्होंने अद्भुत यौगिक चमत्कार दिखाया था। एक विधवाका लड़का बैरिस्टरीका प्रमाणपत्र प्राप्त करने हैं। बाबा साक्षात् प्रेमरूप हैं, ऐसे योगीका दर्शन भारतवर्षमें इस समय दुर्लभ है। बाबामें सृष्टि, स्थिति लन्दन गया था। तीन-चार माससे उसके सम्बन्धमें कोई और प्रलयकी शक्ति है। वे क्षणमात्रमें संसारका सृजन समाचार न पाकर माँकी चिन्ता बढ़ गयी। उसने बाबा और संहार कर सकते हैं। उन्होंने प्रेमका माधुर्य इस गम्भीरनाथकी कृपादृष्टिका दरवाजा खटखटाया। उस तपोभूमिके कण-कणमें भर दिया है।' समय राजकीय विद्यालयके प्रधानाचार्य रायसाहब अघोरनाथ सम्वत् १९५० वि०में बाबा गम्भीरनाथ कपिलधारा-अपने सहकर्मी अटलबिहारी गुप्तके साथ बाबाका दर्शन आश्रमसे प्रयाग कुम्भमेलामें पधारे हुए थे। उनकी करने आये थे। विधवाको फूट-फूटकर रोते देख योगिराज गम्भीर मुद्रा और शान्ति तथा तपकी माधुरीने दर्शकोंका गम्भीरनाथ एक कोठरीमें चले गये, दरवाजा बन्द कर मन सहजमें ही मुग्ध कर लिया। प्रत्येक समय उनके लिया। बुधवार था। आधे घण्टेके बाद उन्होंने बड़ी निवास-स्थानपर संतों-साधुओंकी भीड़ लगी रहती थी। चिन्तनमयी गम्भीर मुद्रामें कहा कि 'तुम्हारा लड़का अपने शिष्योंके साथ महात्मा विजयकृष्ण उनका दर्शन स्वस्थ और सुरक्षित है।...वह सोमवारको पहुँच करने आये थे। महात्मा विजयकृष्णके शिष्य मनोरंजन जायगा।...अगले बुधवारको एक नौजवान रायसाहब ठाकुरने कुम्भकी एक घटनाका वर्णन किया है, जिससे अघोरनाथकी कोठीपर उनको प्रणाम करने गया। दैवयोगसे बाबाकी तपस्या और शान्तिमयी त्याग-वृत्तिका पता अटलबिहारी गुप्त भी वहीं उपस्थित थे। रायसाहबने गुप्तसे कहा कि 'ये महाशय उसी विधवाके पुत्र हैं, जो चलता है। एक धनी व्यक्तिने योगिराजके हाथसे सौ कम्बलोंका वितरण कराना चाहा। बाबा उस समय पिछले बुधवारको बाबा (गम्भीरनाथ)-के पास गयी गम्भीर चिन्तनमें थे। थोडी देरके बाद उन्होंने आँख थी।' नौजवान रायसाहबकी बातका आशय समझ नहीं

संख्या ७] नाथपरम्पराके सिद्धसंत	त योगिराज गम्भीरनाथ ३७
\$	*********************************
सका। रायसाहब उसको साथ लेकर बाबाके पास दर्शन	सेत फटिक मनि हारै बीघा,
करने गये। अटलिबहारी गुप्त भी साथ थे। नौजवानने	इहि परमारथ गोरख सीधा॥
बाबाके चरणपर सिर रखकर प्रणाम किया। उसने तत्क्षण	(गोरखबानी, सबदी १७४)
ही बाबासे पूछा कि 'आप कब आये ? मैं बम्बईमें उतरते	परमात्मतत्त्व न बाहर है न भीतर है, न निकट है
ही इम्पीरियल मेलमें सवार हुआ, पर आपको मैंने नहीं	न दूर है। ब्रह्मा और सूर्य उसे खोजते ही रह गये, किंतु
देखा।' उसने रायसाहबसे कहा कि 'हमारे जहाजको	उसका रहस्य न पा सके। श्वेत स्फटिकमणिको हीरेने
बम्बई पहुँचनेमें एक दिन शेष रह गया था, मेरे कैबिनके	बेध लिया, ब्रह्मका साक्षात्कार कर लिया, इसी परमार्थके
सामने बाबाजी खड़े थे। भारतीय साधुको देखकर	लिये मैं (गोरखनाथ)-ने साधना सिद्ध की। उनकी
बातचीत करनेकी उत्सुकतासे मैंने कैबिनके बाहर आकर	योग-परम्पराका अनुगमन करनेवाले योगिराज गम्भीरनाथने
बाबासे पाँच मिनट बात की। उसके बाद बाबा अदृश्य	इसी परमार्थ—योगतत्त्वकी सिद्धिके राज्यमें आधिपत्य
हो गये। न तो मैंने उनको स्टीमरमें देखा, न रेलगाड़ीमें	प्राप्त किया। उन्होंने नाथयोगके सिद्धान्तके अनुसार शिव
ही उनका दर्शन हुआ।' अटलबिहारी गुप्तके समय	और शक्तिकी एकात्मताका योगके माध्यमसे अनुभव
पूछनेपर उसने कहा कि 'पिछले बुधवारके शामकी बात	किया। योगिराज बाबा गम्भीरनाथने सदा कानोंमें कुण्डल
है।' समय ठीक वही था, जब बाबाने आधे घण्टेके लिये	और वक्षपर नाद धारण किया। उन्होंने योगस्थ होकर
कोठरीका दरवाजा बन्द कर लिया था। इस घटनाका	दिव्य परमात्मतत्त्वका साक्षात्कार किया। वैराग्य उनकी
विवरण अटलबिहारी गुप्त महोदयने अपनी बँगला पुस्तक	योग-साधनाका प्राण था। वे कहा करते थे कि 'सद्गुरु
'मृत्यु और पुनर्जन्मके बाद' में विस्तारसे दिया है। बाबा	वह है, जो आत्मानुभूति प्राप्त कर लेता है और दूसरोंको
गम्भीरनाथको ऊँची–से–ऊँची यौगिक सिद्धियाँ प्राप्त थीं,	आत्मनिष्ठासे सम्पन्न करता है।' नाम-जपमें उनकी
पर उनके प्रदर्शनको वे योग–साधनाके क्षेत्रमें बहुत बड़ा	बड़ी निष्ठा थी। महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामीकी उक्ति
विघ्न मानते थे। वे दूसरोंको किसी तरहका उपदेश देनेमें	है कि 'मुझे भगवन्नाम-निष्ठा बाबा गम्भीरनाथकी
भी अमित संकोच करते थे।	कृपासे प्राप्त हुई।' वे ज्ञानी एवं हठयोगी थे। योगिराजकी
महात्मा गम्भीरनाथ योगमानव थे। उन्होंने अनुभव	श्रीमद्भगवद्गीतामें अपूर्व श्रद्धा थी। वे मायातीत, त्रिगुणातीत
कर लिया था कि 'यही मन शिव है, यही मन शक्ति	योगी थे। वे सत्यान्वेषक थे। वे नाम-जप, कीर्तन और
और पाँच तत्त्वोंसे निर्मित जीव है। शिव, शक्ति और	भजन आदिके लिये अपने शिष्यों और भक्तोंको विशेष
जीव—सब-के-सब एकाकार हैं। मायाके संयोगसे ही	अवसरोंपर प्रोत्साहित किया करते थे। गीताके सम्बन्धमें
ब्रह्म मनके रूपमें अभिव्यक्त होता है। मनसे ही	उनकी उक्ति है कि 'यह सभी युगोंके लिये सम्मान्य है।
पंचभूतात्मक शरीरकी सृष्टि होती है। मनको उन्मनावस्थामें	सत्यके अन्वेषकोंके लिये एक गीता ही बहुत है। यह
लीन करनेसे साधक सर्वज्ञ हो जाता है।' बाबा	सार्वजनिक तथा सनातन शास्त्र है।' भगवच्छरणागतिके
गम्भीरनाथ योगरहस्यके सर्वमान्य मर्मज्ञ थे। उन्होंने	सम्बन्धमें उनकी उक्ति भी थी कि 'अहंता और ममताका
आदिनाथ—शिवद्वारा प्रवर्तित तथा गुरु गोरखनाथद्वारा	परित्यागकर ईश्वरके चरणोंपर समर्पित हो जाना चाहिये।
प्रचारित योगकी साधना की। वे मायाके बन्धनसे पूर्ण	वे योग-क्षेमका वहन करते ही हैं। उनसे केवल सत्य
मुक्त सिद्ध पुरुष थे। गोरखनाथजीने अपनी साधनाके	और प्रेमकी ही माँग करनी चाहिये।' वे भगवन्नाम-
सम्बन्धमें एक स्थलपर कहा है—	साधनापर बड़ा जोर देते थे। उनकी यह घोषणा थी कि
बाहरि न भीतरि, नेड़ा न दूर,	'भगवान्के नामसे सब कुछ हो जायगा।' वे कहा करते
खोजत रहे ब्रह्मा अरु सूर।	थे—'रूप बहुत हैं, स्वरूप एक ही है, सब परमात्मस्वरूप

हैं। मुक्ति–प्राप्तिके लिये साधना और अधिकारकी बडी योग-सिद्धान्तका फिरसे प्राकट्य किया। उनकी विशिष्टता आवश्यकता होती है। शिष्यके ही सत्प्रयत्नसे यह यह थी कि उन्होंने योगके प्रकाशमें सत्य और भगवानुका सम्भव है, गुरु तो साधना और सिद्धिका मार्ग-दर्शन करा साक्षात्कार किया। समस्त जगतुके कार्योंको वे ईश्वरकी

भाग ९१

लीला समझते थे। वे कहा करते थे कि 'आत्माका

विचार करते रहना ही तपस्या है।' वे सदा योगस्थ रहते

की। गोरखनाथ-मन्दिरके सन्निकट ही उनका समाधि-

बाबा गम्भीरनाथ सनातनधर्मके अनुरूप आचरण बनानेको बहुत महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनकी उक्ति है थे। वे सद्गुरु थे। उनकी उक्ति है—'जो शिष्यको बन्धनसे मुक्त कर देता है, वही सद्गुरु है।' कि 'सनातनधर्म शाश्वत, विश्वव्यापी, अपौरुषेय और आदि-सत्यसे परिव्याप्त है।' जब कोई व्यक्ति उनसे जीवनके अन्तिम दिनोंमें उन्हें मोतियाबिन्द हो गया

था। वे उसे ठीक करानेके लिये कलकत्ता गये हुए थे। उपदेश देनेकी प्रार्थना किया करता था, तब वे बडी विनम्रतासे कहा करते थे कि 'मैं वास्तवमें कुछ भी डॉक्टर मानरडने उस रोगको ठीक कर दिया। बाबा नहीं जानता, मेरे पास कोई उपदेश नहीं है। मैं क्या गम्भीरनाथको देखकर मानरडने कहा था—'अरे, ये तो साक्षात् ईसाकी ही तरह दीख पड़ते हैं।' शिक्षा दे सकता हूँ।' वे ऐसे अवसरपर कहा करते थे कि 'सदा सत्य बोलना चाहिये। 'अहं से नहीं योगिराजने गोरखपुरमें सम्वत् १९७५ वि० की चैत्र चिपकना चाहिये। दुसरोंको कभी बुरा-भला नहीं कहना कृष्ण त्रयोदशीको सवा नौ बजे प्रात: परमधामकी यात्रा

मन्दिर है, जो शाश्वत सत्य और चिरन्तन शान्तिका दिव्य करना चाहिये। भिखारियों, दीन-दुखियों और असहायोंका बडे प्रेमसे सत्कार करना चाहिये और विचार करना प्रतीक है। उसमें उनकी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। नित्य चाहिये कि इस प्रकार हम ईश्वरकी ही पूजा कर नियमपूर्वक प्रतिमाकी पूजा-आरती होती है। शिष्योंको रहे हैं।' कभी-कभी स्वप्नमें दर्शन देकर वे उनका पथ-प्रदर्शन करते रहते हैं। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ योग, ज्ञान, विक्रमीय बीसवीं शताब्दीमें योग-सिद्धिके क्षेत्रमें

चाहिये। समस्त धर्मों और मत-मतान्तरोंका आदर

देते हैं।'

उनका महत्त्व असाधारण है। उन्होंने नाथ-सम्प्रदायके तपस्या और भक्तिके सजीव प्रतीक थे।

- बाबा गम्भीरनाथजीके वचनामृत

तीर्थ-पर्यटन, देवता-दर्शन, साधु-सेवा आदि सभी पुण्यकर्मोंको निष्कामभावसे भक्ति-साधनाका अंग

समझकर सम्पादन करना चाहिये। किसी तीर्थमें कौन देवता कितना जाग्रत् है, कहाँ, किस देवताकी कितनी शक्ति और ऐश्वर्य है, किस तीर्थमें जानेसे या किस देवताका दर्शन और पूजन करनेसे कितना और कौन-सा

विशेष फल प्राप्त होगा—ऐसे हिसाब-किताबकी बात मनमें लगाना ही अनुचित है। तीर्थ-पर्यटन और देवता-दर्शनसे भगवान्की सेवा होती है, देह-मनका पाप और मिलनता धुल जाती है एवं अन्त:करणमें सुप्त और दुर्बल सद्वृत्तियाँ उद्बुद्ध और सतेज होकर असद्वृत्तियोंको विनष्ट कर देती हैं —ऐसा निष्कपट विश्वास लेकर तीर्थ

और देवताके शास्त्रोक्त माहात्म्यका स्मरण करते हुए कर्तव्य-बुद्धिसे संयतचित्त होकर श्रद्धा-भक्तिके साथ यथाविधि तीर्थ-पर्यटन, देवतार्चन आदि अनुष्ठान करना चाहिये। मनमें कोई सन्देह आने नहीं देना चाहिये।

किसी विशेष प्रत्यक्ष फलप्राप्तिकी आकांक्षा रखना भी उचित नहीं है। भगवत्सेवा बुद्धिसे शास्त्र-वाक्योंका अनुसरण करते हुए इन कार्योंको करना चाहिये। जिसको जो दान दिया जाता है, वह भगवानुको ही दिया जा

रहा है और भगवान् ही उसे ग्रहण कर रहे हैं—ऐसी धारण रखकर श्रद्धाके साथ दान करना चाहिये एवं जिससे मोतिवपाडिक यां जाता है segvell https://disc.gg/dbarmar नम्मह्मकर हम्प्राप्ति राजिए हो । Avinash/Sh

संख्या ७] भारतमें गायका महत्त्व भारतमें गायका महत्त्व (श्रीरामलालजी गुप्त) हम अपने पूर्वजोंसे यह बात सुनते चले आ रहे गायके दुध-दहीके लाभ—गौकी इतनी महत्ता हैं कि 'पृथ्वी बैलकी सींगके सहारे खड़ी है।' बचपनमें इससे होनेवाले लाभोंको दृष्टिमें रखते हुए दी गयी है। हम इसे केवल बच्चोंकी गप्प-सी ही समझा करते थे। इसका दूध अमृतके समान माना गया है। इसके दूधमें वे सभी पदार्थ विद्यमान हैं, जो एक मानवके बच्चेके पर इसके अन्दर जो गूढ़ रहस्य छिपा है, उसको हम उस समय समझनेमें सर्वथा असमर्थ थे, परंतु आज इस पालन-पोषणके लिये आवश्यक हैं। गौका दुध अनाज वाक्यपर हम जितना अधिक विचार करते हैं, उतना ही भी है और ओषधि भी। आजके विज्ञानने परीक्षणोंसे यह अधिक इसे ठीक और रहस्यपूर्ण पाते हैं। हमारी इस सिद्ध कर दिया है कि गायके दूधमें मानवके अनेक पृथ्वीपर रहनेवाले सभी जीवधारियोंका जीवन पृथ्वीकी रोगों-जैसे गलेके रोग, चेचक, क्षय-रोग, हृदयके रोग और पाण्डुरोग आदिको दूर करनेकी शक्ति है। गायके उपजपर ही निर्भर है और उपज, यदि ध्यानसे देखा दूधका दही जिगर और आमाशयके रोगोंके लिये बहुत जाय, तो बैलके ही अस्तित्वपर आश्रित है। जिन गौओंके अमृतोपम दूधके आधारपर मानव-ही लाभदायक है। महात्मा गाँधी अपनी पुस्तकमें डॉक्टर सान्तराका समाज जीवित रहा है, जिन बैलोंके कारण हमारे (जो कि कोढ़की बीमारियोंके विशेषज्ञ थे) उद्धरण खेतोंको बढिया खाद मिलती आयी है, जिनके कारण

खाद्य पदार्थ पैदा होते हैं, जो बैल भार-वहन करनेमें सबसे उत्तम साधन हैं और जो कच्चे-पक्के, ऊँचे-नीचे रेतीले और कीचड आदिवाले सभी स्थानोंपर काम देते हैं, वे सचमुच ही समस्त पृथ्वीको अपने ऊपर धारण कर रहे हैं। प्राचीन भारतके ऋषि-महर्षि और राजा-महाराजा गाय और इसकी संतानसे होनेवाले लाभोंको भलीभाँति समझते थे। इसीलिये वे गायकी पूजा और आदर-प्रतिष्ठा माताके समान किया करते थे। गायकी रक्षाके लिये हमारे पूर्वज अपने प्राणोंपर खेल जाना भी एक

भी दण्ड दिया जाता था। अंग्रेजोंने देशके लोगोंको निर्बल और निकम्मा करनेके लिये दुध-घीको समाप्त

करने और परस्पर वैमनस्य फैलानेके लिये ही गो-वधको

बढावा दिया था।

देकर लिखते हैं कि 'गायके दूधका प्रयोग कोढ़-जैसे रोगोंमें बहुत लाभदायक रहता है।' इसी पुस्तकमें एक-दूसरे स्थानपर आप लिखते हैं कि 'गायका दूध बच्चों और बौद्धिक कार्य करनेवालोंके लिये बहुत अधिक उपयोगी होता है। गौके दूधका सेवन करनेसे शारीरिक पोषणके साथ ही स्फूर्ति, सात्त्विकता, वीर्य और बौद्धिक शक्तियोंका विकास भी खूब होता है। इसका घी आयुको बढानेवाला है।' गोबर और मूत्र कीटाणुनाशक — गायके न केवल दूध और दही ही दवाइयोंका काम देते हैं, अपितु साधारण-सी बात समझा करते थे। वेदोंमें भी गायको इसका मूत्र और गोबर भी बीमारियोंकी रोक-थाममें अनेक स्थानोंपर अघ्न्या (अवध्य) कहा है। देशकी सहायक सिद्ध होते हैं। जर्मनके एक विद्वान् डॉक्टर सीमंजका कहना है कि गौके मूत्र और गोबरका लेपन आर्थिक अवस्थाका आधार भी गाय-बैलको ही माना जाता था। मुसलमान बादशाहोंके राज्यकालमें गोहत्यापर करनेसे घरमें मच्छर और रोगोंके दूसरे कीटाणु बढ़ने नहीं पूर्ण रोक थी। गोहत्या करनेवालेको हाथ काटनेतकका पाते ।

दृधसे अनाजकी कमीकी पूर्ति—भोजनमें दूध-

दहीके अभावके कारण ही हमें अधिक अनाज खाना पडता है। यदि हमें दुध-दही पर्याप्तमात्रामें मिलें, तो

अनाजकी लागत अपने-आप ही कम हो जायगी। तब

भाग ९१ ****************************** ************************ हमें बाहरसे अनाज मँगवाना नहीं पडेगा। अब प्रयोगोंने यह भी सिद्ध कर दिया है कि ट्रैक्टर जब पानी माँगनेपर दुध मिलता था — जबतक बैलोंका स्थान नहीं ले सकते। एक तो ट्रैक्टरोंके लिये हम गौकी महत्ता और इससे होनेवाले लाभोंसे परिचित बड़े-बड़े फार्मोंकी जरूरत है, ये तो छोटे फार्मोंके दुश्मन रहे, तबतक हमारे देशमें दूध-घीकी नदियाँ बहती रही हैं। दूसरे ट्रैक्टर प्रति एकड़ उपजमें वृद्धि नहीं करते, हैं और अनाजके भण्डार भरे रहते थे। अनेक विदेशी अपितु ये काम करनेवाले मनुष्योंकी संख्या अवश्य ही लेखकोंके लेखोंसे इस बातका पता चलता है कि 'यहाँ कम कर देते हैं और भारतवर्षमें काम करनेवालोंकी कमी नहीं है। वे पहले ही बहुत भारी संख्यामें बेकार हैं। दुधको मूल्य लेकर बेचना पाप समझा जाता था। यदि कोई अतिथि कभी किसी गृहस्थके घरसे पानी माँगता बैलोंद्वारा खेती-बाड़ी करके किसान उपजको बहुत बढ़ा था तो उसे पानीके स्थानपर दूध ही दिया जाता था।' सकता है। दूध-घीकी अधिकताके कारण यहाँके लोग बड़े हृष्ट-इसके अतिरिक्त ट्रैक्टरोंके बनवानेके लिये बहुत पुष्ट, पराक्रमी और बुद्धिमान् तथा लम्बी आयुवाले होते अधिक संख्यामें फौलादकी जरूरत पडती है, फिर इनकी थे। तब यहाँ गो-वंशका पालन-पोषण ठीक ढंगसे होता मरम्मत आदिका भी झंझट रहता है। चलानेके लिये था और प्रत्येक व्यक्तिको गायका दुध और घी पर्याप्त डीजल ऑयलकी भी जरूरत है जो कि अधिकतर मात्रामें मिलता था। विदेशोंसे ही मँगवाना पड़ता है। एक निश्चित समयके पश्चात् ट्रैक्टर सर्वथा बेकाम हो जायगा, फिर नया गाय-बैलोंकी संख्या बहुत अधिक होनेके कारण खेतोंके लिये उनके गोबर-मूत्रकी अच्छी खाद भी बहुत खरीदना पड़ेगा, जबिक गाय-बैल स्वयं ही अपनी अधिकमात्रामें मिल जाती थी। उसके कारण अनाजकी संख्याको बढ़ाते रहते हैं। भारतमें खेतीके लिये आधुनिक उपज भी बहुत अधिक होती थी। तब यहाँसे अनाज मशीनरी और ट्रैक्टर प्रयोग करनेकी सलाह देकर खेती-दूसरे देशोंको बाहर भेजा जाता था, किंतु आज हमें बाड़ीके लिये बैलकी जरूरतको कम नहीं किया जा सकता। भारत-सरकारके प्लानिंग कमीशनके सदस्य अपनी जरूरतके लिये अनाज दूसरे देशोंसे मँगवाना पड़ रहा है। दुधके डब्बे भी हमें अपने बच्चोंके लिये दूसरे प्रोफेसर राजिकशनने कहा था कि यदि हमें देशकी देशोंसे मॅंगवाने पड़ रहे हैं और हम इस बातपर ही गौरव बेकार आबादीको काम दिलाना है, तो फिर खेतीके अनुभव कर रहे हैं कि हमें रूस और अमेरिकासे बहुत मशीनीकरणके लिये कोई स्थान नहीं है। ट्रैक्टरोंके द्वारा भारी संख्यामें जूते भेजनेके आर्डर मिल रहे हैं! क्या खेती केवल उन्हीं स्थानोंपर की जानी चाहिये, जो हमने कभी यह सोचा है कि जो देश आज चाँदपर जा ऊबड़-खाबड़ हों। उन्होंने और कहा कि प्लानिंग रहे हैं, क्या वे अपने लिये जुते नहीं बना सकते ? वे भोले कमीशनकी दृढ सम्मित है कि खेतीके पुराने तरीके ही नहीं हैं। वे अपने देशके पशुधनका नाश नहीं करना प्रयोगमें लाये जाने चाहिये और उनके स्थानपर मशीनी-चाहते। ऐसे हम ही हैं, जो अपने देशके पशुधनका बुरी खेतीका कमीशन प्रबल विरोध करता है।' तरहसे नाश करते चले जा रहे हैं। इसीका परिणाम है गोबरकी खाद बनाम बनावटी खाद—गायों-कि लोगोंका स्वास्थ्य बिगड गया है। आयु कम हो गयी बैलोंके गोबर और मूत्रसे जो खाद स्वयमेव तैयार होती रहती है, वह भूमिकी उपजाऊ शक्तिको बहुत अधिक है और बुद्धिका बुरी तरह ह्रास हो रहा है। ट्रैक्टर बनाम बैल — आज मशीनरीके इस युगमें बढ़ा देती है, जिससे उपजमें पर्याप्त वृद्धि तो होती ही कहा जा सकता है कि जब ट्रैक्टरके द्वारा खेती-बाड़ी है, साथ ही अनाजकी पोषक-शक्ति भी बढ़ती है। हो सकती है तो बैलकी इतनी महत्ता नहीं रहती, किंतु जबिक बनावटी खाद भूमिको खोखला कर देती है और

संख्या ७] गोवध बंद हो उसकी उपजाऊ शक्तिको भी कम कर देती है और चमड़ा आदि तो उसकी प्राकृतिक मृत्युके पश्चात् भी अनाजकी पोषक-शक्ति भी कम हो जाती है। काममें लाया जा सकता है। अनुपयोगी (सूखे) पशुओंके नामपर सैकड़ों दुधारू जिस खेतमें पशुओंके गोबर और मुत्रसे तैयार हुई खाद पड़ती है, उस खेतको हानि पहुँचानेवाले कीड़े-पशुओंका वध हो जाता है। इनका वध तभी रोका जा सकता है, जब कि गो-वंशके वधपर पूर्ण रूपसे रोक मकोड़े बिलकुल पैदा नहीं होते। गाय-बैलके गोबर और मूत्रमें ऐसे कीड़ों-मकोड़ोंको नाश करनेकी अद्भुत शक्ति लगायी जाय। स्वतन्त्रता-प्राप्तिसे पूर्व हमें महात्मा गाँधी, लोक-होती है। बैलोंके द्वारा जहाँ हम खेतकी उपज प्रति एकड़ मान्य तिलक, पण्डित मदनमोहन मालवीय, लाला बढ़ा सकते हैं, वहाँ ट्रैक्टरोंके खरीदने और उनकी लाजपतराय, डॉ० अनसारी, हकीम अजमलखॉं तथा मरम्मत तथा डीजल-ऑयलके खर्चसे भी बच सकते हैं अन्य सभी नेताओंने बडी आशाएँ दिलायी थीं कि और खाद तैयार करनेकी फैक्टरियोंपर भी हमें अरबों 'आजादी मिलनेपर गो–हत्या तुरंत बन्द कर दी जायगी।' महात्मा गाँधी तो भारतके लिये गायके महत्त्वको रुपये व्यय करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। स्वराज्यसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। ठाँठ गायोंका प्रश्न—कुछ लोगोंका कहना है कि ठाँठ अर्थात् जो गायें दुध देना बन्द कर चुकी हों, उनकी स्वतन्त्र भारतके संविधानकी धारा ४८में स्पष्टरूपसे हत्यापर रोक नहीं होनी चाहिये, क्योंकि वे अनुपयोगी ये शब्द अंकित हैं—'राज्य गायों और बछडों तथा अन्य हैं। यदि आपने सृष्टिकी सभी अनुपयोगी वस्तुओंको दुधारू और वाहक ढोरोंकी नस्लके परिरक्षण और समाप्त करनेका ठेका ले लिया है, तो ऐसे बहुत-से काम सुधारनेके लिये तथा उनके वधका प्रतिरोध करनेके लिये करने पड़ेंगे, जिन्हें करनेसे हमें कोई पागलके सिवा कुछ अग्रसर होगा।' नहीं कहेगा। गाय तो कभी अनुपयोगी होती ही नहीं। आशा की जाती है कि अब सारे भारतवर्षमें गो-बिसूखी होनेपर भी वह घास-फूस खाकर हमें गोबर और वंशके वधपर पूर्णरूपसे कानूनन रोक लगाकर भारतको मूत्रके रूपमें अमूल्य खाद प्रदान करती रहती है। उसका समृद्ध और खुशहाल बनाया जायगा। गोवध बंद हो (डॉ० श्रीगणेशदत्तजी सारस्वत) लोक समस्तकी है हितकारिणी, सिद्धि-समृद्धिकी सुन्दर नींव है। पावन है शुचि पावन नाम-सी, है सुरभी सुर शान्त अतीव है।।

(डॉ॰ श्रीगणेशदत्तजी सारस्वत)
लोक समस्तकी है हितकारिणी, सिद्धि-समृद्धिकी सुन्दर नींव है।
पावन है शुचि पावन नाम-सी, है सुरभी सुर शान्त अतीव है।
सेवा अशेषकी साध विशेष ले, संसृतिमें प्रकटी नतग्रीव है।
है वसुधा पै सुधाकी विधायिनी, मूर्तिमती ममता ही सजीव है॥१॥
है पशु, किंतु न है पशुता, शुचिताका मनोरम भाव लिये है।
अन्तसका रस बाँट रही जग, जाग्रत् जीवन-चाव लिये है॥
मुक्त सभीके लिये उर है, न किसीके लिये भी दुराव लिये है॥
गौरी-गिराकी उपासना-सी शुभ, पुण्यदा पुण्य प्रभाव लिये है॥२॥
दूध पिलाती जिलाती है जीव जो, साथ नहीं उसके छल-छंद हो।
है जिसकी हर श्वास परार्थ, न दे दुख कोई उसे मितमंद हो॥
पूज्य है जो जननीके समान, नहीं उसके हित घातक फंद हो।

देशकी है ये पुकार अमन्द कि गोवध बंद हो, गोवध बंद हो॥३॥

साधनोपयोगी पत्र साक्षात् अनुभूति होती है, तभी प्रेमकी आँखें खुलती हैं (१)

ब्रह्मज्ञान, पराभक्ति, भगवानुकी लीला तभी भगवान्की लीलाके यथार्थ और पूर्ण दर्शनकी योग्यता प्रिय महोदय! सप्रेम हरिस्मरण! आपका कृपापत्र प्राप्त होती है और तभी प्रेमी भक्तका भगवानके साथ

मिला था। उत्तर लिखनेमें बहुत देर हो गयी, इसके लिये

क्षमा करें। व्यतिरेक और अन्वय—दोनों प्रकारसे ही ब्रह्मज्ञानकी साधना होती है। आजकल अवश्य ही ऐसी

प्रथा-सी हो गयी है कि लोग वेदान्तका अर्थ ही व्यतिरेक-साधना करते हैं। वे 'नेति-नेति' कहकर जगत्को स्वप्न, गन्धर्वनगर, शशशृंग और रज्जुमें सर्प आदिकी भाँति सर्वथा

असत् बतलाकर सबका अस्वीकार तो करते हैं, परंतु सब कुछको एकमात्र नित्य सच्चिदानन्दघन-स्वरूप मानकर

ब्रह्मका स्वीकार नहीं करते। इसलिये कभी-कभी जगत्का बाध करते-करते ब्रह्मका भी बाध हो जाता है और मनुष्यका

चित्त एक जड़ शून्य भूमिकापर जा पहुँचता है, जगत् वस्तृत: न कभी था, न होगा—यह सत्य है, इसके साथ यह भी सर्वथा सत्य है कि जगत्के रूपमें जो कुछ भी भास रहा है, वह तथा जिसको भासता है, वह भी ब्रह्म ही

है। जगत्को सर्वथा वस्तुशून्य समझना 'व्यतिरेक' साधना है और चेतनाचेतनात्मक समस्त विश्वमें एक चेतन अखण्ड परिपूर्ण ब्रह्मसत्ताका अनुभव करना 'अन्वय' साधना।

दोनों साधनाओंके समन्वयसे जो 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन' तत्त्वकी प्रत्यक्षानुभूति होती है, वही

यह श्रीभगवान्का सिच्चदानन्दमय ब्रह्मस्वरूप है।

ब्राह्मी स्थिति है। इसके जान लेनेपर ही समग्र पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण-

की प्रेमलीला या व्रजलीलाके समझनेका अधिकार प्राप्त होता है। दिव्य हृदय और दिव्य नेत्रोंके बिना व्रजलीलाके

दर्शन नहीं हो सकते। विविध साधनाओंके द्वारा हृदय जब समस्त संस्कारोंसे शून्य होकर शुद्ध सत्त्वमें प्रतिष्ठित

हो जाता है और जब सम्पूर्ण विश्वमें एक अखण्ड

पूर्णेक्यमय मिलन होता है। यही ज्ञानकी परा निष्ठा है। **'निष्ठा ज्ञानस्य या परा।'** श्रीभगवान्ने स्वयं कहा है—

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचित न कांक्षित। समः सर्वेषु भूतेषु मद्धक्तिं लभते पराम्॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः। ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्॥

स्थित हो जाता है, जब उसे न तो किसी बातका शोक होता है और न किसी बातकी आकांक्षा ही। समस्त प्राणियोंमें उसका समभाव हो जाता है, तब उसे मेरी

पराभक्ति—पूर्ण प्रेम प्राप्त होता है। और उस पराभक्तिके द्वारा मुझ भगवान्के तत्त्वको मैं जो कुछ और जितना कुछ हूँ — वह पूरा-पूरा जान लेता है और इस प्रकार

तत्त्वसे जानकर वह तुरंत ही मुझमें मिल जाता है।' यह ब्रह्मज्ञान और यह पराभक्ति—केवल ऊँची-ऊँची बातोंसे नहीं मिलती। निरी बातोंसे तो ब्रह्मज्ञानके नामपर मिथ्या अभिमान और भक्तिके नामपर विषय-

विमोहकी प्राप्ति ही होती है। सत्संग, साधुसेवन, सद्विचार, वैराग्य, भजन, निष्काम कर्म, यम-नियमादिका पालन और तीव्रतम अभिलाषा होनेपर ही इनकी प्राप्ति

सम्भव है। भगवत्कृपाकी तो शरीरमें प्राणोंकी भाँति सभी साधनाओंमें अनिवार्य आवश्यकता है। शेष प्रभुकृपा। (२)

'साधक जब प्रसन्न-अन्त:करण होकर ब्रह्ममें

कर्म-रहस्य

प्रिय महोदय! सप्रेम हरिस्मरण। कर्मके सम्बन्धमें बात यह है कि कर्म तीन प्रकारके हैं—संचित, प्रारब्ध

और क्रियमाण। मनुष्य प्रतिक्षण सकामभावसे जो कुछ असंमित्र संभित्ति Dissorta Server https://dsc.qqq/dharma.if अर्थि DE, Yatrabayar हि Y Ayinas hash संख्या ७] साधनोपयोगी पत्र हुआ प्रत्येक कर्म कर्मसंग्रहमें संगृहीत होता रहता है, हो जाता। उसके बीचमें ही नया फल मिल जाता है और जो समयपर कर्मफलदायिनी भागवती शक्तिके द्वारा उस फलकी अवधि समाप्त होते ही पुन: वही प्रारब्ध 'प्रारब्ध' बनाया जाकर यथायोग्य शुभाशुभ फल प्रदान लागू हो जाता है। करता है। यह जमा होनेवाला कर्म संचित है। इस जैसे कर्म अपना फल अवश्य देता है, यह कर्मका क्षणके पूर्वतकके हमारे सारे कर्म इस कर्मकी गोदाममें अटल नियम है। वैसे ही यह भी नियम है कि 'सम्यक् ज्ञान' अथवा 'भगवान्में पूर्ण समर्पण' से सारी कर्मराशि जा चुके हैं। इस कर्मराशिमें-से जितने कर्म अलग करके एक जन्मके लिये फलरूपसे नियत कर दिये जाते हैं, भस्म भी हो जाती है। 'संचित'—अनन्त जन्मोंके वही 'प्रारब्ध' है। इसीके अनुसार जाति, आयु, भोग संगृहीत कर्म जल जाते हैं। उनमें 'प्रारब्ध' उत्पन्न इत्यादि प्राप्त होते हैं। प्रारब्धका यह फल साधारणतया करनेकी शक्ति नहीं रह जाती। नवीन 'क्रियमाण' कर्म कर्तृत्वके अभावसे 'संचित' नहीं बन सकते। भूँजे हुए सभीको बाध्य होकर भोगना पड़ता है। कोई भी सहजमें इस प्रारब्धफलभोगसे अपनेको बचा नहीं सकता— बीजोंसे जैसे अंकुर नहीं उत्पन्न होते, वैसे ही वे **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** इस संचितका उत्पादन नहीं कर सकते। रहा 'प्रारब्ध' का प्रकार भागवती-शक्तिके नियन्त्रणमें प्रारब्धके अनुसार भोग—सो वह भी भोक्तापनका अभाव और ब्रह्मानन्द-मनुष्यको कर्मफल भोगना ही पड़ता है। परन्तु यह नियम स्वरूप हो जानेसे अथवा भगवानुके प्रत्येक मंगलमय नहीं है कि पूर्वजन्मोंमें किये गये कर्मोंके संचितसे ही विधानमें एकरस आनन्दका नित्य अनुभव होते रहनेसे प्रारब्ध बने। प्रबल कर्म होनेपर वह इसी जन्ममें संचितसे सुख-दु:ख उपजानेवाला नहीं होकर खेलमात्र होता है। तुरंत प्रारब्ध बनकर अपना शुभाशुभ फल-फलदानोन्मुख इस प्रकार तीनों ही कर्म नष्ट हो जाते हैं। यही प्रारब्धके बीचमें ही भुगता देते हैं। इसके भी नियम हैं। कर्मविज्ञानका शास्त्रीय नियम है और यह सर्वथा सत्य मतलब यह कि प्रारब्धके अनुसार जो फल नहीं होना है। कर्मकी भूमिकामें इसे असत्य बतलानेका साहस है, वह उस प्रारब्धके अनुसार तो होगा ही नहीं—यह करना दुःसाहसमात्र है। सत्य है-परन्तु 'वह होगा ही नहीं' यह निश्चित नहीं भगवान्की दृष्टिसे बात दूसरी ही है। वहाँ भूत, है। नवीन कर्म करनेमें मनुष्य स्वतन्त्र है, वह कोई ऐसा भविष्य और वर्तमानका भेद नहीं है। उनके लिये सभी प्रबल कर्म भी कर सकता है—जो हाथों-हाथ प्रारब्ध वर्तमान है। और जो कुछ भी होता है, सब पहलेसे रचा हुआ ही होता है। यह उनकी नित्यलीला है। बनकर उसे तुरंत फल प्रदान कर दे। जैसे किसीके पूर्वकर्मजनित प्रारब्धके अनुसार 'पुत्र होनेका विधान नहीं जगत्की छोटी-बड़ी सभी घटनाएँ उनकी इस है'—परंतु वह शास्त्रीय 'पुत्रेष्टि यज्ञ' विधि तथा नित्य-लीलाका ही अंग हैं। वहाँ कुछ भी नया नहीं बनता, श्रद्धापूर्वक कर ले तो उसको पुत्र हो सकता है। इसी केवल नया—नित्य नया-नया दीखता है। रचा हुआ तो है प्रकारके प्रबल कर्मोंद्वारा धन, मान, आरोग्य, आयु आदि पहलेसे ही। जैसे सिनेमाके फिल्ममें सारे दृश्य पहलेसे पदार्थोंकी प्राप्ति भी हो सकती है। ठीक ऐसे ही प्रबल अंकित हैं, हमारे सामने एक-एक आते हैं, वैसे ही अनन्त अशुभ कर्मोंके द्वारा इसी जन्ममें अशुभ फल भी ब्रह्माण्डोंके अनन्त अतीत, वर्तमान और भविष्य सभी इस (पूर्वकर्मजनित प्रारब्धमें न होनेपर भी) मिल सकते हैं। विराट् फिल्ममें अंकित हैं। क्षुद्र-से-क्षुद्र जीवका नगण्य इससे पूर्वकृत कर्मोंके द्वारा बने हुए प्रारब्धका नाश नहीं संकल्प भी इस फिल्मका ही दृश्य है। शेष प्रभुकृपा।

कल्याण

व्रतोत्सव-पर्व

सं० २०७४, शक १९३९, सन् २०१७, सूर्य उत्तरायण-दक्षिणायन, ग्रीष्म-वर्षाऋतु, श्रावण कृष्णपक्ष मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

तिथि नक्षत्र दिनांक

प्रतिपदा दिनमें १०। २१ बजेतक | सोम | उ० षा० सायं ६। ५८ बजेतक |१० जुलाई|

श्रावण सोमवाख्रत।

द्वितीया " ११। २५ बजेतक मंगल श्रवण रात्रिमें ८। ३२ बजेतक ११ 🕠 भद्रा रात्रिमें ११।४४ बजेसे। धनिष्ठा ११९। ३८ बजेतक १२ 🕠

भद्रा दिनमें १२।२ बजेतक, कुम्भराशि दिनमें ९।५ बजेसे, पंचकारम्भ तृतीया "१२।२ बजेतक बुध

दिनमें ९।५ बजे, संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रिमें ९।७ बजे।

चतुर्थी 🔐 १२।६ बजेतक | गुरु शतभिषा ''१०।१२ बजेतक |१३ 🕠

पंचमी ^{,,} ११।४० बजेतक **मीनराशि** दिनमें ४।१६ बजेसे। शुक्र पु० भा 😗 १०।१७ बजेतक |१४ 🕠

भद्रा दिनमें १०।४६ बजेसे रात्रिमें १०।५ बजेतक, मूल रात्रिमें ९।५५ षष्ठी ग१०।४६ बजेतक शनि उ० भा० '' ९।५५ बजेतक

बजेसे।

रेवती '' ९।११ बजेतक १६ '' रवि

सप्तमी ,, ९ । २५ बजेतक **मेषराशि** रात्रिमें ९।११ बजेसे, **पंचक समाप्त** रात्रिमें ९।११ बजे,

कर्क-संक्रान्ति रात्रिमें ३।१७ बजे, **दक्षिणायन** एवं वर्षा-ऋतु प्रारम्भ।

श्रावण सोमवारव्रत, मूल रात्रिमें ८।५ बजेतक। अष्टमी 🕶 ७ । ४३ बजेतक सोम अश्विनी 🗤 ८।५ बजेतक १७ ,,

मंगल भरणी सायं ६। ४४ बजेतक भद्रा दिनमें ४। ३४ बजेसे रात्रिमें ३। २७ बजेतक, वृषराशि रात्रिमें नवमी प्रात: ५।४२ बजेतक १८ "

दशमी रात्रिमें ३। २७ बजेतक १२।२० बजेसे।

एकादशी 🕖 १।३ बजेतक बुध कृत्तिका 🗤 ५। ११ बजेतक १९ ,, कामदा एकादशीव्रत (स्मार्त्त)। रोहिणी दिनमें ३।३४ बजेतक २० "

द्वादशी 🦙 १०। ३५ बजेतक मिथुनराशि रात्रिमें २।४३ बजेसे, एकादशीव्रत (वैष्णव), पुष्य नक्षत्रका ग्रु सूर्य दिनमें ३।३५ बजे।

भद्रा रात्रिमें ८।६ बजेसे, प्रदोषव्रत। त्रयोदशी 🕖 ८।६ बजेतक | शुक्र | मृगशिरा 😗 १।५३ बजेतक २१ ,,

भद्रा प्रातः ६।५६ बजेतक, कर्कराशि रात्रिशेष ५।१० बजेसे। आर्द्रा '' १२।१६ बजेतक २२

चतुर्दशी सायं ५। ४४ बजेतक शिन

पुनर्वसु 🗤 १०।४९ बजेतक अमावस्या दिनमें ३।३० बजेतक रिव अमावस्या।

सं० २०७४, शक १९३९, सन् २०१७, सूर्य दक्षिणायन, वर्षा-ऋतु, श्रावण शुक्लपक्ष

तिथि दिनांक मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि वार नक्षत्र

पुष्य दिनमें ९। ३४ बजेतक २४ जुलाई मुल दिनमें ९। ३४ बजेसे, श्रावण सोमवारव्रत।

प्रतिपदा दिनमें १।२९ बजेतक सोम सिंहराशि दिनमें ८। ३९ बजेसे, धर्मसम्राट स्वामी करपात्री-जयन्ती। द्वितीया '' ११। ५० बजेतक मिंगल आश्लेषा ११८। ३९ बजेतक २५ "

मघा 🗤 ८। ३ बजेतक २६ ग

भद्रा रात्रिमें १०। ५ बजेसे, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, मुल तृतीया '' १०। ३१ बजेतक बुध दिनमें ८। ३ बजेतक।

भद्रा दिनमें ९। ३९ बजेतक, कन्याराशि दिनमें १। ५७ बजेसे। पु० फा० ११७।५३ बजेतक चतुर्थी 😗 ९। ३९ बजेतक | गुरु २७ "

पंचमी '' ९।१५ बजेतक|शुक्र उ० फा० '' ८। ११ बजेतक २८ " नागपंचमी।

षष्ठी 꺄 ९।२३ बजेतक|शनि ११९।० बजेतक तुलाराशि रात्रिमें ९। ३९ बजेसे। हस्त २९ "

रवि चित्रा १११०।१९ बजेतक **भद्रा** दिनमें १०। ३ बजेसे रात्रिमें १०। ३५ बजेतक, **गोस्वामी** ३० "

सप्तमी 🗤 १०। ३ बजेतक श्रीतुलसीदास-जयन्ती।

स्वाती ''१२।६ बजेतक श्रावण सोमवारव्रत। ३१ "

अष्टमी 🗤 ११।८ बजेतक सोम

विशाखा '' २।१६ बजेतक वृश्चिकराशि प्रातः ७। ४४ बजेसे। १ अगस्त

नवमी 🗤 १२। ४१ बजेतक 🗗 मंगल

अनुराधा 🕶 ४। ४४ बजेतक दशमी 🗤 २ । ३५ बजेतक बुध भद्रा रात्रिमें ३। ३१ बजेसे, मूल दिनमें ४। ४४ बजेसे। २ " ज्येष्ठा रात्रिमें ७।२० बजेतक भद्रा दिनमें ४। ३२ बजेतक, पुत्रदा एकादशीव्रत (सबका), आश्लेषाका 3 "

एकादशी ११४।३२ बजेतक

सूर्य दिनमें ३। ५६ बजे, धनुराशि रात्रिमें ७। २० बजेसे। द्वादशी सायं ६ । ३३ बजेतक शुक्र मूल ११९।५६ बजेतक 8 11

मूल रात्रिमें ९। ५६ बजेतक।

त्रयोदशी रात्रिमें ८। ३३ बजेतक शिनि पु० षा० 🗤 १२ । २० बजेतक शनिप्रदोषव्रत। 4 11

चतुर्दशी रात्रिमें ९।५६ बजे रवि उ० षा० 🗤 २ । २६ बजेतक **भद्रा** रात्रिमें ९।५६ बजेसे, **मकरराशि** प्रात: ६।५२ बजेसे। ξ "

भद्रा दिनमें १०। ३० बजेतक, पूर्णिमा, रक्षाबन्धन भद्राके बाद सोम 9 11

श्रवण रात्रिशेष ४।६ बजेतक पूर्णिमा '' ११। २ बजेतक

१०। ३० बजेसे, **खण्ड चन्द्रग्रहण** प्रारम्भ रात्रिमें १०।५३ बजे एवं

मोक्ष रात्रिमें १२।४८ बजे, श्रावण सोमवारव्रत।

संख्या ७] कपान्भात कृपानुभूति सबका रखवाला है राम शायद कुछ और समयतक मैं सोता रहता तो कोई दुर्घटना इस चराचर जगत्का समग्र कार्य-व्यापार किसी एक शक्तिद्वारा संचालित एवं नियन्त्रित होता है। इस घट सकती थी; क्योंकि वहीं गैसका सिलेण्डर भी रखा परम सत्यकी व्याख्या विद्वान् अपने-अपने विचारानुसार था, घी-तेलके डिब्बे भी थे। दोपहरको प्राय: कोई भिक्षुक या चन्दा माँगनेवाले करते हैं। नि:सन्देह एक वर्ग ऐसा भी है जो ऐसी किसी या सामान बेचनेवाले आते रहते हैं और तबतक गेट सत्ता या शक्तिका अस्तित्व स्वीकार ही नहीं करता। वे बुद्धिवादी इस ओर तबतक ध्यान नहीं देते, जबतक कि खटखटाते रहते हैं, जबतक उन्हें उत्तर न मिल जाय। ऐसे व्यक्ति क्रमश: घर-घर जाते हैं, किंतु इतनी जोरसे उन्हें कोई असामान्य अथवा असाधारण अनुभूति न हो। अब मैं इस सम्बन्धमें अपना अनुभव बताता हूँ। यह गेट कभी किसीने नहीं खटखटाया, जैसा उस दिन हुआ, घटना लगभग १०-१२ वर्ष पूर्वकी है। उस दिन मैं घरमें जिससे मेरी नींद खुल गयी और एक दुर्घटना होनेसे बच अकेला था। दोपहरमें मैंने रसोईमें भोजन गर्म किया, जो गयी। इसे भगवत्कृपा नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? पत्नी बनाकर रख गयी थी। फिर भोजन लेकर दूसरे मैं जानता हूँ कि बहुत-से लोग इसे संयोग कहेंगे। कमरेमें गया तथा वहाँ टी०वी० देखते हुए भोजन किया चिलये मैं यह मान लेता हूँ किसी व्यक्तिका आना मात्र तत्पश्चात् वहीं बिस्तरपर विश्रामहेतु लेट गया। थोड़ी संयोग ही था। क्या यह भी संयोग था कि वह उसी देरमें नींद आ गयी। पता नहीं कितनी देरतक सोता रहा। समय आया जबिक यहाँ एक दुर्घटनाकी सम्भावना जन्म कुछ शोर सुनकर मेरी नींद खुल गयी। बाहर चारदीवारीमें ले रही थी? यह भी संयोग था कि उसने इतने जोरसे लगे गेटको कोई बहुत जोर-जोरसे पीट रहा था। पता नहीं गेट खटखटाया कि मेरी नींद खुल गयी। क्या यह भी कौन था, जो इतनी जोरसे गेट पीट रहा था? रसोईकी संयोग था कि वह तबतक गेट खटखटाता रहा जबतक खिड़कीसे वह गेट साफ दिखायी देता है; अत: मैंने सोचा मेरी नींद नहीं टूटी। यह भी संयोग था कि वह उस समय कि पहले देखूँ कि है कौन? जैसे ही मैं रसोईमें घुसा, मैं हमारे ही घर आया और यह भी संयोग था कि वह चौंक गया। रसोईघर असामान्य रूपसे गर्म हो रहा था। अगल-बगल, आमने-सामनेके किसी गेटपर नहीं गया। जो भी हो, मुझे आजतक नहीं पता चला कि आगन्तक तभी मेरी दृष्टि गैंसके चूल्हेपर पड़ी। मैं भोजन गर्म कौन था, हमारे यहाँ आनेका उसका क्या प्रयोजन था, गेट करनेके पश्चात् इसे बन्द करना भूल गया था। मैंने तुरंत चुल्हा बन्द किया, फिर मैं जल्दीसे रसोईघरसे निकलकर, खुलनेतक वह रुका क्यों नहीं, जबिक इतनी जोरसे गेट

गलियारेका दरवाजा खोल, बाहर गेटपर पहुँचा। वहाँ कोई भी नहीं दिखायी दिया। मैंने गेट खोलकर, बाहर सडकपर निकलकर दायें-बायें देखा, कहीं कोई नजर ही नहीं आया; जबिक अभी कुछ क्षणपूर्व ही कोई गेट इतनी जोरसे खटखटा रहा था! जो भी था, मैं जल्दीसे गेट

खटखटाया था, जैसे तोड़ ही देता। आवाज सुनकर गेट खोलनेमें मुझे एक मिनट भी तो नहीं लगा था, इतनी-सी देरमें वह कहाँ चला गया? जैसे ही मेरी नींद खुली गेट खटखटाना बन्द हो गया ? जैसे कि गेट खटखटानेवालेको दिखायी दे रहा था कि अन्दर कमरेमें मैं नींदसे उठ गया

कैलाश पंकज श्रीवास्तव

बन्दकर पुन: रसोईमें आया। देखा तो चूल्हेसे लगभग डेढ हूँ। मैंने तो बाहर निकलकर भी देखा था। गर्मीकी दोपहरमें सडकपर पुरा सन्नाटा था। कहीं कोई नहीं था। कौन था फुट ऊपर लगा पत्थर, जिसपर मसालेके डिब्बे आदि रखे वह ? वही जाने जिसने उसे भेजा था! वही कण-कणके क्षण-क्षणका नियन्ता। यदि अब भी आप इसे भगवत्कृपाका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं स्वीकार करें तो आपकी इच्छा!

थे, बहुत तप रहा था। पर अभी उसपर बिछे तथा नीचेको लटकते कागजने आग नहीं पकड़ी थी। चूल्हेके पीछेकी दीवार भी बहुत तप रही थी किंतु किसी भी वस्तुने अभी आग नहीं पकड़ी थी। न ही किसी प्रकारकी क्षति हुई थी।

पढ़ो, समझो और करो

एवं रहन-सहनके नियम बचपनमें ही आदतोंका रूप

सच्ची तीर्थयात्रा सन् १८६८ ई०की बात है। श्रीरामकृष्ण परमहंस रहेगी।

तीर्थयात्रापर निकले थे। उनके साथ दक्षिणेश्वरके काली-

मन्दिरके प्रबन्धक मथुर बाबू और परिवारके कुछ

लोग थे। अपने यात्रा-क्रममें एक बार पूरी टोली

(8)

देवघरमें ठहरी। उन दिनों वह पूरा नगर तथा आस-

पासके गाँव भयंकर अकालकी चपेटमें थे। वहाँके

स्थानीय आदिवासी संथाल लोग कई दिनोंसे भूखे थे। उनमेंसे कुछ लोग भोजनके अभावमें परलोक

सिधार चुके थे। दुर्बलताके कारण उन लोगोंके शरीर अस्थिपंजर-जैसे दीखते थे। उनके पास तन ढकनेके

लिये पर्याप्त कपड़े भी नहीं थे। श्रीरामकृष्ण इस दुश्यको सहन नहीं कर सके। वे भी उन संथालोंके

बीच बैठकर जोरोंसे रोने लगे। उन्होंने मथुर बाबूसे उनके कष्टोंको दूर करनेको कहा। मथुर बाबू बोले-'यहाँ तो बहुत सारे गरीब लोग हैं। मैं इन सब

लोगोंकी सहायता कैसे कर सकता हूँ? फिर हमें काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थोंका खर्च भी निबटाना होगा।' श्रीरामकृष्णने कहा—'इन अकाल-पीडि़तोंको इस हालमें छोड़कर मैं तीर्थयात्रापर नहीं जाना चाहता।

ये जगदम्बाकी सन्तान हैं। मैं भी इनके साथ आमरण उपवास करूँगा। तुम्हारी तीर्थयात्राकी मैं बिलकुल ही

परवाह नहीं करता।' हार मानकर मथुर बाबूको उन संथाल आदिवासियोंको

खिलाने और वस्त्र देनेमें काफी धन खर्च करना पडा और तभी श्रीरामकृष्ण आगेकी यात्रा जारी रखनेको

सहमत हुए। - उमेश प्रसाद सिंह (२) अच्छी आदतोंसे बच्चोंको रखें स्वस्थ

स्वस्थ रहनेके नियमोंका पालन अगर बच्चेको बचपनमें ही करवाना शुरू कर दिया जाय तो उसके

जिन्दगीभर नीरोग रहनेकी सम्भावना बनी रह सकती

ले लें तो भविष्यमें औषधियोंकी आवश्यकता नहीं प्रात:काल सूर्योदयसे पूर्व उठना और रात्रिको

जल्दी सो जाना स्वास्थ्यके लिये हितकर होता है। प्रातः उठकर जलका सेवन शरीरको तन्दुरुस्त रखता है। वहीं रातको उसका प्रयोग उसको रोगी बनाता

है। प्राय: बच्चे स्कूल जानेकी जल्दीमें मलत्याग ठीकसे नहीं कर पाते। मल-प्रवृत्तिको रोकनेसे

पिण्डलियोंमें ऐँउन एवं दृष्टिदोष-जैसे विकार उत्पन्न होते हैं। छोटे बच्चोंमें चश्मा लगनेके विभिन्न कारणोंमेंसे

एक कारण यह भी है। जहाँतक हो सके बच्चोंको तेलमें पका अन्न न दें। दुधमें पका अन्न आँखोंके लिये विशेष रूपसे हितकर है। दुधमें फल डालकर उसका शेक बनाकर पीनेकी परम्पराको लोग एक

अच्छी परम्परा समझते हैं, लेकिन आयुर्वेदमें आम, केला, बेर, नारियल आदि फलोंका दूधके साथ प्रयोग

विभिन्न रोगोंका कारण बताया गया है। फास्ट फूडका बहुलतासे प्रयोग इनको बनानेवाली कम्पनियोंको चाहे लाभान्वित करता हो, पर बच्चोंमें इनके माध्यमसे अनेक रसायनिक द्रव्य उनके शरीरको हानि पहुँचाते

हैं। आहारका सम्बन्ध मनके साथ भी होता है। घर-परिवारको खुशहाल बनानेके लिये बच्चोंको ईमानदारीकी कमाईका ही खाना खिलाना चाहिये।

िभाग ९१

नियमित रूपसे करवाना चाहिये। दहीका प्रयोग

लोग बच्चोंको शहद खानेके लिये देते हैं। ध्यान रहे

आमला, अनार एवं सैन्धव लवणको छोडकर बच्चोंको

खट्टी एवं नमकीन वस्तुओंका प्रयोग कम मात्रामें करवायें। चायकी आदत न डलवाकर दुधका प्रयोग

स्वास्थ्यके लिये हितकर होता है, पर शरद एवं बसन्त ऋतुओंमें इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये। किसी भी ऋतुमें रातको दही न खायें। बहुत-से

कि शहदको अधिक मात्रामें न दें और गर्म वस्तुओं के हे Higgluifand Disprogal रिवासिका निर्माण क्रिक्ट कियोपि विद्यापन ने स्थिति प्रहित्य के प्राप्त कर्म क्रिक्ट ने स्थापक क्रिक्ट ने स्थापक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्र

संख्या ७] पढ़ो, समझ	ो और करो ४७
*************************************	**************************************
तेल लगानेसे परहेज करते हैं। विभिन्न प्रकारके कृत्रिम	रातमें पेशाब करता है तो परिवारके लोगोंको बड़ी
खुशबूदार तेलोंके स्थानपर सरसों, आमला, भृंगराज	शर्म आती है। दो सप्ताहतक रातमें सोनेसे पहले
आदिसे निर्मित तेलोंका प्रयोग करना चाहिये। स्नानसे	नित्य ५० ग्राम मूँगफलीके दाने ठीकसे रोज ताजा
पूर्व भी तेल-मालिशका प्रयोग अच्छा फल देता है।	सेंककर छिलके निकालकर खिला दें, पानी नहीं
स्नान करते समय ध्यान रखें कि सिरपर गर्म पानीका	पिलायें। पूर्ण लाभ होगा।
प्रयोग न हो। कृत्रिम टूथपेस्टके स्थानपर नीम, खदिर,	२–रोगीको रोज आधी सिँकी आधी कच्ची तिल्ली
करंज आदिकी दातुनका प्रयोग करें। अभिभावकोंको	मिलाकर ५० ग्राम खिलानेसे भी बच्चा बिस्तरपर पेशाब
याद रखना चाहिये कि आदतें शुरूमें एक धागेके	करना बन्द कर देता है।
समान होती हैं और बादमें एक मोटे रस्सेका रूप	३–होम्योपैथीमें बेलाडोना ३० या कल्केरिया कार्ब
धारण कर लेती हैं, जिन्हें परिवर्तन करना सम्भव	३० की ४-५ गोली दिनमें तीन बार, चार-छ: दिन देनेसे
नहीं होता। अत: बच्चोंमें शुरूमें ही अच्छी आदतें	अच्छा लाभ होता है।
डालना स्वास्थ्य-प्राप्तिका प्रथम सोपान है।	४–रातमें नींदमें बच्चे बिछौनेपर पेशाब कर देते हैं,
—अनूपकुमार गक्खड़	उनको रातमें सोते समय दूधके साथ शंखपुष्पी चूर्ण ३
(ξ)	माशा देनेसे अच्छा लाभ होता है।
आयुर्वेदिक अनुभूत प्रयोग	(४) बच्चोंके पेटमें कृमि
(१) अग्निदग्ध	छोटे बच्चोंके पेटमें कृमि हो जाते हैं। तब
१–आगसे या किसी गरम पदार्थ (घी, तेल, पानी	बच्चा रातमें नींदमें दाँत पीसता है या दाँत रगड़ता
आदि) से जल जानेपर प्राथमिक उपचारके रूपमें	है। उसके मुँहसे दुर्गन्ध आने लगती है शरीर दुबला
घृतकुमारी (ग्वारपाठे)-का रस थोड़ी-थोड़ी देरमें बार-	हो जाता है, चिड्चिड़ा हो जाता है। कभी-कभी
बार (आठ-दस बार) लगानेसे शीघ्र राहत मिलती है।	कृमिके कारण शरीरपर पित्ती भी उछलने लगती है।
जलन शान्त होती है एवं फफोले नहीं होते। यदि कभी	इसके लिये—
घाव भी हो जाय तो ग्वारपाठेका गूदा लगानेसे दो-चार	१-छोटे बच्चोंके लिये होम्योपैथीमें चायना-३०
दिनमें ठीक हो जायगा।	की ३-४ गोली दिनमें ३ बार देनेसे तत्काल लाभ
२-तुलसीके पत्तों का रस नारियल के तेल में	होता है।
मिलाकर लगानेसे लाभ होता है। छाले नहीं होते।	(५) नेत्रज्योतिवर्धक योग
(२) बच्चों का पीलिया	१-त्रिफला चूर्णको शहदके साथ मिलाकर दिनमें
बच्चोंका पीलिया लीवरकी खराबीसे होता है।	दो बार लेनेसे नेत्रज्योति बढ़ती है।
उसके लिये—आँवलेका रस एवं शहद समान मात्रामें	२–शुद्ध शहदको भी नेत्रोंमें लगानेसे अच्छा लाभ
मिलायें एवं बच्चेकी उम्रके अनुसार एक चम्मचसे दो	होता है।
चम्मच दिनमें तीन बार या दो बार एक सप्ताहतक दें,	(६) बुद्धिवर्द्धक चूर्ण
इससे बच्चोंके पीलिया रोगमें लाभ होता है, पीलिया मिट	कुछ बच्चे मंदबुद्धि होते हैं, वे पढ़ते हैं, पर उन्हें
जाता है तथा लीवर पुष्ट होता है। यह प्रयोग बड़ोंके	याद नहीं रहता, जल्दी ही भूल जाते हैं। ऐसे बच्चोंके
लिये भी उपयोगी है।	लिये निम्न चूर्ण बड़ा उपयोगी है—
(३) बच्चेका नींदमें बिस्तरपर पेशाब करना	१-शंखपुष्पी, ब्राह्मी एवं बच शुद्ध रूपमें समान
१–यदि कोई बच्चा बड़ी उम्रमें भी बिस्तरपर	भागमें लेकर कपड़छन चूर्ण बना ले, उसमें चूर्णके

भाग ९१ ****************** बराबर मिश्री मिलाकर नित्य एक चम्मच चूर्ण दूधके लिये दो जगह भेजा गया। रिपोर्ट बहुत खराब आयी साथ बच्चोंको देते रहनेसे बच्चोंकी बुद्धि बढ़ती है, कि भयंकर टी०बी० है। डॉक्टरोंने परिवारवालोंसे कहा याददाश्त अच्छी होती है, बच्चे चतुर बनते हैं। इसे घीके कि इनका चारसे छ: महीनेका जीवन ही बचा है। साथ चाटकर दुध पीनेका भी विधान है। मुझे भी यह बात पता चल गयी कि अब जीवनमें २-अकेली शंखपुष्पीका चूर्ण ३ से ६ माशातक कुछ ही महीने शेष बचे हैं। मेरे मनमें एक इच्छा दुध-शक्करके साथ नित्य प्रात: लेते रहनेसे स्मरणशक्तिमें थी। मैंने १९५२ से कई बार चार धामकी यात्रा की अलौकिक परिवर्तन होते देखा गया है। थी, पर किसी भी बार श्रीगंगोत्रीजीके दर्शन नहीं ३-पढते-पढते जिनकी आँखोंसे आँसू आते हैं एवं हुए थे। मेरी गंगामातामें पूर्ण श्रद्धा थी और सिरदर्द होता है, उन्हें भी शंखपुष्पी लाभ पहुँचाती है। श्रीगंगोत्रीजीमें गंगामाताके दर्शन करनेकी हार्दिक इच्छा (७) वुक्क (किडनी)-की पथरी थी। मैंने अपने परिवारवालोंको इच्छा बतायी तो मेरे १० ग्राम दारूहल्दी (पंसारीके यहाँ मिल जाती परिवार और ससुराल—दोनों पक्षमें इसका भयंकर विरोध हुआ। कोई मुझे इस अवस्थामें दर्शनहेतु जाने है)-को एक लीटर पानीमें काढ़ा बनाकर जब वह २५० ग्रामके लगभग शेष रह जाय, उतारकर ठंडाकर नित्य नहीं देना चाहता था। पीनेसे ८-१० दिनमें किडनीकी पथरी गलकर निकल पर मैं अपने निश्चयपर अडिग था। अन्तमें जायगी। इस २५० ग्राम काढेको तीन भागोंमें बाँटकर परिवार तैयार हुआ। मेरी अवस्था यह थी कि मुझे दिनमें ३ बार सबेरे खाली पेट दोपहर ३ बजे एवं दिनमें दो-तीन बार ड्रेसिंग करानी पडती थी; क्योंकि सन्ध्याको भोजनके बाद पीये। रोग न मिटनेपर दवा घावसे पस निरन्तर निकलता रहता था। मैं परिवारसमेत २०-२५ दिन भी ले सकते हैं। श्रीगंगोत्रीधाम पहुँचा। गंगामाताके दर्शन किये। तीस मिनटतक माताके निर्मल जलमें स्नान किया और तेल, खटाई, मक्का आदि न खायें। माताका अभिषेक किया। प्रभुकी ऐसी कृपा हुई और -वैद्य श्रीमोहनलाल गुप्त गंगाजलका ऐसा चमत्कार हुआ कि जब मैं वापस (8) आया तो फोडे फूट गये डॉक्टरोंने देखा और छोटा गंगाजलका चमत्कार

मैं वल्लभ-सम्प्रदायसे हूँ और प्रभुके बालरूप

श्रीलङ्डुगोपालजीकी सेवा करता हूँ। श्रीगंगामातामें

मेरी अट्ट श्रद्धा है। घटना १७ वर्ष पूर्वकी है। मुझे बैठनेके स्थानपर तकलीफ महसूस हुई तो मैंने डॉक्टरको

दिखाया। डॉक्टरने कहा कि आपको फिस्टुला नामक

बीमारी हुई है। इसमें मल निकलनेकी जगहके आसपास

घाव हो जाते हैं और उनमें पस भर जाता है।

डॉक्टरने इलाज तो बहुत किया, पर कोई फर्क नहीं पडा। अन्तमें डॉक्टरने कहा कि लगता है गाँठ बन

हुआ और दो गाँठें निकाली गयीं, जिसकी बॉयोप्सीके

गयी है, ऑपरेशन करके इसे निकालना होगा। ऑपरेशन

तकके डॉक्टरोंने ऐसा कह दिया था कि मेरे जीवनके ठीक कर दिया। - बालिकशन सोनी

कभी परेशानी नहीं हुई।

ऑपरेशनकर उस जगहको साफ किया। फिर बॉयोप्सीके

लिये भेजा गया। रिपोर्ट आयी तो टी०बी० गायब

थी। आठ-दस दिनमें ऑपरेशनकी जगह पूरी तरह

भर चुकी थी और मैं बिल्कुल स्वस्थ था। अब

सत्रह वर्ष हो गये और मैं बिल्कुल ठीक हूँ। दोबारा

जिस बीमारीका कोई इलाज नहीं था, अमेरिका-

कुछ महीने ही शेष हैं, उस तकलीफको मेरे लालाजी (प्रभ्)-के श्रीचरणकमलोंसे निकली गंगाजीके जलने संख्या ७] मनन करने योग्य सच्ची कृपा एक बार एक निर्धन ब्राह्मणके मनमें धन पानेकी ही स्थित रहेगी।' उसी समय ब्राह्मणने स्वप्नमें देखा कि तीव्र कामना हुई। वह सकाम यज्ञोंकी विधि जानता था; उसके चारों ओर कफन पड़ा हुआ है। यह देखकर उसके किंतु धन ही नहीं तो यज्ञ कैसे हो ? वह धनकी प्राप्तिके हृदयमें वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह सोचने लगा—' मैंने इतने देवताओंकी और अन्तमें कुण्डधार मेघकी भी धनके लिष्द्वये लिये देवताओंकी पूजा और व्रत करने लगा। कुछ समय एक देवताकी पूजा करता; परंतु उससे कुछ लाभ नहीं आराधना की, किंतु इनमें कोई उदार नहीं दीखता। इस दिखायी पड़ता तो दूसरे देवताकी पूजा करने लगता और प्रकार धनकी आशमें ही लगे हुए जीवन व्यतीत करनेसे पहलेको छोड़ देता। इस प्रकार उसे बहुत दिन बीत गये। क्या लाभ! अब मुझे परलोककी चिन्ता करनी चाहिये।' ब्राह्मण वहाँसे वनमें चला गया। उसने अब तपस्या अन्तमें उसने सोचा—'जिस देवताकी आराधना मनुष्यने कभी न की हो, मैं अब उसीकी उपासना करूँगा। वह करना प्रारम्भ किया। दीर्घकालतक कठोर तपस्या करनेके देवता अवश्य मुझपर शीघ्र प्रसन्न होगा।' कारण उसे अद्भुत सिद्धि प्राप्त हुई। वह स्वयं आश्चर्य करने लगा—'कहाँ तो मैं धनके लिये देवताओंकी पूजा ब्राह्मण यह सोच ही रहा था कि उसे आकाशमें करता था और उसका कोई परिणाम नहीं होता था और कुण्डधार नामक मेघके देवताका प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। ब्राह्मणने समझ लिया कि 'मनुष्यने कभी इनकी पूजा न कहाँ अब मैं स्वयं ऐसा हो गया कि किसीको धनी होनेका की होगी। ये बृहदाकार मेघदेवता देवलोकके समीप रहते आशीर्वाद दे दूँ तो वह नि:संदेह धनी हो जायगा!' हैं, अवश्य ये मुझे धन देंगे।' बस, बड़ी श्रद्धा-भक्तिसे ब्राह्मणका उत्साह बढ़ गया। तपस्यामें ही उसकी ब्राह्मणने उस कुण्डधार मेघकी पूजा प्रारम्भ कर दी। श्रद्धा बढ़ गयी। वह तत्परतापूर्वक तपस्यामें ही लगा रहा। ब्राह्मणकी पूजासे प्रसन्न होकर कुण्डधारने देवताओंकी एक दिन उसके पास वही कुण्डधार मेघ आया। उसने कहा— 'ब्रह्मन्! तपस्याके प्रभावसे आपको दिव्यदृष्टि प्राप्त हो स्तुति की; क्योंकि वह स्वयं तो जलके अतिरिक्त किसीको कुछ दे नहीं सकता था। देवताओंकी प्रेरणासे गयी है। अब आप धनी पुरुषों तथा राजाओंकी गति देख सकते हैं। 'ब्राह्मणने देखा कि धनके कारण गर्वमें आकर लोग यक्षश्रेष्ठ मणिभद्र उसके पास आकर बोले—'कुण्डधार! तम क्या चाहते हो?' नाना प्रकारके पाप करते हैं और घोर नरकोंमें गिरते हैं। कुण्डधार—'यक्षराज! देवता यदि मुझपर प्रसन्न हैं कुण्डधार बोला—'भक्तिपूर्वक मेरी पूजा करके आप यदि धन पाते और अन्तमें नरककी यातना भोगते तो मेरे उपासक इस ब्राह्मणको वे सुखी करें।' मणिभद्र—'तुम्हारा भक्त यह ब्राह्मण यदि धन तो मुझसे आपको क्या लाभ होता? जीवका लाभ तो चाहता हो तो इसकी इच्छा पूर्ण कर दो। यह जितना कामनाओंका त्याग करके धर्माचरण करनेमें ही है। धन माँगेगा, वह मैं इसे दे दूँगा।' उनपर सच्ची कृपा तो उन्हें धर्ममें लगाना ही है। उन्हें कुण्डधार—'यक्षराज! मैं इस ब्राह्मणके लिये धनकी धर्ममें लगानेवाला ही उनका सच्चा हितैषी है।' प्रार्थना नहीं करता। मैं चाहता हूँ कि देवताओंकी कृपासे ब्राह्मणने मेघके प्रति कृतज्ञता प्रकट की और यह धर्मपरायण हो जाय। इसकी बुद्धि धर्ममें लगे।' कामनाओंका त्याग करके अन्तमें मुक्त हो गया। मणिभद्र—'अच्छी बात! अब ब्राह्मणकी बुद्धि धर्ममें [महाभारत, शान्तिपर्व]

भाग ९१

कल्याणका आगामी ९२वें वर्ष (सन् २०१८ ई०)-का विशेषाङ्क

'श्रीशिवमहापुराणाङ्क' (उत्तरार्ध)

[श्लोकाङ्कसहित हिन्दीभाषानुवाद] भारतीय सनातन संस्कृतिको यथार्थ रूपमें अभिव्यक्त करनेका श्रेय पुराण-वाङ्मयको ही है। वेदोंमें जो विषय

सूत्ररूपमें आये हैं, पुराणोंमें उन्हें आख्यान-शैलीके माध्यमसे व्यक्त किया गया है। पुराणोंमें श्रीशिवमहापुराणका

महनीय स्थान है। वेद-वेदान्तमें विलसित परम तत्त्व—'परमात्मा' का इसमें 'शिव' नामसे गान किया गया है।

गीताप्रेससे पुराणोंके प्रकाशन-क्रममें कई पुराण 'कल्याण' के विशेषाङ्कोंके रूपमें पूर्वमें प्रकाशित हुए हैं। इसी क्रममें

पिछले वर्ष कल्याणके विशेषाङ्कके रूपमें श्रीशिवमहापुराणका पूर्वार्ध (विद्येश्वरसंहिता एवं रुद्रसंहिता) श्लोकसंख्यासहित

हिन्दीभाषानुवादके साथ प्रकाशित किया गया था, जिसे पाठक महानुभावोंने बहुत सराहा है। इसका उत्तरार्ध भाग

(शतरुद्रसंहितासे वायवीयसंहितातक) कल्याणके ९२वें वर्षके विशेषाङ्करूपमें प्रकाशित करनेका निर्णय लिया गया

है। इसमें २३५ अध्यायोंमें आये १२४४६ श्लोकोंका श्लोकाङ्कसहित हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जायगा।

इसकी ४२ अध्यायोंवाली शतरुद्रसंहितामें भगवान् शिवके विभिन्न अवतारोंकी कथाका वर्णन है, साथ ही

नन्दीश्वरके जन्मकी कथा तथा कालभैरवके माहात्म्यका भी वर्णन है। कोटिरुद्रसंहितामें ४३ अध्याय हैं। इसमें भगवान्

शंकरके द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों तथा उनके उपलिङ्गोंके प्राकट्यकी कथा एवं उनके दर्शन-पूजनकी महिमाका वर्णन है।

तदनन्तर इसी संहितामें भगवान् शंकरद्वारा विष्णुको सुदर्शन चक्र प्रदान करनेकी कथा तथा परमकल्याणकारी शिवसहस्रनाम

एवं शिवरात्रिव्रतको कथा, विधि एवं महिमाका वर्णन है। इसकी ५१ अध्यायोंवाली उमासंहिताके प्रारम्भमें भगवान्

श्रीकृष्णद्वारा तप करने और शिव-पार्वतीसे वरदानप्राप्तिकी कथा है। तत्पश्चात् भगवती उमाद्वारा विभिन्न अवतार लेकर मधु-कैटभ, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज, शुंभ-निशुंभ, दुर्गमासुर आदिके वधकी कथा है। कैलाससंहितामें

कुल २३ अध्याय हैं। इसमें प्रणवके वाच्यार्थ, संन्यासग्रहणकी शास्त्रीय विधि, शैवदर्शनके अनुसार शिवतत्त्व, जगत्-

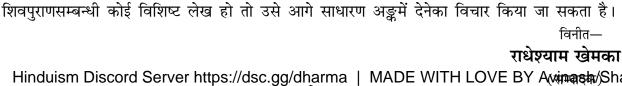
प्रपंच और जीवतत्त्वका विशद वर्णन तथा संन्यासीके अन्त्येष्टिकर्मका वर्णन है। वायवीय-संहिता पूर्व और उत्तर दो खण्डोंमें विभक्त है। इसके पूर्वखण्डमें ३५ अध्याय हैं। इसमें पुराणोंका परिचय, ब्रह्माजीद्वारा परम पुरुष रुद्रकी

महिमाका प्रतिपादन, अर्धनारीश्वरस्तोत्र, शैवागम, पाशुपतव्रत और उपमन्युपर शिवकृपाका वर्णन है। इसके उत्तरखण्डमें ४१ अध्याय हैं, जिनमें उपमन्युद्वारा श्रीकृष्णको शिव और शिवाकी विभूतियों, शिवके यथार्थ स्वरूप, शिवज्ञान, पंचाक्षर-मन्त्रके माहात्म्य, शैवी दीक्षा, पंचमुख महादेवकी आवरण पूजा और महास्तोत्र, योगके भेद, योगमार्गके

विघ्न, शिवयोगीके महत्त्व आदिका उपदेश दिया गया है। जैसे श्रीमद्भागवतका दशम स्कन्ध भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाओंसे ओतप्रोत है, ऐसे ही शिवपुराणका उत्तरार्ध भाग भगवान् शिवकी लीलाओं और उनके भक्तोंकी लीला-

कथाओंसे भरा पडा है, जैसे भागवतके आचार्य दशम स्कन्धकी कथाओंका ही प्राय: गान करते हैं, ऐसे ही शिवाचार्य भी इन शिवावतारों तथा उनकी आराधनाका वर्णन करते हैं। शिवभक्तगण तो इन संहिताओंको लघु शिवभक्तमाल कहते हैं। ऐसे ही उमासंहितामें मार्कण्डेयपुराणकी तरह भगवती जगदम्बाका कृपामय चरित्र वर्णित है। अतः लेखक महानुभावोंसे सादर अनुरोध है कि वे इस विशेषाङ्कमें प्रकाशनार्थ लेख भेजनेका कष्ट न करें, परंतु

विनीत—



इस विशेषाङ्कर्में केवल श्रीशिवमहापुराण (उत्तरार्ध)-का भाषानुवाद ही श्लोकसंख्याके साथ दिया जायगा,

	मीनारेगारे गर्नाणिन १/० गरमामा अन उपलब्ध						
	गीताप्रेससे प्रकाशित १७ महापुराण—अब उपलब्ध 🗖						
कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹		
1897	<mark>श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण</mark> (प्रथम खण्ड)सटीक	२००	789	संक्षिप्त श्रीशिवपुराण—मोटा टाइप	२००		
1898	" " " (द्वितीय खण्ड) "	२००	44	संक्षिप्त पद्मपुराण	२५०		
26,27	श्रीमद्भागवतमहापुराण (दो खण्डोंमें) "	400	1183	संक्षिप्त श्रीनारदपुराण	२००		
557	श्रीमत्स्यमहापुराण "	२७०	279	संक्षिप्त श्रीस्कन्दपुराण	३२५		
48	श्रीविष्णुपुराण "	१४०	1111	संक्षिप्त ब्रह्मपुराण	१२०		
1432	श्रीवामनपुराण "	१२५	539	संक्षिप्त श्रीमार्कण्डेयपुराण	९०		
1131	श्रीकूर्मपुराण "	१४०	1189	संक्षिप्त श्रीगरुडपुराण	१६०		
1985	श्रीलिङ्गमहापुराण	२२०	1361	संक्षिप्त श्रीवराहपुराण	१२०		
	—— केवल हिन्दीमें ——		631	संक्षिप्त श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण	२००		
1362	श्रीअग्निपुराण —सम्पूर्ण (श्लोकाङ्कसहित)	२००	584	संक्षिप्त श्रीभविष्यपुराण	१८०		
	श्रीकृष्णजन्माष्टमी एवं श्री	राधा	टमीप	र उपयोगी प्रमुख प्रकाशन			

(श्रीकृष्णजन्माष्टमी १४ अगस्त सोमवारको एवं श्रीराधाष्टमी २९ अगस्त मंगलवारको है।)

श्रीकृष्णलीलाका चिन्तन (कोड 571) ग्रन्थाकार—इस पुस्तकमें भगवान् श्रीकृष्णके जन्मसे लेकर बाल तथा पौगण्ड अवस्थाकी विभिन्न लीलाओंका बड़ा ही साहित्यिक, सरस एवं भावपूर्ण चित्रण किया गया है। राजसंस्करणमें अच्छे तथा मोटे कागजपर प्रकाशित यह पुस्तक साहित्यिक मनोभूमिको संस्कारित करनेवाली तथा श्रीकृष्ण-भक्तोंके लिये अनुपम रसायन है। मृल्य ₹१५०

कन्हैया (कोड 869), गोपाल (कोड 870), मोहन (कोड 871), श्रीकृष्ण (कोड 872)— श्रीमद्भागवतके दशम स्कन्धके आधारपर लिखी गयी चित्रकथाकी इन पुस्तकोंको भगवान् श्रीकृष्णके जन्मसे लेकर उनके परमधामगमनतककी चुनी हुई लीलाओंसे सजाया गया है। प्रत्येकका मूल्य ₹१५

पदरत्नाकर (कोड 50) पुस्तकाकार—इन पदोंमें भगवान् श्रीकृष्णकी मधुर लीलाओंके चित्रणके साथ ज्ञान, वैराग्य, चेतावनी आदि अनेक विषयोंपर सरल काव्यात्मक प्रकाश डाला गया है। मूल्य ₹११०

श्रीराधा-माधव-चिन्तन (कोड 49) पुस्तकाकार—इसमें श्रीराधाकृष्णका अलौकिक प्रेम ही श्रीराधा-माधव-चिन्तनके रूपमें प्रस्फुटित है। भक्ति और शास्त्रीय चिन्तनके अद्भुत समन्वयके साथ यह ग्रन्थ-रत्न सात प्रकरणोंमें विभक्त है। मृल्य ₹९०

महाभाव-कल्लोलिनी (कोड 526) पुस्तकाकार—इस पुस्तकमें श्रीराधाकृष्णकी विभिन्न लीलाओंसे सम्बन्धित ११६ पदोंका संग्रह है। मूल्य ₹८

मधुर (कोड 343)— इस पुस्तकमें भगवान् श्रीकृष्ण और उनकी अभिन्न शक्ति श्रीराधाजी एवं महाभाग गोपिकाओंके दिव्यातिदिव्य प्रेममय उद्गारोंका ७२ झॉॅंकियोंके रूपमें मनोहर काव्यात्मक चित्रण है। मूल्य ₹ २५

श्रीतुलसी-जयन्तीके अवसरपर पठनीय—तुलसी-साहित्य								
कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹
105	विनय-पत्रिका	४०	108	कवितावली	२०	112	हनुमानबाहुक	4
106	गीतावली	४५	110	श्रीकृष्ण-गीतावली	१०	113	पार्वती-मंगल	4
107	दोहावली	२०	111	जानकी-मंगल	9	114	वैराग्य-संदीपनी एवं बरवै	8
(श्रीतुलसी-जयन्ती ३० जुलाई रविवारको है।)								



प्र० ति० २०-६-२०१७ रजि० समाचारपत्र—रजि०नं० २३०८/५७ पंजीकृत संख्या—NP/GR-13/2017-2019

LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT | LICENCE No. WPP/GR-03/2017-2019

नवीन प्रकाशन—छपकर तैयार

संक्षिप्त पद्मपुराण (कोड 2078) ग्रन्थाकार [गुजराती]—इस पुराणमें भगवान् विष्णुकी विस्तृत महिमाके साथ, भगवान् श्रीराम तथा श्रीकृष्णके चिरत्र, विभिन्न तीर्थोंका माहात्म्य, शालग्रामका स्वरूप, तुलसी– महिमा तथा विभिन्न व्रतोंका सुन्दर वर्णन है। मूल्य ₹२६० (हिन्दी भी)

नित्यकर्म-पूजाप्रकाश, सजिल्द (कोड 2075) पुस्तकाकार [नेपाली]—इस पुस्तकमें प्रात:कालीन भगवत्स्मरणसे लेकर स्नान, ध्यान, संध्या, जप, तर्पण, बिलवैश्वदेव, देव-पूजन, देव-स्तुति, विशिष्ट-पूजन-पद्धित, पञ्चदेव-पूजन, पार्थिव-पूजन, शालग्राम-महालक्ष्मी-पूजनकी विधि तथा अन्तमें नित्यस्मरणीय स्तोत्रोंका संग्रह होनेसे यह पुस्तक सबके लिये उपयोगी तथा संग्रहणीय है। मूल्य नेपाली रु०११०, भारतीय ₹७० (हिन्दी, गुजराती, तेलुगु भी)

आनन्दमय जीवन (कोड 2076) पुस्तकाकार [नेपाली]—मनुष्य अपने-आपमें एक दैवी शक्ति-सम्पन्न आत्मा है। उसके कण-कणमें आनन्दका दिव्य प्रवाह है। डॉ॰ रामचरण महेन्द्रके ओजस्वी विचारोंके रूपमें संकलित यह पुस्तक आध्यात्मिक पथकी परिचायिका तथा मानव-जीवनमें आनन्दमय वातावरणको विकसित करनेवाली है। मूल्य नेपाली रु०४०, भारतीय ₹२५ (हिन्दी भी)

असल बन (कोड 2077) पुस्तकाकार [नेपाली]—मानव अपने उद्धार और पतनका दायित्व स्वतः वहन करता है, अतः उसे कर्तव्य-कर्मको शास्त्रोचित ढंगसे सम्पादित करते हुए केवल उत्कट अभिलाषासे परमात्मज्ञान प्राप्तकर जीवनके लक्ष्यको प्राप्त कर लेना चाहिये। प्रस्तुत पुस्तकमें व्यवहार तथा परमार्थ-सम्बन्धी अनेक लेखोंका संग्रह किया गया है। मूल्य नेपाली रु०२०, भारतीय ₹१२ (हिन्दी, अंग्रेजी भी)

पाठकोंके लिये आवश्यक सूचना

- 1. 'कल्याण' एवं 'गीताप्रेस-पुस्तक-बिक्री-विभाग' की व्यवस्था अलग-अलग है। अतः केवल कल्याणके लिये कल्याण विभागको एवं पुस्तकोंके लिये पुस्तक-बिक्री-विभागको पत्र तथा मनीऑर्डर आदि अलग-अलग भेजना चाहिये। कृपया पत्र-व्यवहारमें अपना मोबाइल नं० एवं ग्राहक-संख्या अवश्य लिखें जिससे आपके पत्रका निस्तारण शीघ्र किया जा सके।
- 2. कल्याणके पाठकोंकी शिकायतोंके शीघ्र समाधानके लिये कल्याण-कार्यालयमें दो फोन 09235400242/09235400244 उपलब्ध हैं। इन नम्बरोंपर प्रत्येक कार्य-दिवसमें दिनमें 9 बजेसे 12 बजे एवं 1.30 से 4.30 बजेतक सम्पर्क कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त नं०9648916010 पर SMS एवं WatsApp की सुविधा भी उपलब्ध है।
- 3. कल्याणके सदस्योंको मासिक अङ्क साधारण डाकसे भेजे जाते हैं। अङ्कोंके न मिलनेकी शिकायतें बहुत अधिक आने लगी हैं। सदस्योंको मासिक अङ्क भी निश्चित रूपसे उपलब्ध हो, इसके लिये वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ २२० के अतिरिक्त ₹ २०० देनेपर मासिक अङ्कोंको भी रजिस्टर्ड डाकसे भेजनेकी व्यवस्था की गयी है।
 - 4. कल्याणके मासिक अङ्क kalyan-gitapress.org पर नि:शुल्क पढ़ सकते हैं।

्व्यवस्थापक—'<mark>कल्याण-कार्यालय', पो०—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५</mark>